CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकार

State Museum,
LUCKNOW.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूल्य ढाई रुपया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकार

श्रीराम शर्मा

State Museum.
LUCKNOW.

साहित्य-सदन, किरथरा
पोस्ट-आफ़िस—मक्खनपुर (मैनपुरी)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

799.2954

प्रकाशक—श्री जगन्नाथ शर्मा, साहित्य-सदन, किरथर
पो० मक्खनपुर, ई० आई० आर० (मैनपुरी)

Printed by M. C. Das, at the Prabasi Press,
120/2, Upper Circular Road, Calcutta.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Lucknow

समर्पण

आधुनिक सभ्यताके विषैले कीटाणुओंसे दूर रहनेवाले
वन-विटप, बनवासी तथा हिमालय-शिखरोंको, जिनपर
प्रकृति-दर्शनकी लालसासे मैं विचरा हूँ, मेरी
यह कृति समर्पित है। आशा है, मेरे
ये मित्र-त्रय इस तुच्छ भेंटको
स्वीकार करेंगे।

—श्रीराम शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

१	स्मृति	१
२	कुफ़ टूटा	२३
३	भिड़न्त	४५
४	मौतके मुँहमें	५६
५	कानेकी खोजमें	७६
६	कानेका अन्त	६५
७	बंडा और वाद-विवाद	१०६
८	ख़ूनी घटवारा	१२७
९	चील-झपट्टा	१४५
१०	ख़लीफ़ाके हाथ	१७३
११	श्मशानके सींग	१८६
१२	पैने छुरे	२०५
१३	शिकार-सप्ताह	२२५

चित्र-सूची

१	'गो-भक्षक मरा पड़ा था'	३३
२	'पेड़से ठोकर खाकर रुका'	४८
३	'हाय मोय बचैयो !'	१४१
४	'कमलाने बाघके पास खड़े होनेकी बड़ी हठ की'	१६०
५	'नज़र जो पड़ी तो…काला हिरन खड़ा था'	१६७
६	'उसने अपनी थूथड़ी ऊपरको की'	२२१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्मरण

२३-११-३१

साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह शर्माका कृपापत्र मिला।

लिखा था :—"'विशालभारत' पहुँचा। श्रीरामजीका लेख और 'शब्दोंकी व्युत्पत्ति' दो लेख मिलते ही पढ़ डाले। श्रीरामजी तो उत्तरोत्तर ग़ज़ब ढा रहे हैं। बन्दूक़से बढ़कर इनकी लेखनीका निशाना बैठता है, पढ़नेवाला तड़पकर रह जाता है। नज़रसे बचानेके लिए इनके डंडपर भैरवजीका गंडा बाँध दीजिये। उनका वह शिकारनामा कब तक छपेगा?"

२८-१-३२

पं० पद्मसिंहजी द्वारा सम्पादित 'गद्य-गौरव' नामक पुस्तकके कुछ फ़ार्म मिले। पुस्तकके परिशिष्टमें श्रीरामजीका परिचय इन शब्दोंमें दिया गया था :—

"श्रीयुत पं० श्रीराम शर्मा, बी० ए०, हिन्दीके साहित्याकाशमें उदीयमान एक नवीन नक्षत्रके रूपमें चमके हैं, जिन्होंने अपनी उज्ज्वल लेखन-प्रभाके चमत्कारसे पाठकोंको चकित कर दिया है। आप प्रसिद्ध और सिद्ध-अचूक निशाना लगानेवाले शिकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं, आपके लेखोंका निशाना भी सीधा पाठकोंके हृदयोंपर जाकर बैठता है—पढ़नेवाला लोट-पोट हो जाता है। अपने ढंगके आप एक ही लेखक हैं। हिन्दीमें शिकार-साहित्यका आपने सर्वथा नवीन निर्माण किया है। आप लेखोंमें शिकार (वध्य-पशु) और शिकारीकी चित्तवृत्तिका ऐसा जीता-जागता चित्र खींचते हैं कि देखकर सहृदय पाठक आश्चर्य-चकित रह जाता है—लेखकका क़लम चूमनेको जी चाहता है। कालिदासने मृगयाकी प्रशंसामें जो यह लिखा है—"सत्त्वानामपि लक्ष्यते विकृतिमच्चितं भय-क्रोधयोः"—("चितवृत्ति पशूनकी जानि परे भय क्रोधमें लेति लपेट घने")—उसकी यथार्थताका पूर्ण परिचय आपके शिकार-सम्बन्धी लेखोंमें मिलता है। आपकी वर्णन-शैली बड़ी सजीव, भाव-विश्लेषण मनोविज्ञान-सम्मत और भाषा विषयके अनुरूप बड़ी सुघड़ होती है। इस विषयपर 'विशालभारत' में आपके जो लेख निकले हैं और निकल रहे हैं, वे साहित्यकी स्थायी सम्पत्ति हैं।"

पूज्य शर्माजीसे प्रार्थना की गई थी कि छपनेके पहले पुस्तकका संशोधन आप ही कर दें, और जनताको उसका परिचय आपके ही आशीर्वादके साथ मिले। उत्तर आया—"इतना काम तो दूसरे भी करा लेते हैं, यह तो अपना ही काम है।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[illegible] मूल प्रति उनकी सेवामें भेज दी गई। प्रारम्भसे अन्त तक पढ़कर इसका उन्होंने संशोधन किया। परिचय सब फ़ार्म छप जानेपर लिखनेवाले थे। पुस्तकके प्रकाशित होनेकी प्रतीक्षा बड़ी उत्कंठासे कर रहे थे। कई बार उसके बारेमें पूछा भी था।

७-४-३२

पूज्य पंडितजीका स्वर्गवास हो गया।

२३-५-३२

आज यह पुस्तक बिना परिचयके ही प्रकाशित हो रही है! २३-११-३१ और २३-५-३२ में कुल छै महीनेका अंतर है; पर इस बीचमें इस दुर्घटनाके कारण पुस्तकके लेखक तथा ········के साहित्यिक जीवनमें जो अन्तर पड़ गया है, उसे वे ही जानते हैं।

विचार था कि पुस्तक प्रकाशित होते ही प्रथम प्रति पूज्य शर्माजीकी सेवामें अर्पित करेंगे। इसे देखकर वे कितने प्रसन्न होते! पर यह होना नहीं था।

आज हम दोनों साश्रुनयन और नतमस्तक उस स्वर्गीय आत्माका स्मरण करते हैं। प्रार्थना करते हैं—"परिचय न सही, आशीर्वाद ही दीजिये।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी बात

'शिकार' के छपनेकी बात पढ़ अनेक लोगोंने मुझे बधाई दी थी। धन्यवाद भी बहुत आये थे, पर मेरी इस बातमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि 'शिकार' को हिन्दी-भाषा-भाषियोंके सम्मुख लानेमें मेरा श्रेय बहुत कम है। मैं तो एक माध्यममात्र हूँ। हाँ, मैंने तो इस पुस्तकके लेखोंको केवल लिख दिया भर है। अपने शिकार वर्णन लिखते समय मुझे इस बातकी आशंका थी कि हिन्दीके विद्वान इस साहित्यको अनावश्यक और त्याज्य चीज़ कहकर कहीं विरुद्ध फ़तवा न दे दें, पर विरुद्ध फ़तवेके स्थानमें मेरे प्रत्येक लेखकी दाद दी गई। और सबसे अधिक प्रोत्साहन और दाद देनेवाले थे स्वर्गीय श्री पं० पद्मसिंह शर्मा। जब उन्होंने मेरी चीज़को पसन्द कर लिया, उनकी कसौटीपर मेरी चीज़ चोखी उतरी तब मुझे किसीकी रायकी ज़रूरत नहीं रही—ये भावनाएँ थीं जो अबसे डेढ़ वर्ष पहले मेरे हृदयमें उठीं थीं। स्वर्गीय शर्माजी जैसे गुरुजनोंकी कृपा हो, तो फिर लेखकको लिखनेमें मज़ा क्यों न आवे? अस्वस्थ होनेपर भी उन्होंने इस पुस्तकके लेखोंकी पाण्डुलिपियोंको देखकर मेरे पास प्रयागसे भेज दिया था। भूमिका भी वे ही लिखनेवाले थे। हसरतसे मेरी आँखें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्हें जोहती है; पर हमारे दुर्भाग्यसे वे महायात्रा कर गये। मैं उनसे आशीर्वाद पानेका अधिकारी हूँ, उनको धन्यवाद कैसे दूँ ?

इस पुस्तकका इस रूपमें आनेका मुख्य श्रेय है 'विशाल भारत' और 'विशाल भारत' मण्डलको। 'विशाल भारत' न होता, तो मेरा ख़याल है, मैं शिकार-सम्बन्धी साहित्यको आगे न बढ़ाता। जंगलमें अनेक फूल खिलते हैं और मुरझाकर सूख जाते हैं। उनके सौरभका कोई आनन्द नहीं ले पाता। 'विशाल भारत' की अनुपस्थितिमें मेरे इस शिकार-साहित्यकी भी वही गति होती।

मैं इतने लोगोंका कृतज्ञ हूँ कि यह समझमें नहीं आता कि किसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ और किसको छोड़ूँ। श्री श्रीपति पाण्डेयने अपनी पुस्तक समझकर इसका प्रूफ़ देखा है, श्री धन्यकुमारने टाइप और छपाईका ख़याल रखा है, और श्री ब्रजमोहन वर्माको तो मैंने ज़रूरतसे ज्यादा सताया है। मशविरेमें, अन्तिम प्रूफ़ देखनेमें, चित्रोंके चुनावमें, समय और कुसमय, चाय पीते समय और घरपर घेरकर, उनसे काम लिया है। और उन्होंने भी अपना निजी काम समझकर प्रसन्नतासे किया है। वर्माजीको धन्यवाद देना दिखावा करना होगा।

इस छप्परका निर्माण मैंने किया है; पर अनेक हाथ लगनेसे यह उठा है। इस छप्परके स्तम्भोंको मैं भूल नहीं सकता।

—श्रीराम शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

मैं कोई नामी शिकारी नहीं हूँ, और न विख्यात शिकारी होनेका मुझे दावा है। मैं अपने निजी अनुभवसे जानता हूँ कि अनेक उत्कट कलाविद शिकारी प्रकाशन और अख़बारी दुनियासे दूर पड़े हैं; पर उनकी वह कला गूँगेका-सा गुड़ है, अथवा अनेकोंने, जो इस विषयपर लिख सकते हैं, अपनी क़लम नहीं उठाई। साहसपूर्ण घटना तथा शिकार-सम्बन्धी साहित्यकी हिन्दीमें बड़ी कमी है। एक प्रकारसे यह विषय उपेक्षित-सा है। अन्य शिकारियों और मेरे शिकारमें यह अन्तर हो सकता है कि मैं शिकार खेलनेके साथ कुछ लिख भी लेता हूँ, और अपने शिकारके अनुभवोंका मज़ा औरोंको भी चखानेका प्रयत्न करता हूँ। अपनी स्थितिके कारण शिकार-प्रवृत्ति-चक्रावतमें स्वदेशके प्रत्येक भागमें नहीं घूमा, और परदेशकी तो बात ही क्या हो सकती है? मैंने टिहरी (गढ़वाल) के समीपवर्ती पहाड़ोंके डाँडों, खुले और बन्द जंगलोंमें कुछ शिकार खेला है। हिमालय पार थोड़ी दूर तिब्बतमें भी भटका हूँ। यमुना-तटवर्ती बीहड़ और गाँवके समीपवर्ती मैदानका तो कहना ही क्या। वहाँ तो वर्षों घूमा हूँ। एक-एक दिनमें चालीस मील तकका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चक्कर काटता है। अब भी, बिगड़े स्वास्थ्यमें, न केवल 'आँखोंमें ही दम है', वरन 'हाथमें भी जुम्बिश है', इसलिए, घूमनेका अभी हौसला है, और, हो सका तो, कुछ लिखनेका भी विचार है; पर इस घूमघामका मुख्य उद्देश है जंगली जानवरोंका अधिक परिचय प्राप्त करना। यह कितने दुःखकी बात है कि हम लोग—हिन्दी-भाषा-भाषी—जीव-जन्तुओंके विषयमें कितनी कम जानकारी रखते हैं। गाँवोंमें पाई जानेवाली चिड़ियोंके नाम तक नहीं जानते! प्रकृतिके राज्यमें मनुष्य और पशु-पक्षी-जगत्का पारस्परिक क्या सम्बन्ध है—इस बातको अधिकांश पढ़े-लिखे लोग भी नहीं जानते। मैं चाहता हूँ कि किसी प्रकार चिड़ियोंका नामकरण हो जाय, और उनके विषयमें दो-एक पुस्तकें भी लिखी जायँ।

'शिकार' में मैंने अपने ही शिकारोंका वर्णन किया है। हाँ, 'कानेका अन्त' मैंने नहीं किया; पर तजवीज़ मेरी ही थी। 'शिकार' में मैंने अपने उन्हीं शिकारोंका वर्णन किया है, जिनमें उत्तेजना तथा मरनेकी आशंका अधिक थी। गढ़वालमें leopard को बाघ कहते हैं। मैंने बाघका उसी अर्थमें प्रयोग किया है।

शिकार विषयकी मैं दार्शनिक विवेचना नहीं करता। मैं केवल यही कहूँगा कि क्षात्रधर्मकी आवश्यकता प्रत्येक युगमें

रही है और भविष्यमें भी रहेगी, और न शिकारके मानी
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हैं दूधपीतों और गर्भिणी हिरनियोंको मारना। किसी भी अच्छे शिकारीको ऐसा नहीं करना चाहिए—ऐसा कृत्य घृणास्पद ही नहीं है, वरन पतनकी ओर ले जानेवाला है। बड़े नरको ही मारना चाहिए। बल्लम और ठस्सा बन्दूक़से मृगशावक और हिरनीका पीछा करनेवालोंसे, दो-चार बार मेरी ठन गई है। शिकारका मेरा उद्देश तो—प्रकृति दर्शन और जीवनके तत्वोंको समझना होता जाता है। और अब विचार है कि जल्दीसे जल्दी रायफ़ल-शिकारको छोड़ कैमरा-शिकार प्रारम्भ करूँ। विचार तो है ही; उसका निभाना भगवानके हाथ है। गोली चलाई और शिकारका ख़ात्मा कर दिया—शिकारका यह अंश तो निकृष्ट है—कम-से-कम उनके लिए जो निरामिष हैं। शिकारने मुझे तो पुराने समयके आश्रम-जीवनका क़ायल बना दिया है। भारतीय संस्कृतिकी भित्ति व्यापारिक नगरोंमें न थी, वरन कण्व और विश्वामित्रके आश्रममें। शिकारका मुख्य उद्देश होना चाहिए प्रकृतिकी पोथीका पाठ, और उस पाठको व्यवहारमें लानेकी चेष्टा।

किरथरा,
ज्येष्ठ कृष्णा २, सं० १९८९
ता० २२-५-३२

—श्रीराम शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्मृति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सायंकालको जब मैं अकेला जंगलसे लौटता हूँ, तो डूबते हुए सूर्यकी किरणें पूर्वकी ओर संकेत करती हुई मानो कहती हैं—"शैशव-कालमें हमारी दृष्टि अपने वर्तमान स्थानकी ओर थी। इधर आनेको हम उतावली हो रही थीं, पर मध्याह्नके मदके उपरान्त अनुभव हुआ—और अब तो हम विलख रही हैं—कि बाल्यकालके उस माधुर्यकी पुनःप्राप्ति असम्भव है! ऐ रायफ़लधारी! शीघ्र ही आयु ढलनेपर तू भी हमारी भाँति बाल्यकालके लिए विह्वल होकर आँसू बहायेगा। अच्छा हो, तू अभीसे चेते।"

मैंने इस चेतावनीको बहुत-कुछ सार्थक पाया है। उससे वेदान्तका पाठ पढ़ा है। प्रातःकालके समय मनुष्यकी छाया—दैवी सिगनल, पश्चिम—अन्त—की ओर होती है। मानो वह कहती है कि अवसानपर दृष्टि डाल, पर बाल्यकालमें विरले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही उधर देखते हैं। कोई देखे भी कैसे और क्यों देखे ? जीवन-यात्राके प्रारम्भमें चारों ओर हृदयकी अन्तरतम लहर और मनकी उच्चतम उड़ान तक सब्ज़ बाग़ ही दिखाई पड़ते हैं। बरसातमें उगे पौदेको आनेवाले शीत और ग्रीष्मका कुछ पता नहीं होता। उद्गमके समीपके सरिता-जलको क्या मालूम कि आगे चलकर संसारकी ग़िलाज़त उसमें आकर मिलेगी, और स्वच्छता तथा गन्दगीमें कितना संघर्ष होगा! पिल्लोंको यह समझ थोड़े ही होती है कि बाल्यावस्थाके समाप्त होते ही उनकी स्नेहमयी मा रोटीके एक टुकड़ेके लिए उन्हें काटने दौड़ेगी ; न मृग-शावकको इस बातका ज्ञान होता है कि उसके तनिक पीछे रह जानेपर रँभानेवाली उसकी मा, कुछ बड़े होनेपर, उसको अपने पासकी घास तक न चरने देगी। और न इस अशरफुल-मख़लूक़ातको बाल्यकालमें इस बातका ज्ञान होता है कि आगे चलकर उसका जीवन इतना कष्टपूर्ण और दुःखमय होगा। पर धीरे-धीरे—ज्यों-ज्यों जीवन-यात्रा बढ़ती जाती है, बाल्यकालकी आशा-रूपी ओसिस (Oasis)—शाद्वलभूमि—मरुभूमिमें परिवर्तित होती जाती है। उसका आभास तो युवावस्थाकी उत्तुंग चोटीसे होने लगता है। पर्वत-शिखरसे जैसे घाटीकी दोनों ओरें दिखाई पड़ती हैं—जैसे तराज़ूकी मूँठसे दोनों पलड़ोंके हलके-भारी होनेको बताया जा सकता है—उसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकार युवावस्थामें अतीतका सिंहावलोकन और भविष्यकी प्रगतिका अनुमान किया जा सकता है। कोई न करे। मैं तो कर रहा हूँ—ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार होलिका-पूजनसे होलिका-दहन और सायंकालसे पूर्व बनी दीप-बातीसे दीप-शिखाका अनुमान किया जा सकता है। मेरी अब तककी जीवन-यात्रामें एक संकीर्ण तथा छोटी, पर अति मनोहर घाटी पड़ी है। इस घाटीका एक शिखर एक उच्च चोटीके समान इतनी दूर चले आनेपर भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।

× × × ×

सन् १९०८की बात है। दिसम्बरका अख़ीर या जनवरीका आरम्भ होगा। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। दो-चार दिन पहले कुछ बूँदा-बाँदी हो गई थी, इसलिए शीतकी भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकालके साढ़े-तीन या चार बजे होंगे। कई साथियोंके साथ मैं झड़बेरीके बेर तोड़-तोड़कर खा रहा था कि गाँवके पाससे एक आदमीने ज़ोरसे पुकारा—'तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, जल्दी घर लौट आओ।' घरको मैं चलने लगा। साथमें छोटा भाई भी था। भाई साहबकी मारका बहुत डर था, इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझमें नहीं आता था कि कौनसा कुसूर बन पड़ा। पढ़नेमें कभी पिटता न था, पर पीटनेवाला पीटनेके लिए सैकड़ों बहाने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निकाल लेता है। दोषी ठहरानेके लिए भेड़ियेने धारके नीचेकी ओर खड़े हुए मेमनेपर पानी गदला करनेका अभियोग लगाया था। डरते-डरते घरमें घुसा। आशंका थी कि बेर खानेके अपराधमें ही तो पेशी न हो, पर आँगनमें भाई साहबको पत्र लिखते पाया। अब पिटनेका भ्रम दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहबने कहा—"इन चिट्ठियोंको ले जाकर मक्खनपुर डाकख़ानेमें डाल आओ। तेज़ीसे जाना, जिससे शामकी डाकमें ही ये चिट्ठियाँ निकल जायँ। ये बड़ी ज़रूरी हैं।"

जाड़ेके दिन तो थे ही, तिसपर हवाके प्रकोपसे कँपकँपी लग रही थी। हवा मज्जा तकको ठिठरा रही थी, इसलिए हमने कानोंको धोतीसे बाँधा। लू और जाड़ेसे बचनेके लिए कान बाँधे जाते हैं। दुर्गकी रक्षाके लिए चहारदीवारीकी रक्षा की जाती है, ताकि उसमें शत्रुका प्रवेश न हो सके। माने भुँजानेके लिए थोड़े चने एक धोतीमें बाँध दिये। हम दोनों भाई अपना-अपना डंडा लेकर घरसे निकल पड़े। उस समय बबूलके डंडेसे जितना मोह था, उतना इस उमरमें रायफ़लसे नहीं। प्रत्येक आर्यसमाजी उपदेशकको उस अस्त्रसे सुसज्जित देखा था। डंडेको मैं उनके पेशेका चिह्न समझता था। उस कच्ची उमरमें अनेक उपदेशक देखे थे। उनके उस कल्पित चिह्नका प्रभाव क्यों न पड़ता? फिर मेरा डंडा तो अनेक साँपोंके लिए नारायण-वाहन (गरुड़) हो चुका था। मक्खनपुर स्कूल और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाँवके बीच पड़नेवाले आमके पेड़ोंसे हर साल उससे आम झाड़े जाते थे ; इस कारण वह मूक डंडा सजीव-सा प्रतीत होता था। प्रसन्नवदन हम दोनों मक्खनपुरकी ओर तेज़ीसे बढ़ने लगे। चिट्ठियोंको मैंने टोपीमें रख लिया, क्योंकि कुर्तोंमें जेबें न थीं।

× × × ×

हम दोनों उछलते-कूदते, एक ही साँसमें, गाँवसे चार फ़र्लांग दूर उस कुएँके पास आ गये, जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था, और चौबीस हाथ (३६ फ़ीट) गहरा था। उसमें पानी न था। चुआकर छोड़ दिया गया था, ताकि अवकाशके समय तार करके (गलाकर) उसमें पानी किया जावे। न-जाने साँप उसमें कैसे गिर गया था ? सम्भव है, मेंढ़कका पीछा करनेमें तेज़ीसे उधर आ रहा होगा और कुएँके पास आकर, मेंढ़कके कुएँमें गिरनेपर, वह अपनी गतिको न रोक सका हो। अथवा प्रणय-केलिमें या नकुल-आतंकसे सुध-बुध भूलकर अचानक गिरकर कूपवासी हुआ होगा। अस्तु, कारण कुछ भी हो, हमारा उसके कुएँमें होनेका ज्ञान केवल दो महीनेका था। बच्चे नटखट होते ही हैं। उनका नटखट होना आवश्यक है, क्योंकि नटखटपन एक शक्ति है, जो प्रत्येक बालकमें होनी चाहिए। मक्खनपुर पढ़ने जानेवाली हमारी टोली पूरी बानर-टोली थी। एक दिन हम लोग स्कूलसे लौट रहे थे कि हमको कुएँमें उझकनेकी सूझी। सबसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले उझकनेवाला मैं ही था। कुएँमें झाँककर एक ढेला फेंका कि उसकी आवाज़ कैसी होती है। उसके सुननेके बाद अपनी बोलीकी प्रतिध्वनि सुननेकी इच्छा थी, पर कुएँमें ज्यों ही ढेला गिरा, त्यों ही एक फुसकार सुनाई पड़ी। कुएँके किनारे खड़े हुए हम सब बालक पहले तो उस फुसकारसे ऐसे चकित हो गये, मानो किलोलें करता हुआ हिरनोंका झुंड अति समीपके कुत्तेकी भोंकसे चकित हो जाता है। उसके उपरान्त सभीने उझक-उझककर एक-एक ढेला फेंका, और कुएँसे आनेवाली क्रोधपूर्ण फुसकारपर क़हक़हे लगाये। साँपकी फुसकार हमारे लिए आमोद-प्रमोदकी सामग्री थी, और ऐसी सामग्री थी, जिससे हम बहुत दिनों तक आनन्द ले सकते थे। उस अवस्थामें यह ख़याल थोड़े ही था कि बेचारे साँपके भी जान होती है, और ढेला लगनेसे उसे भी कष्ट होता है। हमें तो उसकी फुसकारसे मतलब था। यदि वह विरोध-स्वरूप फुसकार न मारता, तो हमारी बाल-क्रीड़ाका भी अन्त हो जाता। हमारा तमाशा था और उसे जानके लाले पड़े थे। गाँवसे मक्खनपुर जाते और मक्खनपुरसे लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँमें ढेले डाले जाते थे। मैं तो आगे भागकर आ जाता था, और टोपीको एक हाथसे पकड़, दूसरे हाथसे ढेला फेंकता था। यह रोज़ानाकी आदत हो गई थी। साँपसे फुसकार करवा लेना मैं उस समय बड़ा काम समझता था। कुएँकी क़ैदमें इतने दिनों पड़े

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहनेसे साँप भी कुछ अपने उस जीवनका अभ्यासी हो गया था, और बिना ढेला लगे, वह बादमें फुसकार भी नहीं मारता था। ढेला कुएँमें गिरा कि फन फैलाकर वह खड़ा हो जाता और ढेलोंकी उपेक्षा किया करता। तनिकसे ढेला लगते ही वह फुसकारसे अपना क्रोध प्रकट करता और कुएँमें इधर-उधर घूमा करता, पर उस कारागारसे मुक्ति मिलनी कठिन थी। उस कारागारमें वह पड़ा रहता, और अपनी उस मूर्खतापर, जिसके कारण वह कुएँमें गिरा था, पछताया करता— यदि साँपोंमें पछतानेकी शक्ति होती है तो। अपमानको सह जाना अथवा अपमानका उत्तर न देना, या मन मसोसकर रह जाना, मनुष्य-योनिको छोड़ और किसी योनिका धर्म नहीं है। भय होनेपर कीड़े-मकोड़े और हिरन तक भाग जाते हैं, और भागकर जान बचाना ही उनका धर्म है। घायल होनेपर या पकड़े जानेपर आज़ादीके लिए भरसक प्रयत्न करेंगे। दाँत, सींग, डंक और पैरोंका उपयोग करेंगे। अक़लके पुतलेकी भाँति पिट-कुटकर अथवा अपमानित होकर महीनों बाद दफ़ा ५०० में अदालतकी ओर भागनेकी उनकी बान नहीं। उनके अदालत है ही नहीं। प्राकृतिक शासन है, जिसमें विशेष नियन्त्रण नहीं है। फिर वह साँप चोट खानेपर प्रतिवाद-स्वरूप फुसकार क्यों न मारता—आज़ादीके लिए क्यों न तड़पता। मानो वह फुसकारकी तड़प न थी, वरन् क़ैदीका उच्छ्वास था, जो प्रकट करता था कि—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"यों तो ऐ सैयाद, आज़ादीके हैं लाखों मज़े ;
दामके नीचे तड़पनेका मज़ा कुछ और है।"

पर उस समय—ग्यारह वर्षकी अवस्थामें—उस वेदनापूर्ण फुसकारमें मैं उपदेश न पाता था। यह तो अबकी बात है। इसलिए, जैसे ही हम दोनों उस कुएँकी ओरसे निकले, तो कुएँमें ढेला फेंककर फुसकार सुननेकी प्रवृत्ति जाग्रत हो गई। मैं कुएँकी ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे ऐसे हो लिया, जैसे बड़े मृग-शावकके पीछे छोटा छौना हो लेता है। कुएँके किनारेसे एक ढेला उठाया और उझककर एक हाथसे टोपी उतारते हुए साँपपर ढेला गिरा दिया, पर मुझपर तो बिजली-सी गिर पड़ी। साँपने फुसकार मारी या नहीं—ढेला उसके लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं ; टोपीके हाथमें लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँमें गिर गईं। अकस्मात् जैसे घास चरते हुए हिरनकी आत्मा गोलीसे हत होनेपर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है, उसी भाँति वे चिट्ठियाँ टोपीसे क्या निकल गईं, मेरी तो जान निकल गई। उनके गिरते ही मैंने उनके पकड़नेके लिए एक झपट्टा भी मारा; ठीक वैसे, जैसे घायल शेर शिकारीको पेड़पर चढ़ते देख उसपर हमला करता है। पर वे तो पहुँचसे बाहर हो चुकी थीं। उनके पकड़नेकी घबराहटमें मैं स्वयं झटकके कारण कुएँमें गिरते-गिरते बचा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुएँकी पारपर बैठे हम रो रहे थे—छोटा भाई ढाढ़ें मारकर और मैं चुपचाप आँखें डबडबाकर। पतीलीमें उफान आनेसे ढकना ऊपर उठ जाता है और पानी बाहर टपक जाता है। निराशा, पिटनेके भय और उद्वेगसे रोनेका उफान आता था। पलकोंके ढकने भीतरी भावोंको रोकनेका प्रयत्न करते थे, पर कपोलोंपर आँसू ढलक ही जाते थे। माकी गोदकी याद आती थी। जी चाहता था कि मा आकर छातीसे लगा लें और लाड़-प्यार करके कह दें कि कोई बात नहीं, चिट्ठियाँ फिर लिख ली जायँगी। तबीयत करती थी कि कुएँमें बहुतसी मिट्टी डाल दी जाय और घर जाकर कह दिया जाय कि चिट्ठी डाल आये, पर उस समय झूठ बोलना मैं जानता ही न था। घर लौटकर सच बोलनेसे रुईकी भाँति धुनाई होती। मारके ख़यालसे शरीर ही नहीं, मन काँप जाता था अकारण अथवा कुसूरपर भी पिटनेसे हृदयकी कोमल कली मुरझा जाती है। मानसिक और शारीरिक विकास रुक जाता है। सच बोलकर पिटनेके भावी भय और झूठ बोलकर चिट्ठियोंके न पहुँचनेकी ज़िम्मेदारीके बोझसे दबा मैं बैठा सिसक रहा था। पास ही रास्तेपर एक स्त्री अपने बालकका हाथ पकड़े जा रही थी। उसे देखकर तो करुणा-सागर ही उमड़ आया। हृदयके उफानने पलकोंके ढकनेको हटा दिया। फाटक खुल गये। अश्रु-धारा बह चली। इसी सोच-विचारमें पन्द्रह मिनट होने आये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देर हो रही थी, और उधर दिनका बुढ़ापा बढ़ता जाता था। कहीं भाग जानेको तबीयत करती थी, पर पिटनेका भय और ज़िम्मेदारीकी दुधारी तलवार कलेजेपर फिर रही थी।

× × × ×

असंप्रज्ञात समाधिसे मायाके बन्धन टूट जाते हैं। दृढ़ संकल्पसे दुविधाकी बेड़ियाँ कट जाती हैं। मेरी दुविधा भी दूर हो गई। कुएँमें घुसकर चिट्ठियोंको निकालनेका निश्चय किया। कितना भयंकर निर्णय था! पर जो मरनेको तैयार हो, उसे क्या? मूर्खता अथवा बुद्धिमत्तासे किसी कामके करनेके लिए कोई मौतका मार्ग ही स्वीकार कर ले, और वह भी जान-बूझकर, तो फिर वह अकेला संसारसे भिड़नेको तैयार हो जाता है। और फल? उसे फलकी क्या चिन्ता! फल तो किसी दूसरी शक्तिपर ही निर्भर है। शुभ घड़ी और शुभ मुहूर्तके अनेक कामोंका दुखद फल होता है। शुभ घड़ी और मुहूर्त बुरे नहीं हैं, पर उनमें किया हुआ फल अपने वशकी बात नहीं। मुझे अपने निर्णयकालकी घड़ी और मुहूर्तका पता नहीं, पर मेरा निर्णय, मेरी अबकी दृष्टिसे, अति भयंकर था। उस समय चिट्ठियाँ निकालनेके लिए मैं विषधरसे भिड़नेको तैयार हो गया! पाँसा फेंक दिया था। मौतका आलिंगन हो या साँपसे बचकर दूसरा जन्म—इसकी कोई चिन्ता न थी; पर विश्वास यह था कि डंडेसे साँपको पहले मार दूँगा, तब फिर चिट्ठियाँ उठा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लूँगा। बस, इसी दृढ़ विश्वासके बूतेपर मैंने कुएँमें घुसनेकी ठानी।

छोटा भाई रोता था, और उसके रोनेका तात्पर्य था कि मेरी मौत मुझे नीचे बुला रही है—यद्यपि वह शब्दोंसे यह न कहता था। वास्तवमें मौत सजीव और नग्न रूपसे कुएँमें बैठी थी, पर उस नग्न मौतसे मुठभेड़के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा। छोटा भाई भी नंगा हुआ। एक धोती मेरी, एक छोटे भाईकी, एक चनेवाली, दो कानोंसे बँधी हुई धोतियाँ—पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सी मिलाकर कुएँकी गहराईके लिए काफ़ी हुईं। हम लोगोंने धोतियाँ एक दूसरीसे बाँधीं और ख़ूब खींच-खींचकर आज़मा लीं कि गाँठें कड़ी हैं, खुलेंगी नहीं। अपनी ओरसे कोई धोखेका काम न रखा। धोतीके एक सिरेपर डंडा बाँधा और उसे कुएँमें डाल दिया। दूसरे सिरेको डेंग (वह लकड़ी जिसपर चरस या पुर टिकता है) के चारों ओर एक चक्कर देकर और एक गाँठ लगाकर छोटे भाईको दे दिया। छोटा भाई केवल आठ वर्षका था, इसीलिए धोतीको डेंगसे कड़ा करके बाँध दिया, और तब उसे ख़ूब मज़बूतीसे पकड़नेके लिए कहा। मैं कुएँमें धोतीके सहारे घुसने लगा। छोटा भाई फिर रोने लगा। मैंने उसे आश्वासन दिलाया कि मैं कुएँके नीचे पहुँचते ही साँपको मार दूँगा, और मेरा विश्वास भी ऐसा ही था। कारण यह था कि उससे पहले मैंने अनेक साँप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मारे थे। दो-एकको तो जूते या कंकर-पत्थरसे मारा था। मैं यह बात उस समयसे ही जानता था कि साँपको अपने दाईं ओरसे होकर मारना चाहिए, और उसको मारनेके लिए सबसे अच्छी लकड़ी अरहरकी लग—साँट—है। यदि वह साँपके एक भी कहीं—पूँछको छोड़कर—लग जाय, तो वह वहीं-का-वहीं रह जाता है। उसकी हड्डियोंकी बनावट ऐसी होती है कि बेंत या साँटके लगते ही उसकी हड्डी बेकार-सी हो जाती है, और वह वहीं पेचताब खाने लगता है, तब तक दूसरी चोटका अवसर मिल जाता है। भागते हुए काले साँपोंको मैंने इसी प्रकार कई बार मारा था। दो-एक बार काटनेसे बाल-बाल बचा था, इसलिए कुएँमें घुसते समय मुझे साँपका तनिक भी भय न था। ऐसा न होता, तो शायद मैं कुएँमें घुसनेका साहस न करता। हृदयका तूफ़ान तो पहले ही शान्त हो गया। जो अश्रु-धारा बहाई थी, वह अपनी असमर्थतापर कि कुएँसे चिट्ठियाँ कैसे निकाली जायँ, पर जब धोतीके साधनकी सूझ हुई, तब तो सन्तोष और प्रसन्नताकी सीमामें पहुँच गया था। इस समय भी मेरा क़द मझला है, उस समय तो निरा बालक था। धोतीके सहारे उतरते समय ज़ोर भुजाओंपर ही अधिक था, क्योंकि पैरोंकी पकड़में धोती आती न थी। जैसे-जैसे नीचे उतरता जाता था, हृदयकी धड़कन बढ़ती जाती थी कि कहीं साँप न मरा, तो चिट्ठियाँ कैसे उठाऊँगा। कुएँके धरातलसे जब चार-पाँच गज़ रहा हूँगा, तब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ध्यानसे नीचेकी ओर देखा, अक़ल चकरा गई। साँप फन फैलाये धरातलसे एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ और पूँछके समीपका भाग पृथ्वीपर था, आधा अग्रभाग ऊपर उठा हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। नीचे जो डंडा बँधा था, मेरे उतरनेकी गतिसे इधर-उधर हिलता था। उसीके कारण शायद मुझे उतरते देख साँप घातक चोटके आसनपर हो बैठा था। सपेरा जैसे बीन बजाकर काले साँपको खिलाता है, और साँप क्रोधित हो फन फैलाकर तथा फुसकार मारकर चोट करता है, ठीक उसी प्रकार साँप तैयार था। उसका प्रतिद्वन्द्वी—मैं—उससे कुछ हाथ ऊपर धोती पकड़े लटक रहा था। धोती डेंगसे बँधी होनेके कारण कुएँके बीचोंबीच लटक रही थी, और मुझे कुएँके धरातलकी परिधिके बीचोंबीच उतरना था। इसके मानी थे साँपसे डेढ़-दो फ़ीट—गज़ नहीं—की दूरीपर पैर रखना, और इतनी दूरीपर साँप पैर रखते ही चोट करता। स्मरण रहे, कच्चे कुएँका व्यास बहुत कम होता है। नीचे तो वह डेढ़ गज़से अधिक होता ही नहीं। ऐसी दशामें कुएँमें मैं साँपसे अधिक-से-अधिक चार फ़ीटकी दूरीपर रह सकता था, वह भी उस दशामें, जब साँप मुझसे दूर रहनेका प्रयत्न करता; पर उतरना तो था कुएँके बीचमें, क्योंकि मेरा साधन बीचोबीच लटक रहा था। ऊपरसे लटककर तो साँप नहीं मारा जा सकता था। उतरना तो था ही। थकावटसे ऊपर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चढ़ भी नहीं सकता था। अब तक अपने प्रतिद्वन्द्वीको पीठ दिखानेका निश्चय नहीं किया था। यदि करता भी, तो कुएँके धरातलपर उतरे बिना क्या मैं ऊपर चढ़ सकता था? धीरे-धीरे उतरने लगा। एक-एक इंच ज्यों-ज्यों मैं नीचे उतरता जाता था, त्यों-त्यों मेरी एकाग्रचित्तता बढ़ती जाती थी। एकाग्रचित्तमें—चित्तवृत्ति-निरोधमें—जो विचार-रत्न सूझते हैं, वे व्यग्रचित्तमें नहीं। टूटे हीरेका वह मूल्य नहीं होता, जो साबित हीरेका। मुझे भी एक सूझ सूझी। दोनों हाथोंसे धोती पकड़े हुए मैंने अपने पैर कुएँकी बग़लसे लगा दिये। दीवारसे पैर लगते ही कुछ मिट्टी नीचे गिरी, और साँपने फूँ करके उसपर मुँह मारा। मेरे पैर भी दीवारसे हट गये, और मेरी टाँगें कमरसे समकोण बनाती हुई लटकती रहीं, पर इससे साँपसे दूसरी ओर कुएँकी परिधिपर उतरनेका ढंग मालूम हो गया। तनिक झूलकर मैंने अपने पैर कुएँकी बग़लसे सटाये, और कुछ धक्केके साथ अपने प्रतिद्वन्द्वीके सम्मुख कुएँकी दूसरी ओर डेढ़ गज़पर—कुएँके धरातलपर खड़ा हो गया। आँखें चार हुईं। शायद एक दूसरेने पहचाना। साँपको चक्षुश्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षुश्रवा हो रहा था। अन्य इन्द्रियोंने मानो सहानुभूतिसे अपनी शक्ति आँखोंको दे दी हो। शरीरमें सहानुभूतिकी पीड़ा होती है। पैरमें चोट लग जानेसे गिल्टी उठ आती है। फिर इन्द्रियोंका विपत्तिमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन्द्रियविशेषका सहायक होना कोई आश्चर्य नहीं। मैं तो यही महसूस करता हूँ। साँपके फनकी ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि वह कब किस ओरको आक्रमण करता है। साँपने मोहनी-सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमणकी प्रतीक्षामें था, पर जिस विचार और आशाको लेकर मैंने कुएँमें घुसनेकी ठानी थी, वह तो आकाश-कुसुम था। मनुष्यका अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं! अनुमानित सफलताकी आशा-रज्जुसे बँधा यह मानवी पुतला न मालूम क्या-क्या नहीं करता और कहाँ-कहाँ नहीं जाता। उस आशा-रज्जुके टूटते ही वह पुतला मांसका एक लोथड़ा ही रह जाता है। आशाके बिना जीवनका कुछ आनन्द ही नहीं। मुझे साँपका साक्षात् होते ही अपनी योजना और आशाकी असम्भवता प्रतीत हो गई। डंडा चलानेके लिए स्थान ही न था। लाठी या डंडा चलानेके लिए काफ़ी स्थान चाहिए, जिसमें वह घुमाया जा सके। साँपको डंडेसे दबाया जा सकता था, पर ऐसा करना मानो तोपके मुहरेपर खड़ा होना था। यदि फन या उसके समीपका भाग न दबा, तो फिर वह पलटकर ज़रूर काटता, और फनके पास दबानेकी कोई सम्भावना भी होती, तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ठियोंको कैसे उठाता। दो चिट्ठियाँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक मेरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओर थी। मैं तो चिट्ठियाँ लेने ही उतरा था। हम दोनों अपने पैंतरोंपर डटे थे। उस आसनपर खड़े-खड़े मुझे चार-पांच मिनट हो गये। दोनों ओरसे मोरचे लगे हुए थे, पर मेरा मोरचा कमज़ोर था। कहीं साँप मुझपर झपट पड़ता, तो मैं—यदि बहुत करता तो—उसे पकड़कर, कुचलकर मार देता, पर वह तो अचूक तरल विष मेरे शरीरमें पहुँचा ही देता और अपने साथ-साथ मुझे भी ले जाता। अब तक साँपने वार न किया था, इसलिए मैंने भी उसे डंडेसे दाबनेका ख़याल छोड़ दिया। ऐसा करना भी उचित न था। अब प्रश्न यह था कि चिट्ठियाँ कैसे उठाई जायँ? बस, एक सूरत थी। डंडेसे साँपकी ओरसे चिट्ठियोंको अपनी ओर सरकाया जाय। यदि साँप टूट पड़ा, तो कोई चारा न था। कुर्ता था, और कोई कपड़ा भी न था, जिसे साँपके मुँहकी ओर करके उसके फनको पकड़ लूँ। मारना या बिल्कुल छेड़ख़ानी न करना—ये दो मार्ग थे। सो पहला मेरी शक्तिके बाहर था। बाध्य होकर दूसरे मार्गका अवलम्बन करना पड़ा।

डंडेको लेकर ज्यों ही मैंने साँपकी दाईं ओर पड़ी हुई चिट्ठीकी ओर उसे बढ़ाया कि साँपका फन पीछेको हुआ। धीरे-धीरे डंडा चिट्ठीकी ओर बढ़ा, और ज्योंही चिट्ठीके पास पहुँचा कि फूँकके साथ काली बिजली तड़पी और डंडेपर गिरी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हृदयमें कम्प हुआ, और हाथोंने आज्ञा मानी। डंडा छूट पड़ा। मैं तो न मालूम कितना ऊपर उछल गया। जान-बूझकर नहीं, यों ही बिदककर। उछलकर जो खड़ा हुआ, तो देखा डंडेके सिरेपर तीन-चार स्थानोंपर पीव-सा कुछ लगा हुआ है। वह विष था। साँपने मानो अपनी शक्तिका सर्टीफ़िकेट सामने रख दिया था, पर मैं तो उसकी शक्तिका पहले ही से क़ायल था। उस सर्टीफ़िकेटकी ज़रूरत न थी। साँपने लगातार फूँ-फूँ करके डंडेपर तीन-चार चोटें कीं। वह उपदेशकी डंडा पहली बार ही उस भाँति अपमानित हुआ था, या वह साँपका उपहास कर रहा था!

उधर ऊपर, फूँ-फूँ और मेरे उछलने और फिर वहीं धमाकेसे खड़े होनेसे, छोटे भाईने समझा कि मेरा काम तमाम हो गया और बन्धुत्वका नाता फूँ-फूँ और धमाकेसे टूट गया। उसने ख़याल किया कि साँपके काटनेसे मैं गिर गया। मेरे कष्ट और विरहके ख़यालसे उसके कोमल हृदयको धक्का लगा—भ्रातृ-स्नेहके ताने-बानेको चोट लगी। उसकी चीख़ निकल गई। सिनेमामें करुणाजनक दृश्य देखकर मैं इस आयुमें भी रो पड़ता हूँ। विरह-वर्णनसे मेरी आँखें अब भी सजल हो जाती हैं। शफ़ाख़ानेमें दूसरेके—ग़ैरके—चीरा लगते देख बहुतोंको बेहोशी आ जाती है। मैं इस बातका क़ायल हूँ कि—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"ख़ूं रगे मजनूंसे निकला, फ़सद लैलीकी जो ली।"

फिर छोटे भाईकी आशंका बेजा न थी, पर उस फूँ और धमाकेसे मेरा साहस कुछ बढ़ गया। दुबारा फिर उसी प्रकार लिफ़ाफ़ेको उठानेकी चेष्टा की। अबकी बार साँपने वार भी किया और डंडेसे चिपट भी गया। डंडा हाथसे छूटा तो नहीं, पर झिझक—सहम अथवा आतंक—से अपनी ओरको खिंच गया, और गुँजलक (Coils) मारता हुआ साँपका पिछला भाग मेरे हाथोंसे छू गया। उफ़! कितना ठंडा था। डंडा मैंने एक ओरको पटक दिया। यदि उसका दूसरा वार पहले होता, तो उछलकर मैं साँपपर गिरता और बचता नहीं; लेकिन जब जीवन होता है, तब हज़ारों ढंग बचनेके निकल आते हैं। वह दैवी कृपा थी। डंडाके मेरी ओर खिंच आनेसे मेरे और साँपके आसन बदल गये। मैंने तुरन्त ही लिफ़ाफ़े और पोस्ट-कार्ड बटोर उठा लिये। चिट्ठियोंको धोतीके छोरमें बाँध दिया, और छोटे भाईने उन्हें ऊपर खींच लिया।

× × × ×

डंडेको साँपके पाससे उठानेमें भी बड़ी कठिनाई पड़ी। साँप उससे अलग होकर उसपर धरना देकर बैठा था। जीत तो मेरी हो चुकी थी, पर अपना निशान गँवा चुका था। आगे हाथ बढ़ाता, तो साँप हाथपर वार करता, इसलिए कुएँकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बग़लसे एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मैंने उसकी दाईं ओर फेंकी। वह उसपर झपटा, और मैंने दूसरे हाथसे उसकी बाईं ओरसे डंडा खींच लिया, पर बात-की-बातमें उसने दूसरी ओर भी वार किया। यदि बीचमें डंडा न होता, तो पैरमें उसके दाँत (Fangs) गड़ गये होते।

× × × ×

विवाह और जींतका भोर भी बड़ा विकट होता है। ऊपर चढ़ना कोई आसान काम न था। केवल हाथोंके सहारे पैरोंको बिना कहीं लगाये हुए ३६ फ़ीट ऊपर चढ़ना मुझसे अब नहीं हो सकता। १५-२० फ़ीट बिना पैरोंके सहारे केवल हाथोंके बल चढ़नेकी हिम्मत रखता हूँ—कम ही—अधिक नहीं, पर उस ग्यारह वर्षकी आयुमें मैं ३६ फ़ीट चढ़ा। बाहें भर गईं थीं। छाती फूल गई थी। धौंकनी चल रही थी, पर एक-एक इंच सरक-सरककर अपनी भुजाओंके बल मैं ऊपर चढ़ आया। यदि हाथ छूट जाते, तो क्या होता, इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। ऊपर आकर, बेहाल होकर थोड़ी देर पड़ा रहा। देहको झाड़-झूड़कर धोती और कुर्ता पहना। फिर किशनपुरके लड़केको, जिसने ऊपर चढ़नेकी मेरी जद्दोजहदको देखा था, ताकीद करके कि वह कुएँवाली घटना किसीसे न कहे, हम लोग आगे बढ़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १६१५ में मैट्रीक्यूलेशन पास करनेके उपरान्त यह घटना मैंने माको सुनाई। सजल नेत्रोंसे मानें मुझे अपनी गोदमें ऐसे बैठा लिया, जैसे चिड़िया अपने बच्चोंको डैनेके नीचे छिपा लेती है।

× × × ×

कितने अच्छे थे वे दिन! उस समय रायफ़ल न थी, डंडा था; और डंडेका शिकार—कम-से-कम उस साँपका शिकार—रायफ़लके शिकारसे कम रोचक और भयानक न था। बालपनकी वह घटना मैं कभी भूल नहीं सकता। उस घटनाके साक्षी परमात्माके अतिरिक्त हम तीन हैं; छोटे रुग्ण भाई पं० जगन्नाथ शर्मा, पाती और स्वयं मैं। शायद पासके वृक्ष भी हैं, जो यों ही खड़े हैं। साँप उसी कुएँमें दबा पड़ा है। कुएँके स्थानका चिह्न अब भी है, पर वे दिन नहीं हैं, न वह उमंग! अब तो बस—

"मसर्रत हुई, हँस लिए दो घड़ी;
मुसीबत पड़ी, रोके चुप हो रहे।"

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुफ्र टूटा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानव-जीवनकी—विशेषकर शिकारी जीवनकी—एक कमज़ोरी है नामकी चाह। मैं उस कमज़ोरीसे शून्य न था। नामकी चाह जीवनकी एक अवस्था विशेषमें हुआ करती है, अथवा किसी वस्तु या ध्येयकी प्राप्ति न होने तक। बादमें वह भले आदमियोंसे ऐसे छूट जाती है, जैसे सूर्यकी किरणोंसे पत्तोंपर पड़े ओस-कण। और फिर पहाड़पर कोई कितनी ही हिंसा करे; कितने ही कारतूस फूँक डाले; पर जब तक कोई बाघ न मार ले, तब तक वह शिकारी नहीं कहलाता। लोग मेरे साहससे परिचित थे, पर मुझे भय था कि कहीं टिहरीवाले मुझे टिहरीके एक 'लम्बू शिकारी' की भाँति केवल चिड़ीमार ही न समझ लें। लम्बू शिकारी राज्यके एक पदाधिकारी, लम्बे क़दके व्यक्ति थे। उन्हें शिकार खेलते बीसियों वर्ष बीत गये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे, और बीसियों बार उन्हें बाघ मिला होगा; पर वे कलेजेवाले न थे। बाघको देखकर उनका हृदय धोंकनीकी भाँति धकधक हो जाता था, और मारनेके स्थानमें वे उसे भगानेमें ही भला समझते थे। टिहरीवाले उन्हें चिड़ीमार कहते थे और गाँववाले मनहूस। मुझे इन दोनों नामोंसे परहेज़ था, पर अब तक— अन्य अनेक जीवोंके मारनेके उपरान्त तक—मैंने कोई बाघ न मारा था, इसलिए ड्राइंग-मास्टर और ड्रिल-मास्टर—श्री लक्ष्मीदत्त और श्री भूपालसिंह—के साथ भूखा-प्यासा जंगलोंमें घूमा करता। टिहरीसे जानेवाली सड़कोंकी ख़ाक छानी। तनिक सुना कि बाघने अमुक स्थानपर गाय मारी है; बस, हम उस ओर ऐसे दौड़े जाते थे, जैसे शवकी गन्ध पाकर सियार। वहाँ पहुँचकर, यह मालूम करके कि गायकी हड्डियाँ तक नहीं बचीं, हम लोग झक मारकर लौटते, और लौटनेमें ऐसे लजाते, मानो किसी पापकृत्यमें पकड़े गये हों। गंगाजीके पुलके पास भूपालूकी दुकानके सामने होकर निकलना तो एक परीक्षा पास करना था। पढ़ाईकी परीक्षा पास करना तो सरल काम था, पर दुकानपर बैठे हुए व्यक्तियोंकी संयुक्त आवाज़—'क्यों साहब, बाघ मारा ?' का उत्तर देना घोर अपमानजनक समझता था। एक बार मुझे ऐसा ही उत्तर देना पड़ा था, और मुँहसे 'नहीं' निकालनेमें मुँहपर कालिख-सी लग गई थी। उसके बाद उस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुकानके सामनेसे हम लोग, लौटती बार, दिनमें कभी नहीं निकले। यदि दिनमें लौटनेका समय होता, तो हम दुकानसे दूर ही रात कर लेते, और चोरोंकी भाँति दुकानके सामनेसे एक-एक करके निकलते। मैं तो सबसे पीछे बन्दूक़को शरीरसे सटाकर ऐसा निकलता, मानो कोई देहाती डंडा लिए जा रहा हो। दुकान निकल जाती, तो जानमें जान आती। आगे चलकर अपने साथियोंसे मिलता, और मन-ही-मन कहता—'धिक्कार है हम लोगोंको, जो अब तक बाघ नहीं मारा!' घरमें घुसना भी दुर्गभेद-सा था। धीरेसे, किवाड़ खोलकर, भीतर घुसता। चारपाई, किताबें और क़लम-दावात स्वच्छ रखी देखकर, श्रीमती शर्मासे गृह-प्रबन्धके मिस कोई बात न कहने पाता, तब तक मधुर मुसकानसे शुभागमन करते हुए, दबी ज़बानसे कहे हुए—'बाघ मिला?'—शब्दोंको सुनकर मैं झेंप जाता, और 'भोजन तैयार है?' कहकर मैं मुसकराहटमें ही बात टाल जाता; पर वह पारस्परिक मुसकान हृदयका स्वयंसिद्ध सूत्र थी। आर्थिक संकटसे पीड़ित व्यक्तिके लिए दाम्पत्य-सुख एक टानिक है, जो जीवनकी कुछ घड़ियाँ बढ़ा देता है। घर पहुँचकर पहले 'बाघ नहीं मिला' का फाटक पार करके मैं एक ऐसे उद्यानमें पहुँच जाता था, जहाँ चिन्ता-ज्वालाएँ शरीरको झुलसा नहीं सकती थीं, और न जहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाघके शिकारका भूत ही प्रवेश कर सकता था। भोजन करके लेट रहता, और कोई पुस्तक लेकर पढ़ने लगता। सुखका तिलस्म टूट जाता और मनकी उधेड़-बुनका ताँता पुर जाता। ऊपर छतकी ओर कभी दृष्टि पड़ती, तो गौरवा और गौरइयाका जोड़ा बैठा दिखाई देता। सोटके खोखलेमें दोनों कितने सुखी थे! उन जैसे सुखी दम्पति मनुष्योंमें कम ही होंगे।

अनादिकालसे मानव-लीलाका मूकद्रष्टा, समय, अपनी अनन्तकी पोथीमें घंटा, घड़ी, दिन और मास लिखता जाता था, और हम लोग बाघ मारनेकी ध्रुव धुनमें आकाश-पातालके कुलाबे मिलाते थे। जंगलोंमें बकरा और कुत्ता बाँधते। लाशोंपर बैठते। पर बाघके दर्शन तक न होते थे। एक दिन खिजकर मैंने यहाँ तक कह डाला कि मुझे बाघ दिखाई पड़ जाय, तो मैं उससे हाथापाई ही कर डालूँ। नतीजा जो होगा, सो उसकी क्या चिन्ता? प्लेग और हैज़ेकी मृत्युसे तो वह शानदार मौत होगी। एक बार समाचारपत्रोंमें तो मेरा बाघ-युद्ध निकल जायगा। पर दूधके उफानकी भाँति वह आवेश शान्त हो जाता। इधर दो-एक मास बीतनेसे कुछ बेशर्मी भी आ गई थी। नवीन बधू पहले लम्बी लाज काढ़ कर निकलती है, अपने पति तकसे झेंपती है; पर उस अमर बूढ़े दर्शक—समय—के आवर्तमें पड़कर घूँघटके पट खोल देती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। हम लोगोंकी कुछ ऐसी ही दशा हो चली थी। जो कोई पूछता, तो कह देते—'क्या करें, बाघ मिला ही नहीं। बाघ देखकर हम लोग भाग आयँ तो लज्जाकी बात है। भाग्य चेतेगा तो बाघ मिलेगा और मरेगा। वह नटनागर जैसे नचाता है, नाचते हैं। नटनागरके करिश्मे हैं, जिन्हें कठपुतली बने देख रहे हैं।'

× × × ×

इसी प्रकार बूढ़े बाज़ीगरने दिन-रातरूपी पीले और काले साठ-सत्तर मुँगिया (दाने) पिरोये, और दिसम्बर आ पहुँचा। एक दिन—न मालूम किस दिन—सायंकालको फावड़ेसे गोभीके लिए मैं बाड़ा गोड़ रहा था कि सुपरिन्टेन्डेन्ट बग़ीचा-दरबारके लड़के अज़ीज़ने मकानमें भागते हुए प्रवेश किया और हाँफते हुए कहा—"शिमलासूके सामने भिलंगना पार बाघने गाय मारी है, और अब तक वह बैठा उसे खा रहा है।" सुनकर मानो मुर्देमें जान आ गई हो। निश्चय करनेके लिए अविश्वास भावसे मैंने पूछा—"अभी तक खा रहा है?—तुमने ख़ुद देखा है?"

अज़ीज़—"हाँ साहब, मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। वह अब भी खा रहा है।"

मैं—"गाय मारी कब थी?"

अज़ीज़—"आज दोपहरके दो बजे।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं—"और तबसे अब तक डटा हुआ है ?"

अज़ीज़—"जी हाँ, अब तक भी खा है। नीचे होकर आदमी निकलते हैं और ऊपर मार्गसे बीस गज़की ऊँचाईपर वह जुटा हुआ है।"

मैं—"अजीब बाघ है; पर अब साढ़े चार बजे हैं, शिमलासू पहुँचते-पहुँचते पाँच बज जायँगे। अँधेरा होने लगेगा। अच्छा, भिलंगनासे उस पार वह जगह कितनी दूर होगी ?"

अज़ीज़—"दूरी तो आप जानें। उस सामनेवाले मकानसे डेढ़-दो सौ क़दम होगा।"

मैं (तैयार होते हुए)—"तो फिर तीन-साढ़े तीन सौ गज़के लगभग हुआ। चलते हैं। देखें तो क्या बात है। अज़ीज़ तुम जाकर ड्रिल-मास्टरको बुला लाओ। ड्राइंग-मास्टर लक्ष्मीदत्तको बुलानेमें तो देर होगी।"

× × × ×

हम तीनों शिमलासूकी लाटसाहब-वाली कोठीके अहातेमें उस स्थानपर जाकर खड़े हुए, जहाँसे ठीक नीचे भिलंगनामें स्वामी रामतीर्थ डूबे थे। जब-जब मैं शिमलासूके पास भिलंगनाकी उस ओरको जाया करता था, तभी मुझे 'युवा संन्यासी' कविताका वह पद—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"चिरसहचरी रियाज़ी छोड़ी, रम्यतटी रावी छोड़ी ;
शिखा-सूत्रके साथ हाय, उन बोली पंजाबी छोड़ी ।"

स्मरण हो आता था, और ख़याल आता था कि इसके आगे ऐसा कुछ जोड़ दिया जाय कि उस ब्रह्म-स्वरूपने अन्नमयकोष—पार्थिव शरीर—भी त्याग दिया; पर उस दिन उसी स्थानपर विचारधारा बाघकी ओर थी। आँखें फाड़-फाड़कर भिलंगनाकी दूसरी ओर देखा, पर खालेके ऊपर, उस समय, इतनी दूरीसे क्या दिखाई पड़ सकता था? बाघ कोई अग्नि-पुंज थोड़े ही था, जो अँधेरेमें चमके! हताश होकर हम लोग वहीं खड़े रहे। तबीयत करती थी कि किसी प्रकार पंख लग जायँ, तो उड़कर भिलंगना पार करूँ। बीचमें नदी और नदीके धरातल तक पहुँचनेको एक-दो फ़र्लांगकी दूरी थी। वैसे पार हो सकते थे, पर घाट नहीं मालूम था। पुल वहाँसे एक मील था। तात्पर्य यह कि कुछ कर नहीं सकते थे। अन्तमें हम लोगोंने यह निश्चय किया कि बाघ अँधेरेमें तो खाने अवश्य आया होगा, और यदि खाता ही रहा, तो फिर प्रातःकाल नहीं आवेगा, इसलिए हवामें ही दो फ़ायर कर दिये जायँ, जिससे वह गायकी लाशसे भाग जाय और भूखके कारण फिर उसके आनेकी सम्भावना रहे।

बारह नम्बर बन्दूक़से दो फ़ायर कर दिये, और दुखी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होकर हम लोग लौट पड़े। अज़ीज़ सलाम करके अपने घर चला गया।

लौटती बार हम लोग ग्लानि और उत्साहके भँवरमें पड़े हुए थे। कल कितने बजे आना चाहिए, बन्दूक़की आवाज़से वह कहीं फिर आवे ही नहीं, ऐसे ही प्रश्न करते हुए हम घर पहुँच गये। चाय पिलाकर ड्रिल-मास्टरको विदा किया और प्रातःकाल तड़के ही आनेको कहा। भोजन करके बाघके विषयमें सोचता हुआ सो गया।

प्रातःकाल भूपालसिंह और मैं उषाकालमें ही शिमलासू जा पहुँचे। सूर्य निकलने तक हम लोग वहीं टहलते रहे। ज्यों-ज्यो सूर्य ऊपर आता-जाता था, त्यों-त्यों सामनेवाला खाला—जहाँपर बाघने गाय मारी थी—स्पष्ट होता जाता था। उस खालेसे हम लोग पश्चिमकी ओर थे। बीचमें भिलंगना थी, और वह खाला उत्तरसे दक्षिणको जानेवाली पर्वतश्रेणीमें था, इसलिए सूर्य अभी तक ओटमें था। प्रकाश होनेपर खालेमें कोई चीज़ हिलती दिखाई दी। वह बाघ था। मांसको नोच नोचकर खानेमें वह हिलता-डुलता था। रायफ़लसे निशाना लेनेका प्रयत्न किया, पर रायफ़लकी पिछली मक्खी (Backsight) से वह ठीक सीधमें न आता था, इसलिए, हम लोग अधिक प्रकाशकी प्रतीक्षामें खड़े रहे। जैसे ही सूर्यका अर्धगोला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

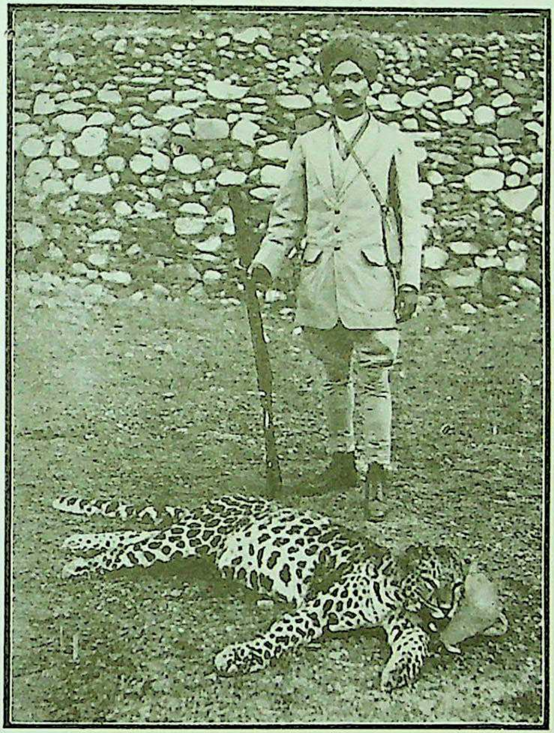

'गोभक्षक मरा पड़ा था'

[पृष्ठ ४२]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डँडेकी चोटीपर दिखाई दिया, खाला और भिलंगनाकी घाटी प्रकाशमय हो गई। किरणोंमें धूलकण चलते प्रतीत होने लगे। भूपालसिंह मेरे पीछे रायफ़ल लिये खड़े थे। मैं दूरबीन लगा रहा था। बन्दूक़ मेरे आगेवाले पेड़के सहारे रखी थी। बाघका असाधारण आकार देखकर मेरी बाछें खिल गईं। जैसे ही दूरबीन मैंने भूपालसिंहकी ओर बढ़ाई और उन्होंने रायफ़लको मेरी ओर किया कि धाँयसे फ़ायर हो गया। कान तो फूट-से गये। भूपालसिंहका चेहरा पीला पड़ गया। एक-चौथाई इंचसे मैं बच गया। २२० ग्रेनकी गोली मेरे कोटमें होकर आगेके पेड़में सर्र करती हुई घुस गई। तनिक एक-चौथाई इंच शरीरकी ओरको और होती तो अँतड़ियोंको भूनती हुई रीढ़को तोड़कर निकल जाती। अरे क्या हो गया! मेरे मुँहसे सुनकर भूपालसिंहको होश आया, और मेरे बचनेपर अपने भाग्यको सराहा। बात यह हुई थी कि मैंने सेफ्टीकैच (Safety catch) को, चलानेके लिए नालकी ओर कर रखा था। भूपालसिंहने इसका ख़याल न किया, और उनकी उँगली नीचेके घोड़े (Trigger) पर थी। मुझे रायफ़ल देनेमें घोड़ा दब गया, और फ़ायर हो गया। फ़ायरकी आवाज़ सुनकर बाघ लाशपर से उठा। खालेके ऊपर आया और अपनी मस्त चालसे जंगलकी ओर बढ़ा। उसने समझा होगा कि दिनचर

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आ गये, जीवनका भय है, चलो, पेट भर गया, अब चैनसे सोवें। मरोरा चालसे (ऐंठसे) दाएँ-बाएँ देखता हुआ चला जाता था। हम लोग हाथ मलते ही रह गये! बहुत हाथ-पैर पीटे, रायफ़ल सँभालते-सँभालते बाघ आँखसे ओझल हो गया। हम लोगोंने भिलंगना पार करनेकी ठानी, और चक्कर काटकर बर्फ़से ठंडे, जाँघ-भर, पानीमें भिलंगना पार की। शीघ्र ही बाघकी अगाई काटनेका प्रयत्न किया, पर बाघ कहीं दिखाई न पड़ा। न मालूम कहाँ विलीन हो गया। तब मैंने भूपालसिंहसे कहा—"अशकुन तो सवेरे ही हो गया, काहेको ढूँढ़ते-फिरते हो। ऐसे बाघ नहीं मिला करते। चलो, लाश देखें कितनी शेष है।"

जाकर लाश जो देखी, तो बड़ी प्रसन्नता हुई। बाघने शेष लाशको धूल और कंकरोंसे दबा दिया था। इसका अर्थ था बाघके उस शेष लाशको फिर खानेके लिए आना। यदि खुली छोड़ देता, तो गिद्ध और चीलें मिनटोंमें उसे चट कर जातीं। इसके अतिरिक्त, गीदड़ोंका भी भय था। अपने भोजनको गिद्ध और गीदड़से सुरक्षित रखनेके लिए बाघ कभी-कभी पेड़पर लाश टाँग जाता है। अफ़रीक़ामें तो कभी-कभी १८ फ़ीट ऊँचेपर वृक्षोंमें अधखाये हरिन मिलते हैं। हम लोगोंने लाशको घास-फूँससे और ढँक दिया, और घर लौट आये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सायंकालको तीन बजे हम तीनों—लक्ष्मीदत्त, भूपालसिंह और मैं—तीन बन्दूकें लेकर गायकी लाशके समीप पहुँच गये। साथमें एक रस्सी और रातका खाना था। पासके मकानसे फावड़ा और कुदाल ले लिया, और दो-तीन आदमी भी ले लिये। मकान डोभाल ब्राह्मणोंका था, और उनकी ही गाय मारी गई थी। उन्होंने हम लोगोंसे कहा—"आप लोग वृथा ही परिश्रम करते हैं। इस बाघने मेरी ही सात-आठ गायें खा डालीं। पड़ोसकी दस-बारह भैंसें खा लीं। दस-पन्द्रह वर्षसे यह मार कर रहा है, और दो-अढ़ाई सौ गाय-भैंस खा चुका है। बहुत ही बड़ा है। म्योर साहबने इसे मारनेका प्रयत्न किया। उनके हाथ ही नहीं चढ़ा। एक बार गोली चलानेका अवसर दिया, तो गोली ओछी पड़ी, और उसका अगला दाँत टूट गया।"

मैं—"तो डोभालजी, बैठनेमें कौन-सा हर्ज है। भाग्य ही तो आज़माना है।"

डो॰—"सो तो ठीक है। यह तस्कर मरे, तो बड़ा पुण्य हो।"

चारों ओर स्थान देखकर बैठनेकी जगह बनानेका निश्चय किया। लक्ष्मीदत्त और भूपालसिंह करौंदा काटने और खोदा-खादीमें लगे, और मुझसे कहा गया कि मैं कुछ आगे बढ़कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टहलूँ या बातें करूँ, जिससे बाघ यदि कहीं आस पास हो, तो यह समझे कि घसियारे घास काट रहे हैं। बाघ जंगलके सब जानवरोंसे चालाक होता है। शक्की वह परले सिरेका होता है। तनिक-सी असाधारण तथा कृत्रिम बातसे लाशपर नहीं आता। घसियारों और राहगीरोंकी गतिसे वह परिचित होता है, और जानता है कि सायंकाल होते ही वे लोग बातें करते और गाते हुए चले जाते हैं, इसलिए जंगलके उस भागमें, बाघको ठगनेके लिए, हम लोगोंने यह नाटक रचा था। बैठनेके स्थानसे दो फ़र्लांगकी दूरीपर मैं तैनात था। एक घसियारेसे राज्यके कर्मचारियोंके विषयमें वार्तालाप करता रहा। पहले तो वह झिझका, पर मैंने तनिक यह संकेत कर दिया कि लोगोंसे दूध-दही तककी रिश्वत ली जाती है, यह बुरी बात है। यह सुनकर तो उसके हृदयका बाँध खुल गया। उसने बड़ों-बड़ोंकी क़लई खोली, और तब मेरे पैर पकड़ लिये, और कहा—"महाराज, हम ग़रीब आदमी छँव हमारी कुई बात कै का पास नी बोलनी (महाराज, हम ग़रीब आदमी हैं। हमारी कुछ बात किसीसे न करना)।" मैंने उसे आश्वासन दिया कि मैं किसीसे कुछ न कहूँगा। थोड़ी देर उपरान्त सीटी हुई और मैं बैठनेके स्थानपर लौट आया।

लाशसे पन्द्रह-बीस गज़ ऊपर खालेकी बग़लसे, जहाँसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाघके आनेका मार्ग था, पहाड़की मिट्टी काटकर तीन आदमियोंके बैठनेकी जगह बनाई गई थी। आगेसे छै-सात लक्कड़ आड़े और तिरछे लगाकर और रस्सोंसे बाँधकर रोक कर ली थी, और चारों ओर, ऊपर तकसे, उसे कटीले करौंदोंसे आच्छादित कर दिया था। सामनेसे बहुत छोटे—इतने छोटे कि बन्दूक़की नाल निकल सके और लाश दिखाई पड़ सके—तीन छेद थे। बाहर खाँस-खखारकर हम लोग भीतर बैठ गये। बाहरके आदमियोंने हमारा भीतर घुसनेका मार्ग करौंदोंकी झाड़ियोंसे रोक दिया। लोगोंसे कह दिया कि बातें और हल्ला करते हुए चले जाओ, जिससे बाघ यह समझे कि घसियारे चले गये। पाँच बज चुके होंगे, और हम लोगोंने भीतर बैठे हुए भोजन किया। मैंने अपने दोनों साथियोंको सिगरेट पीनेकी आज्ञा दे दी। मानवी चिमनियाँ धुआँ निकालकर स्वस्थ हो गईं। हम लोग शिकारके लिए सम्पूर्णतया तैयार थे। मैं बीचमें बैठा। बन्दूक़ें छेदोंके सहारे रखी थीं।

दिन छिपा, रात आई। अँधेरेने जादूकी लकड़ी फेरकर सबको अन्धकारमें ढक लिया। हरिनों और पक्षियोंने प्रकृतिका अभिवादन करके अपने शयन-स्थानकी शरण ली। शान्तिके कारण झिलंगनाका जलरव बढ़ गया। कृष्णपक्षकी अष्टमी थी। खालेमें और भी अधिक अन्धकार था। सिमटे-सुकड़े

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बैठे छेदोंसे लाशकी ओर देख लेते थे, और एक दूसरेको शरीर छूकर संकेतोंसे बता देते थे कि अभी बाघ नहीं आया है। मन-ही-मन मैंने कहा कि यदि आज बाघ मर जाय, तो एक रुपयेकी मिठाई बाँटूँ। मनुष्य अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिए अथवा आपत्ति-कालमें बड़ी-बड़ी शपथें खाता है। एकान्तमें, द्रवित होकर, आँसू बहाकर प्रायश्चित्त-प्रण करता है; पर समय बीत जानेपर उसके मनका पेण्डुलम फिर पुरानी गतिको प्राप्त होता है। मिठाई बाँटनेका निश्चय कर लिया। थोड़ी देरमें हड्डी टूटनेका कड़ाका हुआ। हम तीनोंने एक दूसरेको संकेतसे बता दिया कि बाघ आ गया। उस समय हृदयकी गति ही न्यारी थी। भयसे नहीं, कौतूहल और उत्सुकतासे। बहुत दिनोंकी मुरादें पूरी हो आईं। बाघ तो आ गया। सावधानीसे देखा, तो लाशके समीप घुप अँधेरा था। छेदोंसे हम तो बाघकी झाईं देख सकते थे, पर वह हमें न देख सकता था। यदि यों ही फ़ायर कर दिया, तो न जाने लगे, या न लगे। डराकर भगानेसे तो यही अच्छा था कि वह अपनी इच्छासे चला जाय, और फिर कभी मारनेका अवसर दे, और कदाचित् चाँदनी छिटकने तक वह बना रहे। हम चाहते थे कि गोली खाली न जाय। चाहे हममें से कोई घायल हो जाय, पर बाघ अवश्य मरे। अपमानका बड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
भय था, इसलिए हम बैठे ही रहे, और बाघ हड्डी तोड़-तोड़कर मांस खाने लगा। हम लोगोंने उधर देखना ही बन्द कर दिया। जिसपर अपना चारा न हो, जो बीमारी लाइलाज हो, वह भाग्यपर ही छोड़नी पड़ती है। इस प्रतीक्षामें थे कि कब चन्द्रमा निकले और हमारी बन्दूक़ोंसे धाँय-धाँय हो। बन्ध्या स्त्रीको जैसे यह आशा होने लगे कि उसकी गोद शीघ्र ही भरेगी, वैसी ही आशामें हम बैठे थे। हम जानते थे कि हम अपने आनन्दके लिए, झूठी कीर्तिके लिए, गोरक्षाके बहानेसे, ईश्वरकी एक सृष्टि—एक आवश्यक सृष्टि—बाघको मारनेको उतारू थे, और, वह भी धोखा-धड़ीसे—सामने ललकारकर नहीं। पर मनुष्य अपने अस्तित्वके लिए, अपनी भलाईके लिए, ये सब कुछ करता है, और धर्मशास्त्र एवं नीतिशास्त्र तकका सहारा लेता है। मनु महाराज तकने कह दिया है—

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्॥

अर्थात्—'गुरु हो चाहे बालक, वृद्ध हो चाहे अतिविद्वान ब्राह्मण, यदि वे आततायी हैं तो इनको बिना विचारे ही मार डाले।'

फिर हम लोगोंके लिए तो अन्य भी कारण थे। मैं तो इतना उतावला हो रहा था कि मेरा बस चलता, तो बाघके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऊपर कूद पड़ता। डौन क्युक्सौटे (Don Quixote)* की सी मनोवृत्ति प्रायः प्रत्येककी दो-चार क्षणके लिए हुआ करती है। ऐसे ही प्रलयंकारी विचारोंमें हड्डियोंकी चरड़-चरड़ बन्द हो गई। देखा, तो बाघ ही न था। क्या उसे कोई खटका हुआ था, अथवा किसी प्रकार हमारी उपस्थितिका उसे पता चल गया था। हम लोग हिले-डुले तक न थे। फिर ठीक चन्द्रमाके निकलनेके समय ही वह क्यों चला गया? हम लोग बड़े खिजे। अपने पूर्व निर्णयको कोसने लगे। अन्धाधुन्ध तीन फ़ायर कर देते, तो किसी-न-किसीका लग ही जाता। इस प्रकार उल्लू तो न बनते। मनुष्य पीछे पछताता है। मरणासन्न रोगी कोई खानेकी वस्तु माँगता है, तो उसके कुटुम्बीजन उसके हितके लिए वह चीज़ नहीं देते, पर संसारका हितैषी जब उसकी मानव-लीला समाप्त कर देता है, तब उसके कुटुम्बीजन अपनी मूर्खता, अपने पूर्व निर्णयपर पश्चात्ताप करते हैं। मनुष्य त्रिकालदर्शी थोड़े ही है? मन मारकर रह गये। चन्द्रमाका प्रकाश चारों ओर छा गया। लाश दिखाई पड़ती थी। गायकी चारों टाँगें आकाशकी ओर उठी हुई थीं। उसका पिछला भाग बाघके पेटमें पहुँच चुका था।

---

* स्पेनके सुप्रसिद्ध लेखक 'सरवैंटीस'के जगतप्रसिद्ध उपन्यास 'डौन क्युक्सोटे'का मुख्य पात्र, जो भावुकतामें आकर अतीतकी मृत संस्थाओंको स्थापित करना चाहता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर हम उत्साहहीन बैठे ही रहे। आधी रात तक तो तपस्या की थी। शेष रातका जागरण कोई बात नहीं थी। दो बजे। हम उसी आसनपर डटे थे। शीत बढ़ा और तीन बजे सामनेसे एक पत्थर गिरा। हम चौकन्ने हुए। कोई जानवर—और शायद बाघ—था। पत्थर गिरा और कोई आहट न हुई। हम सतर्क हो गये। आध घंटे उपरान्त हमसे एक गज़की दूरीपर कुछ पत्थर सरके। हमें कुछ ऐसी आशंका हुई कि बाघ हमारे पास ही बैठा है, पर हम चुपचाप बैठे रहे। आध घंटे तक निस्तब्धता रही, फिर 'कड़ाक' शब्द हुआ। हड्डी टूटी और बाघके पेटमें कुछ और बोझा पड़ा। धीरेसे जो मैंने बाहरको देखा, तो विशाल दृश्य था। लाशपर अगले दो पंजे रखे हुए, पेटमें मुँह गाड़-गाड़कर और मुँह भरे हुए, चारों ओर सिंहावलोकन करते हुए, सतर्कताकी मूर्ति, लम्बी पूँछ हिलाते हुए, रुक-रुककर वह अपने स्वाभाविक काममें लगा था। केमरा होता, तो रायफ़ल-शिकारकी अपेक्षा केमरा-शिकार करता। इतना साहसी जीव, जो एक थप्पड़में गायको मार सकता है, इतनी चालाकी और सतर्कतासे अपना भोजन करे! उसका ऐसा प्राकृतिक स्वभाव है। बिच्छूका डंक काट दो और उसको तनिक छेड़ो, तो उसकी बन्डी पूँछ भी वैसे ही वार करेगी, मानो उसमें डंक लगा हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठीक पौने चार बजे दो फ़ायर हुए। लाशकी ओरसे कम्पोत्पादक दहाड़ हुई। गोली खाकर बाघ तड़पा। धमाका हुआ, फिर कुछ क्षणोंके लिए हम तीनों बुद्धिहीन हो गये। हाँफते हुए बाघने एक चपेटमें हमारी क़िलाबन्दी तोड़ दी। करौंदा और मोटे लक्कड़ोंका हमारा आश्रय भाप-सा बनकर न जाने कहाँ उड़ गया। बाघके पंजेका एक हाथ और पड़ता, तो मैं स्वतन्त्रताके उस पुजारीपर आक्रमण करनेका फल पा जाता। अशकुन तो पहले ही हो चुका था, पर मैं तो मरने-मारनेपर उतारू था। बन्दूक़की नाल उसके पेटसे सटाकर बन्दूक़ दाग़ दी। कमर टूट गई। पट्टसे बाघ गिरा और गुर्राता हुआ नीचे खिचड़ने लगा। जितना ही वह ऊपर आनेको ज़ोर लगाता था, उतना ही नीचे जा रहा था। मेरुदण्डहीन जीव या संस्था ऊपर नहीं चढ़ सकती। खुशीके मारे हम आपेसे बाहर थे। दो-ढाई घंटा रात काटना बड़ा कठिन था। राम-राम कहकर रात काटी। वहाँसे उठे। भरी हुई बन्दूक़ लिये हुए सावधानीसे घिसटनकी ओर चले। आगे जाकर देखा, तो बाघ पड़ा था। पत्थर फेंककर यह निश्चय किया कि बाघ मर गया है। मैं आगे बढ़ा और देखा कि गो-भक्षक मरा पड़ा है।

शिमलासूसे सुपरिन्टैन्डेन्ट बग़ीचा मियाँ उमरुद्दीन और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उनके लड़के अज़ीज़ आदि भागते हुए आये और हमें धन्यवाद दिया।

बाघ आठ फ़ीट दो इंच लम्बा था। आदमियोंपर लदवाकर हम लोग बड़ी शानसे टिहरीको आये। बाघको देखनेके लिए भीड़ लग गई। इतना बड़ा बाघ बहुत वर्षोंसे किसीने न मारा था। स्वयं महाराज साहबने देखकर आश्चर्य किया। मैं और लक्ष्मीदत्त इस बातसे प्रसन्न थे कि नहूसत दूर हो गई, और खुदा-खुदा करके कुफ़ आखिर टूट ही गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिड़न्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सायंकालके चार बजे थे। स्कूलसे लौटकर घरमें गरम-गरम चाय पी रहा था। छोटी लड़की अपनी भोली और शुद्ध दृष्टिसे, पास ही बैठी, खिलौनेसे खेल रही थी, और अपनी तोतली बोलीमें कह रही थी—"बाबूजी! इछे भी चाय दे दो, थंद लग रही है।" मैं कुछ कहना ही चाहता था कि किसीने बाहरसे पुकारा—"मास्टर साहब! मास्टर साहब!! ज़रा बाहर आइये। एक आदमी आया है। बाघकी ख़बर लाया है।" बाघका नाम सुनकर मैं उछल पड़ा। चायका प्याला वहीं-का-वहीं रखकर झटसे बाहर आया।

देखा, तो बाहर पश्मीनेकी चादर ओढ़े मेरे शिकारी मित्र पं० लक्ष्मीदत्त थपलियाल खड़े हैं, और उनकी बग़लमें एक हाड़का कंकाल—बूढ़ा—खड़ा है। उसकी मुखाकृति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसकी अन्तर्वेदनाकी द्योतक थी। कष्ट, विपत्ति और समयके उलटफेरने उसकी गति, तूफ़ानमें फँसे जहाज़की-सी, कर दी थी।

चिन्ताने कौतूहलका स्थान लिया, और बातचीतसे मालूम हुआ कि बाघने टिहरीसे कुछ दूर एक ही साथ दो गायोंका बध किया है।

एक तो दिन-भरकी थकावट, दूसरे कुसमय और तिसपर कड़ाकेका जाड़ा—तबीयत बाहर निकलनेको न करती थी, पर उस बूढ़ेकी आँखोंमें एक खिंचाव था, जो हृत्तंत्रीके तारोंको अपनी ओर खींच रहा था। वह खिंचाव प्रेमका आकर्षण-सा न था, वरन् कम्पायमान, भावी आशंकासे भयभीत बलि-पशुकी आँखोंसे निकलती हुई मूक याचनाका खिंचाव-सा था। उसकी आँखें कह रही थीं, यदि तुम हृदयहीन नहीं हो, तो हमारी रक्षा करो।

वन-बीहड़-सहचरी बन्दूक़ उठाई। कारतूस जेबमें डाले, और लक्ष्मीदत्तजी तथा बूढ़े किसानको साथ लेकर जंगलकी ओर चला। चला जाता था और मन-ही-मन सोचता जाता था कि संसारमें जीवन-संग्राम-समस्या बड़ी विकट है। मनुष्यसे लेकर कीड़े-मकोड़े तक उदर-पूर्तिके लिए एक दूसरेके ख़ूनके प्यासे होते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी पशुको मारता है,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

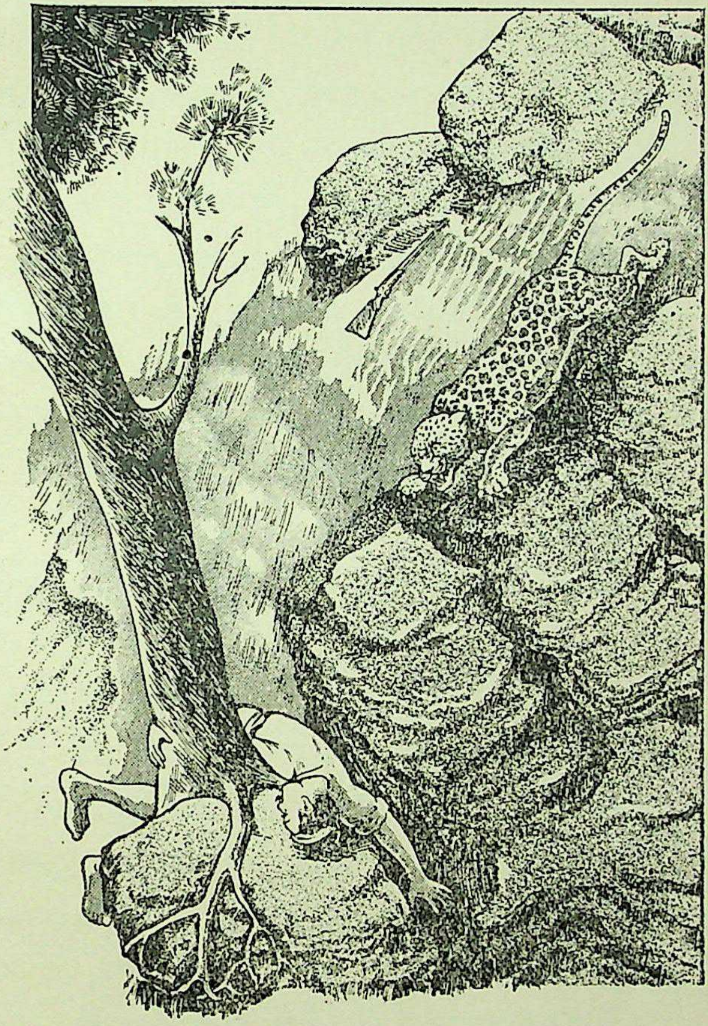

'पेड़से ठोकर खाकर रुका' [पृष्ठ ४८]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो पापी कहाता है, पर जब बाज़ और बाघ चिड़िया और गायको मारते हैं, तब हम केवल यह कहकर ही चुप हो जाते हैं कि 'जीवो जीवस्य भोजनम्'। कल्पनाशक्ति अपनी उड़ानमें हिंसाके मूलतत्त्वके विश्लेषणकी ओर उड़ रही थी कि बूढ़ेने कन्धेपर हाथ रखकर कहा—"मालिक, ऊपर देखो। ठीक उस डँडेपर मेरी बड़ी गाय मरी पड़ी है, और वहाँसे चार फ़र्लांगपर पहाड़की दूसरी ओर दूसरी गाय पड़ी है।"

बूढ़ेकी बात सुनकर दार्शनिक विचारोंने अपनी राह ली, और बाघ मारनेकी सूझी। लक्ष्मीदत्तजी और मुझमें चार-पाँच मिनटके लिए परामर्श हुआ। परामर्श क्या था, एक प्रकारकी युद्ध-कानफ़रेंस-सी थी, जिसमें अपने शत्रुकी सब चालोंका ख़याल किया गया।

बाघने दो गायें मारी थीं। परामर्शसे हम लोग इस नतीजेपर नहीं आये थे कि एक ही बाघने दो गायोंको मारा है। सम्भव है, मारा हो। पहली गायको मारनेके पश्चात् यदि किसी प्रकार वह वहाँसे भगा दिया गया होगा, तो उसने दूसरी गायको मार्गमें पाकर, पेटकी अग्नि शान्त करनेके लिए, उसको मार डाला हो? और यह भी सम्भव था कि दूसरी गायको किसी दूसरे बाघने मारा हो। मेरी राय यही थी, और लक्ष्मीदत्तजीने मुझे जनरल मानकर मेरी ही बात ठीक समझी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो बाघोंकी आशंकासे हम लोगोंने अपने दलको दो भागोंमें विभक्त किया। लक्ष्मीदत्तजी तो दूसरी गायकी लाशकी ओर चले, जो सामनेके डाँडेपर मरी पड़ी हुई गायसे चार फ़र्लांग दूर गाँवकी ओर थी। मैं डाँडेकी ओर चला और यह निश्चय हुआ कि समय अधिक हो जानेपर लाशपर आज बैठना ठीक नहीं, क्योंकि बैठनेके लिए स्थान दिनमें चार बजे तक बन जाना चाहिए था, जिससे बाघको किसी बातका शक न हो। स्मरण रहे, बाघ जंगलका कूटनीतिज्ञ चाणक्य है। छोटीसी हिलती पत्तीसे, आसन बदलनेसे और कोई-कोई तो कहते हैं कि पलककी आवाज़ तकसे बाघ अपने शत्रुको समझ लेता है और फिर लाशपर नहीं आता। इसलिए बाघको मारनेके लिए झाड़ी और काँटोंसे जो स्थान बनाते हैं, वह दिनमें चार बजे तक बना लेते हैं, और बनाते समय कुछ आदमी इधर-उधर बैठे रहते हैं कि जिससे बाघ यह समझे कि किसान घास काट रहे हैं। जब शिकारी छिपकर बैठ जाते हैं, तब और लोग बातें करते चले जाते हैं, जिससे बाघ समझे कि घास काटनेवाले चले गये और उसका भोजन बेखटके पड़ा है। ऐसा होनेपर भी बाघ एकदम शिकारपर नहीं आता। छिप-छिपकर और रुक-रुककर चारों ओर देख-देखकर एक-एक गज़ बढ़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मीदत्तजी बूढ़ेके साथ छोटी गायकी लाशकी ओर चले। हम दोनोंको गाँवमें मिलना था।

मुझे एक मीलके लगभग पहाड़की चोटीपर पहुँचना था, और समय तंग हो रहा था। जंगलमें बाघ अपने शिकारपर चार-पाँच बजे ही आ जाता है, इसलिए मैं बड़ा चौकन्ना होकर चल रहा था। पहाड़की चोटीपर डूबते हुए सूरजकी लाल किरणें गज़ब ढा रही थीं। जीवन-ज्योति इसी प्रकार अन्तिम प्रकाश करके अनन्तमें लीन हो जाती है। दार्शनिक विचारोंको फिर रोका, और जीवन एवं मृत्यु—बाघके शिकार—का प्रश्न सम्मुख आ गया। रात्रि-आगमनके चिह्न चारों ओर दृष्टिगोचर हो रहे थे। चिड़ियाँ झाड़ियोंमें चहचहा रही थीं। किसान थके-माँदे घरको लौट रहे थे। मैं चढ़ाईपर एक-एक पैर सँभालकर रख रहा था। कहीं चुपचाप बाघ दिखाई पड़ जाय और बाघ मुझे न देख पाये, तो फिर एक बार जीवनकी बाज़ी लगाकर फ़ायर कर दिया जाय। बाघ और शिकारी जब घात लगाकर चलते हैं, तब उनकी आकृति देखने योग्य होती है। मनुष्य तो मनुष्यकी श्रेणीसे—सद्भावनाओं और भावुकताके विचार-जगतसे—गिरकर पशु ही हो जाता है। स्नायु खिंचे हुए, पुट्ठे जकड़े हुए, ख़ूनी आँखें चारों ओर देखती हुईं, कान चौकन्ने; संसारकी सब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बातों—बाल-बच्चों, देश और राजनीति—को भूलकर शिकारी एक विचित्र प्राणी हो जाता है। कड़ी चढ़ाईपर मैं इसी दशामें चला जाता था। कभी-कभी रुककर इधर-उधर देखता भी जाता था कि कहीं बाघके दर्शन हो जायँ, तो मनोरथ सिद्ध हो जाय। आधी चढ़ाई चढ़नेके उपरान्त मैं एक चट्टानके किनारे रुका और गृद्ध-दृष्टिसे डाँडेकी चोटीकी ओर देखा। एक झाड़ीके आसपास चिड़ियाँ कुछ विचित्र-रूपसे चिड़चिड़ा रही थीं। उधर जो देखा, तो हृदयकी धड़कन एकदम बढ़ गई। सामने तीन सौ गज़पर झाड़ीके सहारे बाघ खड़ा हुआ दिग्दर्शन कर रहा था, और चिड़ियाँ अपनी शक्ति-भर उसपर विरोधका प्रदर्शन कर रही थीं—मानो टोडी बच्चा हाय-हायकी पुकार मचा रही थीं। मेरे पास रायफ़ल न थी—बन्दूक़ थी। रायफ़ल न लानेकी मूर्खतापर अपनेको हज़ार बार कोसा, क्योंकि बारह नम्बर बन्दूक़की मार इतनी दूर नहीं होती।

बाघ थोड़ी देर बाद अपने शिकारकी ओर शाही शानसे चला। मैंने अपना मार्ग छोड़, कुछ चक्कर काटकर, पहाड़की चोटीपर पहुँचनेकी ठानी, जिससे कि बाघपर बग़लसे, छिपकर फ़ायर किया जा सके। बाघ मुझसे तीन सौ गज़ ऊपर था। वह पहाड़के ऊपरसे ही अपने शिकारकी ओर जा रहा था। मैंने आगे बढ़कर उसके रास्तेमें जाना चाहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोनोंको एक ही स्थानपर पहुँचना था। जिस प्रकार दो गलियोंसे और भिन्न दिशाओंसे कोई चलकर गलियोंके चौराहेपर मिलते हैं और जब तक आमने-सामने नहीं आ जाते, तब तक एक दूसरेको नहीं देख सकते। ठीक इसी प्रकार मैं इस विचारसे मोड़की ओर चला कि कहीं पीछेसे पचास-साठ गज़पर बाघ दिखाई पड़ा और मौक़ा हुआ, तो उसे मारनेकी चेष्टा करूँगा। यह केवल अन्दाज़ ही अन्दाज़ था। यह स्वप्नमें भी विचारा न था कि अन्दाज़ा इतना ठीक निकलेगा। जूते उतारकर मैं ऊपरको लपका। जूते इसलिए उतार दिये कि तनिक भी आहट न हो। जब पहाड़की चोटीका मोड़ पचास-साठ गज़ रह गया, मैं धीरे-धीरे एक-एक पैर गिनकर बन्दूक़को बगलमें दबाये और हाथ बन्दूक़के घोड़ेपर रखे हुए आगे बढ़ा। ख़याल था कि इतनी देरमें बाघ मोड़को पार कर गया होगा, और मैं मोड़पर पहुँचकर उसके मार्गको काटकर छिपकर बैठ जाऊँगा, पर ज्यों ही मैं मोड़पर शिकारी आसनसे पहुँचा, त्यों ही दूसरी ओरसे बाघ आ गया। मैंने पहले बाघको देखा। जंगलमें स्वतन्त्र-रूपसे, अभिमानके साथ, मस्त चालसे चलते हुए मैंने बाघको इतने समीपसे पहले कभी न देखा था। झुकी हुई अधखुली आँखें, श्वेत दाँतोंसे कुछ बाहर निकली हुई लाल जीभ और गज़बके पुट्ठे—ऐसे पुट्ठे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो प्रत्येक युवकके होने चाहिए—साक्षात् यमराजकी मूर्ति मेरे सामने आ गई। हृदयकी धड़कन तो कुछ सेकिन्डोंके लिए न मालूम कितनी तीव्र हो गई। बाघसे मुझे सहसा भय नहीं लगता। पर इस आकस्मिक स्वागतके लिए मैं तैयार न था; पीछे हटनेका समय न था। ऐसे अवसरोंपर मनुष्य बुद्धिसे काम नहीं ले सकता। ऐसे अवसर उसे बुद्धिहीन कर देते हैं। सोचनेका समय तो घर और सभा-समितियोंमें ही हुआ करता है। ऐसे मौक़ेपर मनुष्यकी सहायक पशु-बुद्धि (Instinct) ही होती है और प्रेरक कोई विशेष शक्ति। ज्यों ही बाघकी दृष्टि मुझपर पड़ी, त्यों ही वह गरजकर पिछले पाँव खड़ा हो गया। अगले पंजोंके नाख़ून निकालकर, पूँछको इस प्रकार हिलाता हुआ जिस प्रकार बिल्ली चिड़ियाकी घातमें बैठी हुई अपनी पूँछ हिलाती रहती है, मेरे सामने मुँह फाड़कर खड़ा हो गया। बाघ मेरे इतने समीप था कि मैं बन्दूक़की नालसे उसे छू सकता था। पहले तो मैं काँपा और यह मालूम होता था कि हृदय नीचे पैरोंकी ओर भीतर-ही-भीतर सरक रहा है। इसका कारण आकस्मिक मुटभेड़ थी। बादको निराशा-जन्य साहस अथवा उद्वेगने मुझे मृत्युका सामना करने-योग्य ऐसे बना दिया, जैसे हरिन अपने बचावका कोई उपाय न पाकर, दौड़ना छोड़कर, मारनेपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उतारू हो जाता है। मैंने समझ लिया कि मैं फ़ायर करूँ अथवा न करूँ—बाघ मुझे मार ही देगा, और मेरे मरनेकी ख़बर स्त्री, बच्चों, घरवालों और इष्टमित्रोंको मेरे शरीरकी बची-खुची हड्डियाँ और मूक बन्दूक़ देगी, और इस जीवनका अन्त—जिसका आदर्श निरीह किसानोंकी सेवा करना बना रखा था—इस प्रकार अकेले पहाड़ और पत्थरोंमें, जो हज़ारों वर्षसे ऐसे ही कांड देखते हुए हृदय-हीन हो गये हैं, होगा।

उधर बाघने भी समझा कि यह दो पैरका प्राणी काली-काली लोहेकी वस्तु लिए उसकी जानकी ख़ातिर आया है। उसके ख़ूनका प्यासा है; उसके मुँहसे ग्रास छीने तो छीने पर उसकी जानका गाहक—यह दो पैरका जीव—इस प्रकार अपमान करके उसे मारने आया है। यह नहीं हो सकता। इस अपमान और धृष्टताका एक ही उत्तर था, और वह यह कि वह अपने शत्रुकी सत्ता ही मिटा दे।

इधर मैंने ख़याल किया कि यदि फ़ायर किया, तो बाघ गिरते हुए भी एक चोट करेगा, और यदि वह मेरे ख़ूनको न भी पी सकेगा, तो नीचे खड्डमें तो गिरा ही देगा। खड्डमें एक मील नीचे गिरनेपर मेरे अन्तका पता भी कोई न देगा, इसलिए घोड़ा चढ़ाये खड़ा था कि पहले मैं आक्रमण न करूँगा। यदि बाघ मुझपर झपटा, तो फ़ायर करूँगा और आत्म-रक्षाके लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो कुछ बन पड़ेगा, करूँगा। बन्दीगृहमें जब दाराका सिर काटनेके लिए औरंगज़ेबके भेजे हुए आदमी आये, तो दाराके पास शाक काटनेका चाकू था। दारा उसीसे लड़ा। तलवारके सामने उसकी कुछ न चली, पर दारा वीरकी भाँति लड़ता ही रहा। प्रत्येक व्यक्तिका यही कर्तव्य होना चाहिए। इस कर्म-विपाक-विमर्शके लिए न तो समय ही था और न उस समय दिमाग़ ही। इस घटनाको लिखने और पढ़नेमें देर लगती है, पर ये सब बातें एक मिनटमें हुई। कम ही समय लगा होगा, अधिक नहीं।

एक मिनट तक हम दोनों डटे रहे। बाघ गुर्रा रहा था। उसकी आँखोंसे ज्वाला-सी निकल रही थी। मैंने फ़ायर न किया और न उसने आक्रमण। यह एक मिनट युगके समान था। अन्तमें बाघ एकदम मुड़कर भागा। ज्यों ही वह मुड़ा, मैंने समझा कि बस मेरे ऊपर आया। बन्दूक़ दाग़ ही तो दी। जंगल गूँज गया। गोली बाघके पेटमें लगी। मैंने बाघको गिरते देखा। बन्दूक़ छोड़ मैं नीचेको दौड़ा, पर गिरकर लुढ़कने लगा। जिस बातका डर था, वही हुआ। खड्डकी ओर मैं फ़ुटबॉलकी भाँति ढरकने लगा। चालीस-पचास गज़ लुढ़का हूँगा कि हृदय दहलानेवाली बाघकी गरजन कानपर मालूम हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मौतके अनेक बहाने होते हैं और जीवन-रक्षाके अनेक सहारे। यदि जीवन होता है, तो मनुष्य पहाड़की चोटीसे गिरकर बच जाता है, और मरनेके लिए सीढ़ियोंसे गिरना ही काफ़ी है। मुझे बचना था। भगवानको यही मंज़ूर था कि मैं बचा रहूँ। सामने खड्डकी ओर तेज़ीके साथ लुढ़कनेके मार्गमें एक चीड़का वृक्ष था। इतना होश-हवास तो था ही। आठ-दस गज़ ऊपरसे पेड़ देख लिया। उसी ओरको जानेके लिए हाथ-पैर पीटे और उस पेड़से आकर टकराया। पीछेसे बाघके घिसटनेकी सरसराहट हो रही थी। पेड़से ठोकर खाकर रुका, झटपट ऊपर चढ़ा। इतने ही में विद्युत्गतिसे बाघ भी आ गया और उचककर मुझपर पंजा मारा। उसके पंजेमें मेरा नेकर आया। नेकर फट गया, और मैं ऊपर निकल गया। बाघकी कमर टूट गई थी, इसीलिए वह पेड़पर न चढ़ सका। पेड़पर ऊपर बैठकर मैंने दम लिया, और तब चोट और ख़ूनकी ओर ध्यान गया। पेड़के नीचे बाघ पड़ा हुआ अन्तिम श्वास ले रहा था। मेरे मनमें विचारोंका सागर उमड़ पड़ा, पर उनके लिखनेकी आवश्यकता नहीं। रात्रिके नौ बजे तक जाड़ेमें उस पेड़पर टँगा रहा। लक्ष्मीदत्तजीने आठ बजे तक प्रतीक्षा की, और वह भी इसलिए कि शिकारी और भिखारीका कुछ ठिकाना नहीं कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहाँ जा निकले। छै बजे नहीं, तो सात बजे तक मुझे पहुँचना चाहिए था, इसलिए, चिन्तित होकर लालटेन और दो आदमियोंको लेकर वे मेरी खोजमें निकले और नौ बजे मुझे पेड़पर टँगा और बाघको नीचे मरा हुआ पाया। बड़ी कठिनतासे उतारा। बन्दूककी तलाश प्रातःकालपर छोड़ी गई। उस बूढ़ेने बाघके न मालूम कितनी लातें मारीं और उसके बाप-दादोंको गालियोंसे पेट भरकर कोसा।

घर लौटकर थोड़ी बहुत सेंक-साक की। गुड़के साथ दूध पिया। गृहिणीने उस दिन ऐसी सेवा की, मानो मुझे बाघने घायल कर दिया हो। अगले दिन लक्ष्मीदत्तजी और मैंने दूसरे बाघको मारा। लक्ष्मीदत्तजीने विकट साहस दिखाया था—घायल होकर भी बाघको मार दिया।

——

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौतके मुँहमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरे शिकारी मित्र पं० लक्ष्मीदत्त बड़े ही ज़िन्दादिल आदमी हैं। शिकारीमें जो गुण चाहिए, वे सब उनमें हैं। संकटके समय, जब बाघ आक्रमण कर बैठे, साहसके साथ अपने साथीका साथ देना और शिकार-सम्बन्धी विषयके मूल-तत्त्वको समझकर काम करना और बीहड़ तथा अगम्य स्थानोंमें पीर, बावर्ची, भिश्ती, ख़र बनना—ये सब गुण लक्ष्मीदत्तजीमें हैं।

उनमें और मुझमें एक भारी भेद है। उन्हें शिकार खेलने और खाने—दोनोंका शौक़ है। मैं शिकार खेलनेको कला.की दृष्टिसे देखता हूँ। कट्टर निरामिषभोजी होनेके कारण मेरा शिकार खेलना गुनाह बेलज्ज़त है। अन्य व्यसनोंकी भाँति शिकार भी एक व्यसन है; पर यह व्यसन अन्य व्यसनोंकी अपेक्षा कहीं अच्छा है। मेरी तो यह धारणा है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्यार्थियोंके लिए—विशेषकर उनके लिए, जिनकी धमनियोंमें उष्ण रक्त प्रवाहित हो रहा है और जिनकी जीवन-यात्राका मध्याह्न नहीं हुआ—शिकार खेलना—साहसके पुतले बनना—परमावश्यक है। नवयुवकोंको शस्त्र और शास्त्र दोनोंमें पारंगत होना चाहिए। 'उभयोरपि सामर्थ्यं शापादपि शरादपि' वाली बात होनी चाहिए।

× × × ×

हाँ, तो बाघसे 'भिड़न्त' के उपरान्त अगले दिन प्रातःकाल लक्ष्मीदत्तजी आये। मेरी सूरत-शकल देखकर—यह निश्चय करके कि मेरे कहीं चोट नहीं है—उन्होंने दूसरे बाघकी बात छेड़ी।

मैंने कहा—भई, रहने भी दो। हम लोग कोई खुदाई फ़ौजदार तो हैं नहीं, जो ईश्वरकी सृष्टिमें हर ज़गह हस्तक्षेप करते फिरें। कल तो एक बाघ मारा ही है, जिसमें मैं खुद भी शिकार हो गया होता। आख़िर ऐसी भी क्या लत!

लक्ष्मी०—हमारी लत क्या है? कहीं महीना दो महीनेमें तो बाहर निकलते हैं। आप तो किताबके कीड़े हैं। क्या बुराई है, जो अवकाशके समय एक दुष्ट आततायीको मारने चलते हैं? रही मारनेकी बात, सो हिंसा-अहिंसाकी बात तो मैं नहीं समझता। मैं तो बाघ मारकर मुर्ग़ी, हरिन और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीतरोंके मारनेका पाप—यदि यह पाप है तो—कम किया करता हूँ। और फिर जो शत्रुको पाले, वह तो मूर्ख है; क्योंकि 'पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्'।

मैं—ख़ैर, लम्बी-चौड़ी बातें न बनाओ। स्पष्ट यह कहो कि आज भी शिकारको चलेंगे। शास्त्रकी बातें न करो। शास्त्रकी बातें तो शैतान भी कर सकता है।

लक्ष्मी०—चाहे कुछ सही। शैतान नहीं, शैतानका नगड़-दादा बनाइये; पर चलिये। आज इतवार है। कल फिर वही पढ़ानेकी बिस-बिस।

मैं—अच्छी बात है, पर आज तुम्हारी परीक्षा है। यदि बाघ मिला, तो तुम्हें ही पहला फ़ायर करना होगा। बहुत दिनोंसे तुमने कोई बाघ नहीं मारा। मुझे ही मारना पड़ता है।

लक्ष्मी०—अच्छी बात है। आज बाघको इस लोकसे परलोक पठानेका पुण्य मैं ही करूँगा। आप सेनापति बने रहिये। तो मैं जाता हूँ। (जाते हुए)—हम लोग दो बजे जंगलकी ओर चलेंगे।

× × × ×

भोजन किया और कुछ आराम करके हम लोग जंगलकी तरफ़ चल दिये। मेरी ढाई बरसकी लड़की 'कमला' रोने लगी, और कहने लगी—"बाबूजी, मैं भी छाथ चलूँगी।"

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"मैं बाघ मारने जाता हूँ बिटिया!"—मैंने कहा। "मैं भी तो बाघ मारूँगी"—उसने सिसकते हुए कहा। यह सुनकर हम सब लोग हँसने लगे, पर उसकी समझमें कुछ न आया। मचलती ही रही।

× × × ×

एक मील तक हमारा मार्ग नदीके किनारे-किनारे था। भागीरथीकी सहायक—भिलंगना—धनुषाकारमें उछलती-कूदती, अपने सहवासी शैलशिखरों, द्रुमदलों और अलिचुम्बित पुष्पोंको अन्तिम प्रणाम और कदाचित् हमारा तिरस्कार करती हुई अपने प्यारेसे मिलनके लिए दौड़ी जा रही थी। यों तो प्राकृतिक दृश्य नयनाभिराम था। वनकी एक-एक वस्तु जीवनके लिए एक सबक़ था। पर, कितने हैं माईके लाल, जो साधारण घटनाओंसे शिक्षा लें। केवल महान् आत्माएँ ही—जो ब्रह्मकी ज्योति अधिक परिमाणमें लेकर आई हैं—बाज़के चिड़ियाको मारने और किसी शवके देखनेसे संसारमें युगान्तर कर देती हैं, और भगवान् 'बुद्ध' कहाती हैं।

फलोंका गिरना न्यूटनसे पहले किसने नहीं देखा था? पर, आकर्षण-शक्ति (Law of gravitation) का सिद्धांत उसीको सूझा। कितने हैं ऐसे, जो पीड़ितोंका चीत्कार सुनकर उनकी भलाईके लिए अपना जीवन होम दें? विशेष आत्माओंपर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही विशेष प्रभाव होता है। शेष लोग तो दुर्वासनाओंकी पूर्तिके पातक पुंज हैं।

मानव प्रकृति प्रति दिन एक ही वस्तु देखते-देखते ऊब जाती है। आगरेवालोंको ताजमहल देखनेका कौतूहल नहीं होता। वृन्दावन-वासियोंको 'कालिन्दी कूल कदम्बकी डारिन' में वह आकर्षण नहीं, जो एक नवागन्तुक यात्रीको होता है। हम लोगोंको मार्गके दृश्यमें कोई विशेष आनन्द नहीं मिल रहा था। वह तो रोज़की चीज़ थी। उससे हम अघा चुके थे। इसीलिए, समय बितानेके लिए मैंने लक्ष्मीदत्तजीसे किसी पहाड़ी गीतको पहाड़ी लोगोंकी टोनमें गानेके लिए आग्रह किया और घाटी शीघ्र ही "सड़ककी घूमा, सदा नी रहदी जवानीकी धूमा" से गूँज गई। पहाड़की चोटियोंपर गानेकी भी छूत होती है। एक आदमीने आवाज़ लगाई कि बस घास काटनेवाले—जिस प्रकार एक कुत्तेका भूँकना सुनकर और कुत्ते भूँकने लगते हैं—हू-हा करके गाने—रेंकने लगते हैं।

ऐसी ही बातोंमें हम लोग गाँवके पास आ गये। हमारे परिचित बूढ़ेने हमारा स्वागत किया। बूढ़ा और उसकी बुढ़िया दरिद्रता, दीनता और दुःखकी साक्षात् मूर्ति थे। ग़रीबीका चित्र-चित्रण करना साधारण लेखनीका काम नहीं। मेरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेखनीमें वह ओज कहाँ ? उसमें इतनी शक्ति नहीं, जो उनका चित्र खींच सके। रूसके प्रसिद्ध लेखक इवान टुर्गनेवकी प्रतिभा चाहिए। उसके अभावमें ग्रामीणोंकी अधोगतिका वर्णन करना कठिन है।

बूढ़ा एक छोटीसी भग्नावशेष कुटियामें रहता है। कुटियाके सामने एक छोटासा बाड़ा है। उसीमें उसके पशु बँधते हैं। दो छोटे-छोटे बैल, दो गायें—जो बाघ द्वारा मारी गईं—और एक गायका बच्चा, हल और थोड़ासा बीज—बस यही उसकी पूँजी है। बर्तनोंमें तवा, करछी, पतीली, थाली, तीन गिलास और दो लोटे हैं। कपड़ोंमें—बुढ़िया जो कुछ पहने है—एक जीर्ण-शीर्ण कुर्ता, एक पेवंददार पहाड़ी धोती है और गहनोंमें नाकमें सौभाग्यका चिह्न पीतलकी नथ है। बूढ़ा एक लंगोट पहने और हाथमें हुक्का लिए—जिसको उसके दादाने देहरादूनसे मोल लिया था—हमारी खातिरमें लगा था। कभी नमक लाता था और कभी दही। यदि आतिथ्यका तात्पर्य प्रेम, सहृदयता और जो कुछ अपने पास रूखा-सूखा हो, उसका खिलाना है, तो बूढ़ेका आतिथ्य उस षड्रस भोजनसे सौ गुना अच्छा था, जो कलह-कूप-अट्टालिकाओंमें बड़ी शानके साथ दिया जाता है। सत्कारके सात्त्विक भावसे बूढ़ेकी आँखें चमक रही थीं, और बाघके मरनेपर उसे जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रसन्नता हुई थी, वह कदाचित् क़ैसरके पतनसे लायड जार्जको भी न हुई हो। बूढ़ेके सामने यदि प्रसिद्ध शिकारी सर सैम्युएल बेकर भी आ जाते, तो वह उनका भी इतना क़ायल न होता, जितना कि वह हमारा था। जनताके मनपर प्रत्यक्ष बातका जितना प्रभाव पड़ता है, उतना किसी दूरकी सुनी-सुनाई चीज़का नहीं।

× × × ×

दही पीकर हम लोग जंगलकी ओर चले। साथमें बूढ़ा और सात-आठ आदमी थे। बाघकी भेटको एक बकरा भी ले लिया था। लोगोंके हाथोंमें दरातियाँ थीं। दो-एकने लट्ठ भी ले लिये थे। गाँवसे जंगलकी ओरको ढलवां उतार था, इसलिए, बटियापर हम लोग एकके पीछे एक होकर चले। एक स्थानपर पहुँचकर यह सोचा कि यदि बाघ आसपास आधे मीलपर कहीं होगा, तो बकरेकी आवाज़ सुन कर अवश्य आयगा। बाघको जब बकरा बाँधकर मारना हो, तो बाँधनेका स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँसे आवाज़ दूर तक सुनाई पड़ सके। गहरे गढ़ेमें—जहाँसे बकरेका मिमियाना पहाड़की एक ही ओर तक सुनाई पड़ सके—बकरेको बाँधना ठीक नहीं। साथ ही स्थान चारों ओरसे आठ-आठ, दस-दस गज़ तक खुला होना चाहिए, जिससे बाघ आक्रमण करनेसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले ही, घात लगाते समय ही, मारा जा सके। प्राय: यह देखने में आया है कि लोग बकरेको झाड़ीके पास बाँध देते हैं, जहाँसे एक गज़ चारों ओर कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। फलस्वरूप बाघ बकरेको आकर दबोचकर—लेकर चम्पत होता है, और शिकारी साहब या तो काठके उल्लूकी तरह बैठे रहते हैं या अन्धाधुन्ध फ़ायर करते हैं और बाघके स्थानमें बकरेको ही गोली मार देते हैं। बकरेको इतनी मज़बूतीसे तीन खूँटोंसे बाँधना चाहिए कि बाघके आक्रमणके धक्केसे रस्सी टूट न जाय। लक्ष्मीदत्तजीने बकरेको इसी भाँति ख़ूब कड़ा बाँधा। बकरा बाँधनेसे पहले हम लोगोंने अपने बैठनेका स्थान बना लिया था। हमारे बैठनेका स्थान बकरेसे बीस-पच्चीस गज़ दूर ऊँचेपर था। ऊँचेपर, इसलिए जिससे बाघ, परमात्मा न करे, घायल होकर हम लोगोंपर धावा कर बैठे, तो समतल भूमिकी अपेक्षा चढ़ाईपर कठिनाईसे चढ़ सकेगा। हम दोनों पहले अपनी जगहपर चुपचाप बैठ गये, जिससे बकरेको यह न मालूम होने पाये कि उसके समीप कोई आदमी है। ऐसा मालूम होनेसे बकरा उसी ओर देखता रहता है और मिमियाना बन्द कर देता है। उसे आदमीका सहारा हो जाता है। सहारेकी आशा मनुष्य और पशु दोनोंको होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब हम लोग बैठ गये, तब गाँववाले हो-हल्ला करते हुए चले गये, जिससे बाघको यह मालूम हो कि किसान लोग जंगलमें थे और सायंकालको नियमानुसार चले गये।

हम दोनों निर्जन स्थानमें चोरोंकी भाँति छिपे—घात लगाये—बाघकी जानके गाहक बैठे थे, और बेचारा बकरा नीचेकी ओर बीस पच्चीस गज़की दूरीपर चिल्ला-चिल्लाकर आकाश-पाताल एक कर रहा था। उसे अपनी जानके लाले पड़े थे। बेचारेको इतनी समझ कहाँ कि उसका चिल्लाना बाघका आह्वान करना था।

पूर्णिमा थी, इसलिए प्राची दिशासे, रात्रि होते ही, शशि-देव अपनी पूर्ण कान्तिसे बड़ी सजधजसे निकले। हमें उस समय चन्द्रमाकी चन्द्रिकासे प्रेम न था। हम तो, 'काकचेष्टा बकध्यानं' से बाघकी टोहमें थे। बकरेकी भें-भें और में-में अनन्त रूपसे जारी थी। हम लोग भी अपने स्थानसे—जहाँ हमें कोई देख न सकता था—बाघके आगमनकी प्रतीक्षामें थे। ७, ८, ९ बज गये। बाघको आना होता, तो सायंकाल होते ही आ जाता। ऐसे जंगलमें, जहाँपर सायंकालके समय कोई आदमी रहनेका साहस न कर सकता था, यदि बाघ होता, तो बकरेकी बोलीपर जल्दी ही आता। यों तो सायंकाल होते ही जंगलमें जंगली जानवरोंकी गतिसे एक—चहल-पहल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी ; पर इस चहल-पहलसे हमें क्या मतलब ? प्रतीक्षा करते-करते दस बजने आये, और लक्ष्मीदत्तजीको सिगरेट पीनेकी इच्छा हुई ; पर मैंने संकेतसे उन्हें ऐसा न करने दिया, क्योंकि बाघको चौकन्ना करने और भगानेके लिए तनिकसा सन्देह ही पर्याप्त होता है। बाघका मारना क्या है, उसको ठगना है। जो वीरता और होश-हवास रखते हुए उसे धोका दे सकेगा, वही उसे मार सकेगा। रही मरने-जीनेकी बात, सो तो बाघके शिकारमें अपना शिकार कभी भी और कैसे भी हो सकता है।

साढ़े ग्यारह बजेके लगभग हमसे चार-पाँच फ़र्लांगकी दूरीपर काकड़ (Barking Deer) बोला। काकड़ प्रायः भयभीत होकर या बाघको देखकर बोलता है। कदाचित् बाघ ही हो। इसलिए, हम अपनी बन्दूकें हाथमें लेकर बैठ गये। एकटक हो आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे। एक बज गया ; पर बाघ न आया। इससे हम हतोत्साह न हुए। पुराने पापी थे। बाघके स्वभावसे भलीभाँति परिचित थे। हम जानते थे कि अपने भोजन—बकरे—पर बाघ जल्दी भी आ सकता है, और सोच समझकर, घंटोंमें, देरसे भी। इतनेमें हमसे पचास गज़की दूरीपर एक पत्थर लुढ़का, और फिर कोई आहट न हुई। उससे हमें विश्वास हुआ कि हो न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो बाघ ही है। दूरसे ही बैठकर उसने बकरेको देखा है और बहुत देर तक इसी आशंकामें था कि कहीं कोई खटका न हो। बकरेके साथ कहीं छली प्रपंची मनुष्य न हो। यह विश्वास करके कि कोई भय नहीं है, बाघ आगे बढ़ता प्रतीत हुआ। बकरेने बाघको देखकर मिमियाना बन्द कर दिया, और सुकड़कर पूँछ हिलाता हुआ कातर दृष्टिसे देखने लगा। सम्मुख मौतको नंगा नाचता देखकर बकरा बेबस—गुमसुम होकर—काँपता हुआ खड़ा हो गया। अभी बाघ खुले मैदानमें न आया था—कम-से-कम हम लोगोंने उसे न देखा था; पर बकरेकी दृष्टि उसपर पड़ गई थी। थोड़ी देर उपरान्त जंगलके किनारेसे दो चमकती हुई गोलियाँ-सी दिखाई दीं। वह चौंधिया देनेवाली भयावह ज्योति बाघकी आँखोंकी थी। अजगर और बाघकी आँखोंमें मोहक शक्ति होती है। वह शक्ति बकरेके और हमारे सामने थी। मैंने धीरेसे लक्ष्मीदत्तजीको अपने हाथसे दबाया। उत्तर-स्वरूप उन्होंने भी वही संकेत किया। शिकारके समय बोलना और हिलना-डुलना मूर्खता है। शिकारके संकेत होते हैं। उन्हीं संकेतोंसे—वाणीके संकेतसे नहीं, वरन हाथ दबानेसे—हम तैयार हो गये। बाघने जब देखा कि झाड़ीसे एक छलाँगमें वह बकरे तक नहीं पहुँच सकता, तब वह धीरे-धीरे बिल्लीकी भाँति घात लगाये हुए आगे बढ़ा और अपने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्नायु और पुट्ठोंको इकट्ठा करके बज्रकी भाँति हो बैठा। यह आसन घातक था और बकरेके जीवनके कुछ ही क्षण शेष प्रतीत होते थे। पर नहीं। 'धाँय' की प्रलयकारी ध्वनि हुई, और लक्ष्मीदत्तजीने दुनाली बन्दूक़से एकदम दोनों घोड़े दाग़ दिये। बन्दूक़के शब्दका उत्तर, बाघने हृदय कँपानेवाली गर्जनसे दिया। बाघके गोली तो लगी थी, पर मर्म स्थानपर नहीं। पेटमें लगी। मैं अपनी रायफ़ल लिये बैठा था। मैं चाहता तो एक गोली बाघके खोपड़ेपर मार सकता था, पर उस दिनका सेहरा तो लक्ष्मीदत्तजीके सिरपर था। चोट खाकर बाघ गरजा और छटपटाकर विद्युत्-गतिसे लपककर अन्दाज़से, हम लोगोंकी ओर बढ़ा। हमारे होश उड़ गये और समझ लिया कि बस हिंसाके पापोंका प्रायश्चित्त—'सर्ववैपूर्णथंस्वाहा'—हो गया। हाँफते हुए बाघको ऊपर तेज़ीसे चढ़ते देखकर मैंने रायफ़ल दाग़ दी; पर निशाना चूक गया। रात्रिका समय! रायफ़लका निशाना और तिसपर दौड़ते हुए बाघपर!! झटसे ख़ाली कारतूस निकाल फेंका और दूसरा कारतूस नालमें पहुँचाया।

इतनेमें, लक्ष्मीदत्तजी अभी अपनी बन्दूक़के ख़ाली कारतूस निकालकर नए कारतूस लगा ही पाये थे कि बाघने आकर अगले पंजेकी थाप हमारी आड़पर मारी। सब झाड़, लकड़ी—हमारी सब क़िलेबन्दी—टूट गई। हम बाघके सम्मुख बैठे थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैंने एक फ़ायर और किया, और वह जल्दीमें उसकी छातीमें लगनेके बजाय उसकी मेरी ओरवाली अगली टाँगमें तिरछा लगा जिससे उसकी वह टाँग बिल्कुल बेकार हो गई ; पर उफ़ ! उसने दूसरे पंजेसे वज्र-प्रहार किया। उस समयका स्मरण करके मेरा कलेजा अब भी दहल जाता है। लेखनी मेरी उस समयकी मनोवृत्तिको व्यक्त नहीं कर सकती। उस अचूक क्रूर प्रहारसे लक्ष्मीदत्तजी लोटपोट होकर नीचेकी ओर निर्जीव पत्थरकी भाँति लुढ़कने लगे। प्रहारके समय लक्ष्मीदत्तजीने केवल यही शब्द निकाले—"मास्टरजी, बुरी तरह मरा।" उनकी बन्दूक़ मेरी ओर आ गिरी। मेरा सिर चकरा गया। आँखोंके सामने अँधेरा छा गया। बाघके भयसे नहीं, अपनी मौतकी आशंकासे भी नहीं, वरन अपनी वृद्धा माताके एकमात्र सहारे लक्ष्मीदत्तजीके लिए। उनकी पत्नी अपने···का समाचार सुनकर कैसे सिर धुनेगी ! लक्ष्मीदत्तजीके घरमें तीन प्राणी थे। उनकी अट्ठाईस-तीस वर्षकी स्त्री, पाँच-छै महीनेकी एक बालिका और उनकी पैंसठ वर्षीया माता, जो लक्ष्मीदत्तजीकी केवल दो वर्षकी आयुमें विधवा हो गई थीं। ऐसे कुटुम्बपर यह विपत्ति—यह वज्राघात और उसका समाचार देनेवाला मैं ! यह मुझसे कैसे हो सकेगा ? किस मुँहसे मैं नगरको लौटूँगा ? मैंने यह शर्त क्यों की थी कि आज पहले फ़ायर लक्ष्मीदत्तजीको

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना पड़ेगा ? नैतिक दायित्त्व तो मुझपर था। होनेको तो वही होता है, जो भगवानकी इच्छा होती है ; पर मुझको उसका साधन क्यों बनाया ?

पता नहीं, बाघ लक्ष्मीदत्तजीको कहाँ खींच ले गया और उनके शरीरकी क्या दुर्गति की होगी—ये विचार आते ही मैं पागल-सा हो जाता था। अन्धाधुन्ध फ़ायर करना निरर्थक था। कहीं लक्ष्मीदत्तजीमें जीवन शेष हो, तो मेरी बिना निशानेकी गोलीके वे निशाना न बन जायँ। यदि उन्हें ढूँढा भी जाय, तो कहाँ ? पर प्रातःकाल तक प्रतीक्षा भी कैसे की जाय ? अच्छा हो, मेरी जीवन-लीला भी समाप्त हो जाय। एक वृद्धा असहाय स्त्रीका शाप और चीत्कार तो न सुनूँगा, एक युवती पत्नीका हृदय दहलानेवाला विलाप तो कानोंमें न पड़ेगा। इस उद्विग्नतामें रायफ़ल वहीं पटक दी और दुनाली बन्दूक़—जिसे लक्ष्मीदत्तजीने भरा था—उठाकर बाघ और लक्ष्मीदत्तजीके लुढ़कनेकी ओर उतरा। बन्दूक़की नाल खोलकर देखा, तो दोनों नालोंमें ग्राफ़ भरे हुए थे। कारतूसोंको नालोंमें फिर रखकर मैं नीचेकी ओर चला। पन्द्रह-बीस गज़की उतराई उतरकर बकरेवाले मैदानमें आना ही चाहता था कि कोई लम्बी-सी चीज़ पड़ी हुई जान पड़ी। ख़याल हुआ लक्ष्मीदत्तजीका शव होगा। पर नहीं, वह तो बाघ था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैंने समझा राक्षस बाघ लक्ष्मीदत्तजीका काम तमाम करके मरा है। मैं ऐसा सोच ही रहा था कि बाघ एकदम तड़पा, और यदि मैं बन्दूक़की नाल उसके मुँहमें डालकर और दोनों नालोंसे फ़ायर करके उसका मस्तिष्क न उड़ा देता, तो वह एक ही चोटमें मेरा भी काम तमाम कर देता। बाघ तो मर गया, पर मुझे तो लक्ष्मीदत्तजीकी खोज करनी थी। बकरेपर इतना क्रोध आ रहा था कि उसको भी ख़तम कर दूँ। किस मुहूर्तमें उसको लिया, जो ऐसी घटना हुई। खुली जगहके चारों ओर ढूँढा, पर लक्ष्मीदत्त न मिले। हारकर और उत्साहहीन होकर फिर ऊपर—बैठनेकी जगह—पर चढ़ा, और वहाँसे फिर अन्दाज़ लगाकर नीचे उतरा और कुछ ही दूरपर लक्ष्मीदत्तजीको पड़ा पाया। देखकर पहले तो माथा ठनका। हृदयकी गति बढ़ गई। चित्त कहता था कि कहीं जीवित ही न हों। मनुष्य संदिग्धावस्थामें भँवरमें पड़ी हुई लकड़ीके समान होता है, जो कभी उछलती है और कभी डूबती।

साहस करके मैं उनके सिरके पास बैठ गया और हाथ उठाकर नाड़ी देखी। हैं! यह क्या। नाड़ी तो चल रही थी। गति बहुत मन्द थी। मैंने आव गिना न ताव जेबमें से ब्राण्डीकी शीशी निकालकर लक्ष्मीदत्तजीका मुँह खोलकर गलेमें

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक तोलेके लगभग ब्राण्डी उतार दी। मैं न तो मदिराका पियक्कड़ हूँ और न कभी उसे पीता ही हूँ, पर शिकारमें कुछ औषधियाँ साथ रखता हूँ और उनमें से एक ब्राण्डी भी है। ब्राण्डीके पेटमें जाते ही लक्ष्मीदत्तजीने झटसे आँखें खोल दीं और कराहने लगे। मैंने कहा—"तुमसे अधिक बुरी हालत मेरी रह चुकी है—घायल नहीं हुआ, पर मानसिक घायल रह चुका हूँ। कराहो मत। दियासलाई दो। आग जलाऊँ। जाड़ेके मारे हड्डियाँ तक गली जाती हैं। तुम्हारे घाव फिर देखूँगा। बाघ पास ही मरा पड़ा है।"

लक्ष्मी०—"ऐं! मरा पड़ा है!!"

मैं—"हाँ, मरा ही पड़ा है। अन्तमें उसे मेरी भी गोली खानी पड़ी।"

× × × ×

आग जलाई और लक्ष्मीदत्तजीको वहाँपर बड़ी कठिनाईसे सहारा देकर लाया और उनकी चोटकी देख-भाल की। बातें करते-करते और पट्टी बाँधते-बूँधते प्रातःकाल हो गया।

जिस समय बाघ हमारे सम्मुख आ गया था और मैंने फ़ायर किया था, लक्ष्मीदत्तजीने फ़ायर करनेका अवसर न पाकर अपनी खुखरीका वार बाघकी छातीपर किया था। मैंने भी उसी समय फ़ायर किया था और लक्ष्मीदत्तजीके वारके कारण ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरी गोली ठीक निशानेपर नहीं बैठी थी। फिर बाघने एक थाप लक्ष्मीदत्तजीके मारी। पंजेका पूरा आघात उनकी बन्दूक़पर पड़ा था, इसलिए बन्दूक़ मेरे आगे आ गिरी थी। बाघके पंजेके केवल दो नख उनकी भुजापर पड़े थे। वह क़मीज़, स्वेटर कोट, कोट और चेस्टर पहने हुए थे, पर फिर भी बाघके नख कपड़ोंको पार कर गये और उनकी बाँहके पुट्ठोंको कपड़ोंके आवरणसे बाहर निकाल दिया। इस झटकेके मारे लक्ष्मीदत्तजी ऐसे दूर जा गिरे, जैसे कोई खिलाड़ी गेंदको उठाकर फेंक देता है। लक्ष्मीदत्तजीने समझा कि बस अंत आ गया। उन्हें फेंककर बाघ फिर उनके पास गया और उनकी गर्दन पकड़कर भँभोड़ना चाहता था कि लक्ष्मीदत्तजीने अपनी बची-खुची शक्तिको एकत्र करके—एक अन्तिम वार अपनी खुखरीसे किया। बाघ चोट खाकर उछला, गिरा और बेहोश हो गया। उधर लक्ष्मीदत्तजी भी अचेत हो गये।

लक्ष्मीदत्तजीके खुरसटें बहुत थीं। उनकी एक उँगली भी उतर गई थी। आँख और चेहरेपर ऐसे चिह्न हो गये थे, मानो किसीने हंटर मारे हों।

× × × ×

बाँहके घावकी बड़ी चिन्ता थी। बाघके नखकी चोटसे घाव विषैला (Septic) हो जाता है। हम लोगोंने टिहरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आकर किसीसे यह न कहा कि बाघने लक्ष्मीदत्तजीको घायल किया है। वृद्धा माताके प्रेमजन्य कोपका भाजन कौन बनता ? यही कह दिया कि गिरकर चोट आई है और पत्थर चुभ गया है। वृद्धा माता आँखोंसे लाचार हैं, इसलिए उनपर चाल चल गई और टिहरीवालोंको—अपने घनिष्ट मित्रों तकको भी—लक्ष्मीदत्तजीकी रोमांचकारी घटना और हम लोगोंके मौतके मुँहमेंसे जीवित निकल आनेकी बात आज तक नहीं मालूम है। शहरमें तो बस यही ख़बर हुई 'मास्टर साहबने एक और बाघ मारा है', पर मास्टर साहबके व्यथित हृदयको ये लोग क्या समझें कि उनपर बाघके मारनेके समय क्या बीती थी।

लक्ष्मीदत्तजीने दस-बारह दिनकी छुट्टी ली और धीरे-धीरे वे अच्छे हो गये और शीघ्र ही अपने उदरको जंगली मुर्ग़, चकोर और तीतरकी क़ब्र बनाने लगे।

मैंने परब्रह्मको कोटिशः धन्यवाद दिया और अपने भाग्यको सराहा कि उस दिन मेरे साथीकी जान बच गई। मुझे अपना ख़याल न था। यों मरने-जीनेको तो—

"एक जाता है तो आता है जहाँमें दूसरा।
उसकी महफ़िलका कभी ख़ाली मकाँ होता नहीं॥"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कांनेकी खोजमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिहरीसे छै मील दूर, टिहरी-मसूरी-सड़कके दोनों ओर, कई मील तक कानेका आतंक था। दिन हो या रात, सुबह हो या शाम, किसी भी समय, कोई अकेला व्यक्ति जंगलमें—और वहाँ जंगल तो क्या, झाड़ियाँ और पत्थरोंके ढेर और छोटी गुफाएँ ही थीं, जो कि बाघके छिपनेके लिए आदर्श स्थान था—जानेका साहस न करता था। पर, जीवनकी सामग्री जुटाने और क्षुधाकी निवृत्तिके लिए मनुष्य कठिन-से-कठिन काम करनेको उद्यत हो जाता है—मौतसे भी लड़नेको तैयार रहता है—विकट साहस और नीचतम चाटुकारी और कायरता दिखाता है और इसी प्रकार यह संसार-चक्र अनादि कालसे चला आता है। लोग जंगलमें जाते थे। घसियारिनें भी जाती थीं। और काना बाघ अवसर पाकर किसी-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न-किसी अकेली घसियारिनको पकड़कर मार ही डालता था। इस काने बाघको स्त्रियों—अवलाओं-को ही खानेकी, न मालूम, बान क्यों पड़ गयी थी। कारण अनेक बताये जाते थे। पर वे सब अनुमान थे। कदाचित् काने बाघको स्त्रियोंकी कमज़ोरीका कुछ आभास हो गया था। हो गया होगा। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह मारता स्त्रियोंको ही था।

तीसरे-चौथे दिन पहाड़की एक चोटीसे दूसरी चोटी तक यह शब्द सुनाई पड़ता था, "ले गया! ले गया!! काना अमुककी स्त्री, अमुककी बहिन, अथवा लड़कीको ले गया!" लोग हैरान थे। उनकी समझमें न आता था कि उस राक्षस, काने बाघसे कैसे मुक्त हों। क्या जादू-टोना करें, कौनसे देवी-देवता मनावें, जो कानेसे पिण्ड छूटे। दो-चार बार कानेपर फ़ायर भी किये गये। उसके गोलियाँ भी लगीं, पर उनसे उसका कुछ न हुआ। भोले-भाले देहाती ख़याल करने लगे कि बाघके रूपमें कोई प्रेत है और उसका मारना असम्भव है। गोली उसके लगकर पानी हो जाती है; वह कभी-कभी मनुष्यका रूप भी धारण कर लेता है—ऐसी बातें सड़कके चारों ओर फैली हुई थीं। स्त्रियाँ अपनी मौतकी घड़ियाँ गिन रही थीं। न मालूम किस दिन कौन-सी स्त्री कानेका शिकार हो जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब कोई स्त्री मारी जाती थी तब दो-चार दिनके लिए स्त्रियाँ जंगलमें घास और लकड़ीके लिए नहीं जाती थीं। पर पहाड़पर जंगलसे घास और लकड़ी लानेका काम प्रायः स्त्रियाँ ही करती हैं, स्त्रियाँ ही खेतीमें हाथ बँटाती हैं। स्त्रियोंके बिना खेतीका तो बण्टाढार ही हो जाय। फिर यह कैसे हो सकता था कि स्त्रियाँ घास लाना छोड़ दें? मजबूरी थी। जीवनका प्रश्न था। कहते हैं गान्धारी तकने घोर विपत्तिमें, उदर-पूर्तिके लिए, अपने प्रिय पुत्रोंकी लाशोंपर चढ़कर, बेर तोड़नेका प्रयत्न किया था; फिर बेचारी गाँवकी स्त्रियाँ अपने पशुओंके लिए घास कैसे न लातीं? हार मानकर चार-चार पाँच-पाँचकी टोलीमें जाती थीं। पर, काना अवसर पाकर छापा मारता ही था।

× × ×

जिस प्रकार नौकरीकी ख़बर पाकर बाबू लोग दौड़ पड़ते हैं और अपनी योग्यताके सर्टीफ़िकट दिखाते फिरते हैं उसी प्रकार कानेके मारनेके लिए चारों ओरके शिकारियों—पहाड़की गाँवकी भाषामें तोपचियोंका ताँता-सा पुर गया। कोई कहता था कि मैंने अमुक स्थानपर बैलके बराबर बाघ मारा था। यह काना तो कोई चीज़ नहीं। पर कोई भी शिकारी जंगलमें घुसता न था और न रात्रिके समय उचित स्थानपर उसकी घातमें ही बैठता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाघका उत्पात-क्षेत्र धीरे-धीरे ऐसा बढ़ने लगा, जैसे शान्त जलाशयमें फेंके हुए पत्थरसे उत्पन्न गोलाकार लहरें धीरे-धीरे बढ़ती जाती हैं। काने बाघने एक दिन, दिनके ग्यारह बजे टिहरीके समीप ही एक स्त्रीको पकड़ लिया। क्या बाघका आना समीप आ रहा था अथवा प्रेत-रूप काना बाघ भागीरथीकी गोदमें बसी हुई टिहरीपर धावा करना चाहता था?

× × × ×

हम लोगोंसे भी कहा गया कि काने बाघको मारनेका प्रयत्न कीजिये। प्रयत्न तो करते, पर बाघके स्वभावसे परिचित थे और जानते थे कि आदमख़ोर बाघके मारनेके लिए शिकारीको एकाग्र चित्त होकर, उसकी मारके इलाक़ेमें जाकर, डेरा डाल देना चाहिए। हम लोगोंके पास समय न था। दसवीं कक्षाके विद्यार्थियोंकी परीक्षा समीप थी। जानेसे उनकी पढ़ाईका नुक़सान होता। इसलिए, हम न गये।

होते-होते दो दिनोंकी छुट्टी आई। बन्दूकें लेकर हम लोग चल दिये। मेरे साथ पं० लक्ष्मीदत्त, भूपालसिंह ड्रिल मास्टर और बाबू यमुनास्वरूपजी—मिर्ज़ाजी—थे। भूपालसिंह पुराने पापी थे। उन्होंने बाघ और भालुओंमें ही जीवन बिताया था। हम त्रिमूर्ति शिकारको निकले थे। पर मिर्ज़ा साहब तमाशबीनोंमें थे। मिर्ज़ा हास्यरसके अवतार हैं और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नामी गवैये। हाज़िर-जवाबी आपकी कमाल की है और तन्दुरुस्ती माशा अल्लाह! चलता-फिरता अस्थिपिंजर हैं। जंगलमें यदि एक बार बाघ आपको देखले तो यही ख़याल करेगा कि कोई मुर्दा क़ब्रिस्तानसे उठकर आया है। मिर्जा भावुक भी बहुत हैं। बातके ऊपर क़ुर्बान होनेवाले आदमी हैं। कह दो कि दोस्तोंकी भलाई इसमें है कि बाघके कान पकड़ लो। फिर मिर्ज़ा चूकनेवाले नहीं, चाहे बाघ उनकी बोटी-बोटी उड़ा दे। मेरे प्रति उनकी बड़ी श्रद्धा है। हृदयसे इज्ज़त करते हैं। रहनुमा समझते हैं। फिर यह कैसे हो सकता था कि मैं मिर्ज़ाकी इच्छाकी अवहेलना करता। ख़याल किया जंगलमें साथ न लेंगे, पर मार्गमें चहल-पहल रहेगी। लक्ष्मीदत्तजीकी बोलती बन्द रहेगी।

× × × ×

टिहरीसे छै-सात मील दूर पहुँचना था। पाँच मीलकी चढ़ाई थी। हम लोगोंके पास बन्दूकें थीं, और मिर्ज़ाजीके पास असा (लठिया)। पूछा—"हज़रत, शिकारमें लाठीका क्या काम?" उत्तर मिला—"पेटमें क़ब्ज़ रहता है। रेचक औषधिसे काम नहीं चलता। बाघका दर्शन क़ब्ज़कुशा होता है। इसलिए दर्शन करके इसके सहारे बैठ जायँगे।"

थोड़ी दूर चलकर लक्ष्मीदत्तजीने कहा—"मिर्ज़ाजी!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपको तो कोई चिन्ता भी नहीं; फिर सूखते क्यों जाते हो ?" मिर्ज़ा बोले :—

"कबाबे सीख़ हैं हम करवटें हरसू बदलते हैं,
जो जल उठता है यह पहलू तो वह पहलू बदलते हैं।"

इस प्रकार आमोद-प्रमोदमें डावरी नामक गाँवमें पहुँचे। थकावटसे मिर्ज़ाका बुरा हाल था। चारपाईकी शरण ले ली। हम लोगोंने गाँवके इधर-उधर स्थान देखा। छै-सात दिन पहले कानेने इस गाँवपर छापा मारा था। अब फिर कहीं यहींसे मानवी 'चौथ' वसूल न करे—इसी ख़यालसे लोग सतर्क थे, और हमारे आगमनसे वे इतने प्रसन्न हुए, मानो डूबते हुएको कुछ सहारा मिल गया हो। बड़ी कातरतासे, दयनीय मुखाकृतिसे, प्रत्येक अंगसे धन्यवादका भाव चू रहा था। जब अन्धेरा होने लगा तब हम लोग ठहरनेके स्थानपर लौट आये, और खाना खाकर, मिर्ज़ाको मकानपर छोड़कर हम तीनों अलग-अलग, गाँवके तीन भागोंपर छिपकर बैठ गए। गाँव-वालोंने समझा कि आज तो सुखकी नींद सो लें। स्त्रियोंका ख़याल था कि आज वे बेधड़क रात बितावेंगीं। एक प्रकारसे वे चाहती थीं कि काना आज आवे। तीन तोपची (शिकारी) सन्तरी बने उनके गाँवको रखा रहे थे। फिर उस मोर्चेसे काना कैसे निकल जायगा ? चक्रव्यूहमें पड़कर फिर भला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निकलना कैसा! अभिमन्यु तकको तो अपनी जानसे हाथ धोने पड़े थे। आशा—बलवती आशा—और भयका अभाव मनुष्यको न मालूम कैसे-कैसे सुख-स्वप्न दिखाता है। भविष्यका सुख और हौसले एक आशाके कच्चे धागेसे बँधे रहते हैं, और मनुष्य इसी आशाके सहारे व्योममें, एक विचित्र प्राणीकी भाँति अन्धाधुन्ध गतिसे उड़ा करता है। कल्पना-शक्तिके अनन्त सागरमें ग़ोते लगाता है—और कौन? थोड़ा बहुत सब—पर, विशेषकर वे जिनका साथ दरिद्रनारायण नहीं छोड़ते—और गाँववाले? गाँववाले तो तनिकसे सहारेसे अपनेको भूल जाते हैं। समझने लगते हैं कि बस मुरादें पूरी हो आईं। गान्धीका राज्य होगा तो लगान न देना पड़ेगा। भैंसें रखूँगा। पुलीसको सींग दिखाऊँगा। और अपने मुनुआका विवाह ऐसे ठाटसे करूँगा, जैसा गाँवमें किसीने न किया हो—इस मनोवृत्तिका पता उन लोगोंको है जिनका वास्ता गाँववालोंसे है, और जो शहरी नहीं बन चुके हैं।

डावरी गाँववालोंकी भी यही दशा थी। तीन शिकारी और तीन बन्दूक़ें जिनकी छै नालें। इन छै नालों—छै कारतूसोंसे—काना कैसे निकल सकता है। आज बच्चू आ जाय, तब मालूम होगा उसे दाल-आटेका भाव। ऐसी सुखमय भावनाओंके साथ गाँवके आदमी अपने-अपने घरोंमें सो रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम लोग टकटकी लगाये, अपने छिपे स्थानसे, देखते रहे। गाय-बैलकी-जुगालीका अनुमान और उनके गलोंमें बँधे घंटोंका स्वर सुनाई पड़ता था। जंगलमें कीड़े-मकोड़ोंकी साधारण ध्वनि थी। कभी-कभी नाइटजार (Night Jar)—एक पक्षी—की टक-टककी आवाज़ आ जाती थी—इनके अतिरिक्त और कुछ सुनाई न पड़ता था! घोर-रात्रिका-सा दृश्य था। ऊपर, आकाशमें झिलमिलाते तारागण मानो मानवी कमज़ोरीपर मूक हँसी हँस रहे थे। उस घोर नीरवतामें, मैं सिमटा-सिकुड़ा, कानेकी प्रतीक्षामें था। प्रतीक्षा करते-करते आँखें पथरा गईं। सुबह होने आई। बिरहिन-दुखदायी चन्द्रमाने भी अपना रास्ता नापा। ऊषाकाल आया। मुर्गा बाँग देने लगा। लोग घरोंसे बाहर अपने पशुओंको बाँधने लगे। चक्कीकी घर-घर और दही बिलोनेकी घम्मर-घम्मर ध्वनि कानोंको भली मालूम हुई। मकानपर होता तो मिर्ज़ासे भैरवीकी मीठी तान सुनता। पर बिलोनेकी घम्मर-घम्मर भैरवीसे कौन कम सुखदायी थी!

× × × ×

शौचादिसे निवृत्त होकर हम लोग चाय पी रहे थे और बाघकी बातें कर रहे थे। एक बूढ़ा बोला—

"क्या करना महाराज! यह काना बड़ा तस्कर है। बोग्सा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(प्रेत, जो मनमानी योनि जब चाहे तब बदल लेता है) है। वह कभी मरेगा थोड़े ही।"

दूसरा आदमी—"उसका तो बाप मर जाता। आवे नहीं तो उसका क्या इलाज ?"

तीसरा—(गाली देकर) "…………आवेगा कैसे नहीं ? चार पाँच दिन ठहरें तो ज़रूर हाथ आ जायगा।"

मैं—"हाँ, लगभग दस बारह दिन उसके पीछे पड़ जायँ तो उसके मारे जानेकी संभावना है। जंगलमें एक कटहरेमें स्त्रीके कपड़े पहनकर किसी शिकारीको बैठना चाहिए। कटहरा दो भागोंमें विभक्त हो। एकमें तो आदमी सुरक्षित हो और दूसरा भाग खुला हो, ताकि बाघके पैर रखते ही दरवाज़ा बन्द हो जाय।"

मिर्ज़ा—"और शिकारी अपने शरीरसे एक कमोड भी बाँध ले जाय जिससे बाघको देखकर यदि…………हो तो कपड़े ख़राब न हों।" मिर्ज़ाकी बात सुनकर हँसीके मारे पेटमें बल पड़ गये।

सिगरेट-तम्बाकू पीनेके उपरान्त यह निश्चय हुआ कि खाना खाकर दोपहरको जंगलमें कानेको छलनेका कुछ प्रबन्ध करेंगे। अलावसे हम सब लोग उठना ही चाहते थे—दो-चार तो अँगड़ाई ले चुके थे कि गाँवके एक कोनेसे शोर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुलकी आवाज़ आई। शोरगुल विपत्तिसूचक था। सब लोग उधर ही को दौड़े गये। जाकर देखा तो दो नन्हें-नन्हें बच्चे जिनकी आयु चार और तीन वर्षकी होगी डबडबाती हुई आँखों—जिनसे आँसू धीरे-धीरे बहकर गालोंपर आ गये थे, और आँसुओंकी धारा स्पष्ट दिखाई पड़ती थी—और कातर-दृष्टिसे विलाप कर रहे थे—"बई (मा) तू कख (कहाँ) गई। ऐ माँ, माँ, माँ, सुनती नहीं। भूक लगी है। दूध आकर दे जा माँ। आती क्यों नहीं। ऊँ। आ जा। आ मा।"

देखकर माथा ठनक गया; करुणा रस—बच्चोंकी पवित्र भोली बोली—ने हृदय पिघला दिया। आगे जो देखा, तो होश उड़ गये। ख़ूनकी धार और घसीटन दिखाई पड़ी। उफ़! काना बाघ रात्रिको आया और उन दो बच्चोंकी माँको, जो कदाचित् रात्रिमें पेशाब करने निकली होगी, पकड़ ले गया। गाँवके जिस ओर हमें कोई भय नहीं था, उसी ओरसे बाघ आया था।

उस दिनकी घटनासे गाँववालोंको पूरा विश्वास हो गया कि काना बाघ योनिमें कोई विकट प्रेत है। मैंने उन्हें बहुत धैर्य बँधाया, पर जिसपर बीतती है, वही जानता है।

इसी गाँवसे एक मासके भीतर चार स्त्रियाँ मारी जा चुकी हैं। हिन्दुस्तानी किसान मौत और विपत्तिको अटूट साहससे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहते हैं। मौत, रोग और अत्याचार उनके लिए साधारण-सी बात हो गये हैं। आये दिनकी रस्में हैं, जो अदा करनी पड़ती हैं।

× × × ×

हमने बहुत प्रयत्न किया कि लोग हमारे साथ जंगलको चलें और कानेकी खोज करें; पर एक भी आदमी जानेको तैयार न हुआ। "क्या होगा महाराज? बाघको कोई मार नहीं सकता। हमारे भाग्यमें बदा है, सो हो गया।"

इस मूढ़ताकी भी कोई सीमा थी। मनुष्य और पशुमें विभाजक बुद्धि ही तो है। इस जड़तासे लाभ अनेक हैं, पर जड़ताका दंड भी विकट है।

× × × ×

हम गाँववालोंको मूर्ख समझते थे और गाँववाले हमें पागल। अन्तमें, हम लोग बिना किसीकी सहायताके ही टिहरी-मसूरी सड़ककी ओर चल दिये। साथमें मिर्ज़ाजी भी पूँछके समान थे। यदि गाँववाले साथ देते और उस आसपासके जंगलकी चाड़ (खेदा) की जाती, तो सम्भव था काना बाघ मिल जाता।

हम लोग बाघकी खोजमें चले। एक मीलपर जाकर उस स्त्रीकी खाई हुई लाश मिली। बाघ आस-पास एक मीलकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिधिमें होगा, पर बिना बहुतसे आदमियोंके उसका पता चलना कठिन था। लाशपर रातको बैठना फ़ज़ूल था, क्योंकि मनुष्यभक्षी बाघ लाशपर दुबारा नहीं आता।

ऊबड़-खाबड़ मार्ग पार करते हुए हम लोग जौलंगी गाँवमें पहुँचे। वहाँसे सड़ककी ओरको उतार लगता है। रास्तेमें चकोर और तीतर मिलनेकी सम्भावना थी। बाघका तो कोई मौक़ा न था, इसलिए लक्ष्मीदत्त और भूपालसिंह अलग-अलग हो गये कि कहीं चकोर ही हाथ लग जायँ और हाँड़ी गरम हो। मिर्ज़ा और मैं रास्तेपर ही चलने लगे। मैंने चिड़ियोंका मारना कुछ छोड़-सा दिया था, पर रास्तेमें मेरी बन्दूक़ अनायास चल गई। बन्दूक़ बिना घोड़ेवाली थी; उसका Safetycatch ढीला हो गया था। उँगलीसे वह हट गया और नीचेका घोड़ा दब गया। धाँयसे शब्द हुआ और मेरा पैर एक इंचसे बचा। बचनेका कारण यह हुआ कि बन्दूक़ ले चलनेके नियमको मैं ख़ूब निभाता हूँ। बन्दूक़ चाहे ख़ाली हो या भरी, उसकी नाल चलते समय हमेशा ऊपर आसमानकी ओर या नीचे पृथ्वीकी ओर रखना चाहिए, इसलिए बन्दूक़से स्लिग (Sling) लगा रखना चाहिए।

× × × ×

सड़कपर आकर हम लोग पीपलके नीचे बैठे और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मीदत्तजीने चकोरोंके पंख नोचे और साफ़ करके झोलेमें रख लिया। खानेकी कोई चीज़ मिल जाय, बस, पेटू शिकारियोंकी शिकार-यात्रा सफल समझनी चाहिए।

× × × ×

सायंकालको हम लोग अपना-सा मुँह लेकर घर आ गये। शिकारीको सर्वदा सफलता नहीं मिलती। बाघ और भालू रास्तेमें बैठे नहीं मिलते और मिलनेपर भी हाथ नहीं लगते और यदि कहीं शिकारीकी मनकी-सी हो जाय, तो फिर क्या कहना।

"तुपकदार और बाज़की, मनचीती जो होय।
कबिरा या संसारमें, साबित बचे न कोय॥"

× × × ×

अन्तमें, पन्द्रह-बीस दिन उपरान्त, वह काना बाघ मारा गया और बुरी तरह—कुत्तेकी मौत—मरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कानेका अन्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कानेकी खोजके पाँच-छै दिन पीछे, घरसे स्कूल जाते समय, टिहरीकी एकमात्र शान, घंटा-घरके समीप, सड़ककी दूसरी ओर सैपर्स (Sappers) अहातेकी दीवारसे सटी हुई और चिथड़ोंसे ढकी हुई कोई चीज़ दिखाई पड़ी। ख़याल किया कोई भूखा भिखारी होगा और, रात-भर सर्दीमें अकड़कर, अब दिन चढ़े, चढ़ते हुए सूर्यकी सुखदायिनी किरणोंकी गर्मीसे आराम पाकर, निर्द्वन्द्व होकर सो रहा है। उसके पासमें एक इकतारा भी रखा था? और भी कोई चीज़ रही होगी; पर चलती नज़रमें और कुछ न तो दिखाई दिया, और, न कुछ और देखनेकी चेष्टा की। चेष्टा भी क्यों करता? भारतवर्षमें जिधर देखो, उधर ही सैकड़ों भिखमंगे दिखाई पड़ते हैं। उस चिथड़ेके ढेरमें कोई विशेष बात न थी, जो ध्यान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आकर्षित करती। भूखे लोगों, अनाथ बच्चों और पीड़ित किसानोंके दृश्य देखते-देखते हृदयमें कुछ कठोरता-सी आ गई थी, इसलिए उस ढेरसे ढके व्यक्तिको साधारण-सी बात समझकर मैं, लपकता हुआ, स्कूल पहुँचा। स्कूलमें प्रतिदिनकी-सी वही चख़-चख़ थी। हाई स्कूलकी पढ़ाईका पैमाना यूनीवर्सिटी अथवा बोर्डकी परीक्षा-फल है। लड़केका चरित्र और संसार-सागरको पार करनेकी शक्तिका मटियामेट हो जाय; विद्यार्थी चाहे शरीरसे दिवालिया हो जाय, आँखें भीतर घुसकर, कपोल सूखकर और नेत्र तेजहीन होकर उसको खूसट-सा बना दें, पर परीक्षामें वह प्रथम और द्वितीय अवश्य रहे। डिग्री या डिप्लोमा एक प्रकारका टिकट या पासपोर्ट है, योग्यताका सूचक नहीं। वह शिक्षा-प्रणाली, जिससे पढ़नेवालेकी शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति न हो—अनुचित ही नहीं, वरन दूषित भी है। किसीने षड्दर्शन घोक लिये, वेदोंका पारायण कर लिया और चलता-फिरता पुस्तकालय बन गया—उससे उसका अपना और संसारका क्या लाभ? उपनिषदमें नचकेताकी कथा पढ़कर जिसने जीवन-मरणके मूल तत्त्वको न समझा और समझकर अपनी शक्ति-भर उसपर अमल न किया, तो उपनिषद-पाठसे क्या लाभ? गीता पढ़कर जो मरने-मारनेसे डरे, वह ढोंगी है, बगला भगत है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्कूल बन्द हुआ और मैं यह सोचता हुआ चला जा रहा था कि आख़िर ये विद्यार्थी अपनी रोज़ी कैसे पैदा करेंगे ?

कविवर 'हाली' ने ठीक ही लिखा है :—

"न पढ़ते तो सौ तरह खाते कमाकर,
वह खोये गये और तालीम पाकर।
न जंगलमें रेवड़ चरानेके क़ाबिल ;
न बाज़ारमें बोझ ढोनेके क़ाबिल।"

इसी उधेड़-बुनमें घंटा-घर आ गया और वहाँपर जो समाँ था, उसका क्या कहना! भीड़के ठट्ट-के-ठट्ट लगे हुए थे। उसमें अधिकांश विद्यार्थी ही थे। मुझे देखकर वे काईकी भाँति फट गये और मार्ग साफ़ कर दिया। क्यों न करते ? विद्यार्थियोंके लिए तो हेड मास्टर—और विशेषकर लोकप्रिय हेड मास्टर—ही बड़ा अफ़सर है। चपरासीको काग़ज़ात लेकर घर जानेको कहा और मैं स्वयं खड़े होकर देखने और सुनने लगा। प्रातःकालवाले चिथड़ोंमें से उठकर एक काली-कलूटी बुढ़िया इकतारापर तल्लीन होकर हाथ चलाती हुई गा रही थी। उसे अपने चारों ओरवाली भीड़का कुछ पता न था। बेहोशीमें चेतना नहीं रहती। फिर उस बुढ़ियाका साक़ी, पल-पलपर, वेदान्त-मदिराके प्याले दे रहा था। उस कालिका माईका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वर पंचममें पहुँचकर तो ग़ज़ब ही कर देता था। आँखें मूँदकर वह कबीरका यह पद गाती थी :—

मेरे गुरुने मँगायो वेदन भेद।
पहली भिक्षा अन्नकी लाना ;
गाँव नगरिया पास न जाना ;
हिन्दू तुर्की छोड़के लाना ;
लाना झोली भरके। मेरे गुरु०
दूजी भिक्षा मांसकी लाना ;
जीव जन्तुके पास न जाना।
जिन्दा मुर्दा छोड़के लाना ;
लाना हाँडी भरके। मेरे गुरु०
तीजी भिक्षा जलकी लाना ;
कुआँ बावरी पास न जाना।
ताल तलैया छोड़के लाना ;
लाना तूँबी भरके। मेरे गुरु०
चौथी भिक्षा लकड़ी लाना ;
रूख वृक्षके पास न जाना।
गीली सूखी छोड़के लाना ;
लाना गट्ठर भरके। मेरे गुरु०
कहत कबीर सुनो भाई साधो ;
यह पद है निर्वाना !
जो इस पदका अर्थ लगावे ;
वो ही चतुर सुजाना। मेरे गुरु०

इस निर्वाण-पदका अर्थ लगाना वास्तवमें कठिन था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अर्थ तो भला-बुरा जैसा समझमें आया, लगा लिया; पर उससे चतुर-सुजान नहीं हुआ, क्योंकि उस अर्थपर अमल करनेसे ही चतुर सुजान हो सकता था; लेकिन वह बुढ़िया तो हाव-भावसे उस अर्थमें पगी जान पड़ती थी।

× × × ×

बिजली काँसेपर ही पड़ा करती है, सूखे ठूँठपर नहीं। कबीरके मार्मिक गीतका प्रभाव उन्हींपर पड़ा, जिनके हृदय शुष्क नहीं हो गये थे; पर कितनी देरके लिए? कुछ ही देरके लिए; और फिर वही नोन-तेल-लकड़ीके अध्यायकी कथा प्रारम्भ हो गई। बुढ़िया शहर-भरमें अपनी इच्छानुसार सूरदास और कबीरदासके पद गाती थी; पर किसीसे बोलती न थी। किसीने उसको भोजन करते न देखा, और उसके इस प्रकारके व्यवहारसे लोगोंको बड़ा सन्देह होने लगा। मनकी सशंकितावस्थामें तिलका ताड़ बना दिया जाता है, और मनुष्य अपनी रुचिके अनुसार विचित्र चित्र खींचा करता है। लोगोंको बुढ़ियामें कोई प्रलयकारी प्रेत दिखाई पड़ने लगा। "हो न हो यह काली-कालूटी बुढ़िया डंकिनी या चुड़ैल है, जो बाघका रूप धारण करके स्त्रियोंको खाया करती है। रातके ठीक बारह बजे मैंने उसको बाघ बनते देखा है, और मैं किवाड़ बन्द न कर लेता, तो वह मुझे खा ही जाती"—ऐसी बातें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिहरीवालोंमें गुप-चुप होने लगीं, पर वह कालिका माई अपनी धुनमें मस्त थी। जनताकी राय बवंडरकी गतिके समान होती है और उसकी छूत विशूचिकासे भी अधिक भयानक। अभी पाँच-छै दिन पहले लोग बुढ़ियाको दाद देते थे, और आज उसको कोसते हैं, और चाहते हैं कि ख़ूँख्वार बुढ़िया उनके नगरसे कैसे टले; पर उसे निकालते तो कैसे निकालते। हाँ, उसको कोसकर अपने दिलके ग़ुबार ज़रूर निकालते थे।

× × × ×

बुढ़ियाके आनेके आठ-दस दिन पीछे नगरमें ख़बर फैल गई कि बुढ़िया कहीं चली गई, पर अगले ही दिन मालूम हुआ कि बुढ़िया अपनी उचंगमें टिहरी-मसूरी सड़कपर रातमें चल दी थी, और टिहरीसे पाँच-छै मीलपर कानेका शिकार हुई। बुढ़ियाकी मौतसे लोगोंको विश्वास हुआ कि वह काली-कलूटी बुढ़िया डंकिनी या चुड़ैल न थी, वरन एक पहुँची हुई विरक्ता—जिसका उन्हें मान करना चाहिए था।

यह संसार बहुतसे भले आदमियोंकी क़दर उनके मरनेके बाद करता है। सुक़रात-जैसोंको ज़हर पीना पड़ा। ईसाको शूलीपर लटकाया गया। दयानन्दपर पत्थर बरसाये गये, पर उनका आदर उनके मरनेके उपरान्त हुआ।

× × × ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर, मौत—जीवनकी एक आवश्यक अवस्था—कभी-कभी व्यक्तिविशेषको विशेष कार्यका कारण बनाती है। उस बुढ़ियाकी मौतसे एक ग्रामीण नवयुवकपर वज्रपात हुआ। वह बुढ़ियाका भक्त था। उसने उस काली माईके रूपमें कृष्ण भगवानको समझा था और सब धर्मोंको छोड़कर वह बुढ़ियाकी शरणमें आ चुका था। वह बुढ़ियाका बदला लेनेपर उतारू था। उसके रक्तवर्ण नेत्र, दीर्घकाय शरीर और क्रोधित आकृतिसे प्रतीत होता था, मानो वह किसीकी जान लेने या अपनी जान देनेको तैयार है। प्रातःकालसे रात्रिके आठ-नौ बजे तक वह युवक बाघकी मारके क्षेत्रमें हरकारेकी भाँति घूमा करता था। उसके हाथमें बन्दूक़ या तलवार न थी, वरन एक खुखरी। वह अपनी रक्त-पिपासु खुखरीको बाघके ताज़े ख़ूनसे तृप्त करना चाहता था। वह बहुत घूमा, पर कानेसे उसकी मुठभेड़ न हुई, और यदि हो भी जाती, तो क्या उस खुखरीसे कानेका मारना सम्भव था? क्या टिटहरी समुद्रको सुखा सकती थी? अन्तमें, हार मानकर, खुले मैदानमें बाघका मुक़ाबिला सम्भव न समझकर उसे छल-कपटसे काम लेना पड़ा। उस युवककी समझमें आ गया कि घूँसेमें विश्वास करनेवाला घूँसेसे ही मानता है। अफ़रीदी और महसूद लोग गान्धीके आत्मबलको क्या समझें? उस

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुद्ध पवित्र युवकको भान हो गया कि पश्चिमी सरहदपर आँखें बन्द करके कोई ईश्वराराधनमें बैठे, तो ख़ूँख़्वार पठान उसकी गर्दन काट डालेंगे। धूर्तों और शैतानोंसे छल और प्रपंच ही से काम चलता है। तोपका मुक़ाबिला लाठी नहीं कर सकती। मुग़लोंका मुक़ाबिला राजपूत अपनी शुद्ध पवित्र राजपूत-नीतिसे न कर पाये। मर जायँगे, पर पीठ न दिखायँगे—इस नीतिने एक-एक राजपूत-राज्यको बीन लिया! राजपूतोंकी वीरताके सम्मुख मुग़लोंकी वीरता तुच्छ थी, पर मरहठोंने मुग़लोंका मान मर्दन किया। शिवाजीने अफ़ज़लका ख़ून किया—कोई राजपूत ऐसा न कर सकता था। उस युवकको विश्वास हो गया कि आसुरी माया तुच्छ है। वह पतनकी ओर ले जानेवाली है; सत्यकी रक्षाके लिए, सिद्धान्तकी पुष्टिके लिए, अहिंसाकी ख़ातिर और आत्मिक-बलकी स्थापनाके लिए कभी-कभी हिंसा करनी पड़ती है—छल-प्रपंचका सहारा लेना पड़ता है। और इसलिए, उसने कानेपर कपटसे वार करनेका निश्चय किया।

वह अब खुले जंगलमें बाघका आह्वान न करता था, वरन घनी झाड़ियोंमें छिपकर, बैठके बकरा बाँधा करता। पर, फिर भी बाघ न आया। एक दिन वह एक कुत्तेको बाँधकर बाघकी प्रतीक्षामें बैठा। काना आया, और झपट्टा मारकर कुत्ता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ले गया। युवक देखता ही रह गया। वह बड़ा खिसियाया। तब उसको बन्दूक़की खोज करनी पड़ी। कारतूसी बन्दूक़का पाना उसके लिए कठिन था; इसलिए, टोपीदार बन्दूक़पर ही सन्तोष किया। उसने ख़याल किया कि उसकी मनोकामना पूरी हुई। पर, बन्दूक़ बाँधनेसे ही कोई शिकारी नहीं हो जाता—जैसे अनेक पुस्तकोंके रखनेसे कोई पंडित नहीं बन सकता। उस युवकको अनुभवी शिकारियोंकी सम्मति लेनी पड़ी। बड़े सोच-विचारके उपरान्त यह निश्चय हुआ कि कानेको ठगना चाहिए। बिना प्रपंचके काम न चलेगा। इसलिए, ऊदकोट पट्टीके नैल गाँवसे लगभग एक मीलकी दूरीपर, खाले पार, जंगलवाले मकानकी तजवीज़ की गई। काने बाघके आतंकसे यह मकान ख़ाली कर दिया गया था। मकान-मालिक उस मकानके किवाड़ तक उतार ले गया था। किवाड़ उसमें फिर लगवाये गये। एक किवाड़को बन्द करके उसके पीछे, ज़मीनमें, एक मोटी मेख़, किवाड़से सटाकर ऐसे ठोक दी गई कि धक्का मारनेसे भी किवाड़ न हिलता था। दूसरे कुंडीवाले किवाड़में एक मज़बूत और लम्बी कुंडी लगा दी गई—इतनी लम्बी कि किवाड़से दस गज़की दूरीसे वह खींची जा सके और कुंडी एक लोहेकी गहरी गड़ी सलाख़में डाल दी जाय। एक छोटी साधारण कुंडी पहलेसे ही किवाड़में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी। गोया यह दुहरे ताले (Double locks) का प्रबन्ध था। बड़ी कुंडीका सिरा घास-फूससे आच्छादित कूड़े-कर्कटके पास रखा गया। उसी कूड़े-कर्कटके ढेरमें दो आदमियोंके बैठनेका स्थान बनाया गया। मकानके भीतर स्त्रीकी एक प्रतिमा बनाई गई। उसको एक स्वच्छ चादर पहनाई गई और पहाड़ी ढंगका लहँगा। प्रतिमाका एक हाथ चक्कीपर रख दिया गया और दूसरा नाजके भरे टोकनेमें। बाहरसे देखनेसे प्रतीत होता था कि कोई ग्रामीण रूप-गर्विता अपने पतिके लिए बड़े प्रेमसे आटा पीसने बैठी हो। मकानमें दो-चार बकरियाँ भी बाँध दीं, जिससे बाघ धोका न समझे और यह समझे कि मकानमें मकानवाले और उनके पशु भी हैं।

कई दिनकी तैयारियोंके बाद वह युवक ख़ूनी आकृतिसे एक शिकारीके साथ उस कूड़ेके ढेरमें बैठा। चाँदनी रात थी। इसलिए, हर एक चीज़ साफ़-साफ़ दिखाई देती थी। बकरियोंने सायंकालसे ही मिमियाना प्रारम्भ कर दिया। किसी भी बाघके लिए यह निमंत्रण था। पर, आदमख़ोर बाघ तो मनुष्यके मिष्ट मांसका पारखी होता है। युवक और उसका साथी चौकन्ने बैठे थे और ईश्वरको मना रहे थे कि भगवन्! बहुत तपस्या हो ली, अब तो कृपा करो और शत्रुसे बदला लेनेका अवसर दो। उनकी प्रार्थना मानो उस दिन बहरे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भगवानने सुन ली। अपना गश्त करते हुए काने साहब उस मकानके पास होकर आधी रातके समय निकले। बकरियोंकी गन्धसे वह इस प्रकार उस ओर आया, जैसे गुबरीला गोबर या मैलेकी गन्धसे खिंच आता है। अथवा जगतके प्रतिपालककी प्रेरणासे, भावीके भँवरमें विलीयमान होनेके लिए काना बाघ उस मकानकी ओर आया। मकानके समीप आकर वह लुका और गर्दन उठाकर मकानके भीतर दृष्टि डाली। देखते ही मुँहमें पानी आ गया होगा। इधर-उधर देखकर, वह पंजोंके बल, चुपचाप दरवाज़े तक पहुँचा और उचककर भीतर घुस गया। उसका भीतर घुसना था कि धड़ामसे किवाड़ बन्द हो गया। बड़ी कुंडी वहीं लगा दी गई और शीघ्र ही कूड़े-कर्कटमें से वह युवक खुखरी लिये बाहर निकला और दूसरी छोटी कुंडी भी लगा दी। साथ ही उसमें ताला भी ठोंक दिया गया। काना भीतर गुर्रा रहा था और बाहर दो व्यक्ति उसे मन भरके गालियाँ दे रहे थे। ताला लगाकर वे दोनों शेष रात जागते रहे। खुखरी और टोपीदार बन्दूक़ तैयार थी, पर काना थोड़ी देर बाद गुम-सुम हो गया। प्रातःकाल होते ही चारों ओर गाँवोंमें कानेके क़ैद किये जानेकी ख़बर बात-की-बातमें फैल गई। लोगोंकी भीड़का समुद्र-सा उमड़ आया। बड़े और बूढ़े, जवान और लड़के, वृद्धा और अधेड़ और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युवतियाँ—सभी आईं, और आईं वे नन्हीं बच्चियाँ भी, जिनकी माताओंको उस कानेने खाया था। मकानमें एक दरार की गई और उसमें से दर्शकोंने कानेसे साक्षात किया। कोनेमें सिमटा-सुकड़ा वह कितना छोटा प्रतीत होता था! चार दिन तक कानेकी नुमाइश रही, और पाँचवें दिन, उसी छेदसे, उसी युवकने, टोपीदार बन्दूक़से उसकी समाप्ति की। इस प्रकार काना मरा और कुत्तेकी मौत मरा!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बंडा और वाद-विवाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सावनका महीना था। कई दिनके बाद बादल फटा था, और सूर्यकी प्रचंड किरणें आँखोंको चौंधिया रही थीं। आकाशमें बादलके टुकड़े, व्यथित-से होकर, इधर-उधर ऐसे दौड़ रहे थे, मानो पराजित सेना शत्रुके आक्रमणसे भयभीत होकर जीवन-रक्षाके लिए अन्धाधुन्ध भागी जा रही हो। पर, वे अव्यवस्थित रुईके गाले अपनी पतितावस्थामें भी इतनी शक्ति रखते थे कि सूर्यकी प्रखर रश्मियोंको तेजहीन करके, उनके ऊपर एक पर्दा-सा डाल, खेतोंमें काम करनेवालों, यात्रियों और खेतोंपर से रोटी देकर लौटती हुई स्त्रियोंके गोदवाले बच्चोंके श्रमकण-जन्य कष्टको कुछ हलका करते थे। बड़ी उमस थी, और बेचैनीके कारण पक्षी तक दुखी थे। पेड़ोंपर मोर और कौए मुँह बाये हाँफ रहे थे। बबूलके वृक्षोंपर झिल्लियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगातार इन्द्र-अनुष्ठान-गान-सा कर रही थीं। ऐसे ही समयमें, भूड़ों (रेतके बड़े-बड़े टीलोंवाली ज़मीन) पर मैं एक हिरनके पीछे था। वर्षाके दिनोंमें हिरन झील-झिलरेके स्थानोंको छोड़कर, भूड़ोंकी ऊँची जगहको पसन्द करते हैं। यह समझकर कि भूड़ोंपर कोई अच्छा हिरन मिलेगा, मैं उधर गया था। चक्कर काटकर एक किनारेसे नीचेको देखा, तो साठ-सत्तर हिरनोंका झुंड आनन्दसे बैठा हुआ था। केवल तीन सन्तरी खड़े चौकसी कर रहे थे। उनकी चौकसी ख़ज़ानेकी चौकसी न थी, और न वहाँ 'हुकमदार' (Who comes there) की ध्वनिसे आगन्तुकको चेतावनी ही दी जाती थी। वे तो केवल इस बातके लिए सतर्क थे कि कहीं कोई धोखाधड़ीसे उनपर वार न कर दे। आदमी, गीदड़, भेड़िया और कुत्ते—सभी तो उनकी जानके गाहक होते हैं। सन्तरियोंकी दृष्टिसे बचाकर मैं पतेलकी झाड़ीमें बैठ गया, और दूरबीन निकालकर बैठे हुए हिरनोंके उस झुंडको ध्यानसे देखा। कितना सुन्दर दृश्य था। बहुतसे तो शत्रु-भय-रहित, आँखें झपकाये हुए सो रहे थे। कानोंपर कभी मक्खी बैठ जाती थी, तो कान स्वतः ही हिल जाते थे। कुछ तो अफ़ीमचियोंकी भाँति पीनकमें थे। दो-चार हिरनियाँ अपने शावकोंको चाट रही थीं, और संतरियोंके होनेपर भी वे अति सतर्क थीं। बच्चोंको चाटती जाती थीं और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौकन्नी होकर चारों ओर देखती भी जाती थीं। सूर्य कभी बादलसे निकल आता था और कभी छिप जाता था। धूप और छायाकी लहरें हिरनोंके उस सुखी कुटुम्बपर होकर बह रही थीं। वे कितने सुखी थे! कितने स्वस्थ थे! शत्रुओंका उन्हें उस समय ज़रा भी भय न था। यह माना कि उन निर्दोषोंको कभी-कभी जानसे हाथ धोने पड़ते थे। यह उनके पशु होनेका दंड हो सकता है, पर नर-पशुको भी दंड भोगना पड़ता है, और कदाचित् अति भयंकर दंडका भागी होना पड़ता है। सभ्यताका दंड कौन कम है? हिरनोंको डाक्टरोंका बिल तो नहीं देना पड़ता। ऊँची अट्टालिकाओंकी तो उन्हें धुन नहीं है। हिरनियाँ प्रसव-पीड़ासे मरकर अपने बिलखते बच्चोंको तो नहीं छोड़ जातीं। बहन-बेटीका हिरनोंको ख़याल नहीं है। ठीक है, पर बलात्कार (Rape) के जुर्म और पापसे तो वे परे हैं। इसके रोकनेके लिए मनुष्यने कितनी बुद्धि ख़र्च की है। 'पीनल कोड' और 'ज़ाब्ता फ़ौजदारी' बनाया है, और इन सबके होनेपर भी मनुष्य दुःखी है। ऐसे सुखी कुटुम्बपर कैसे गोली चलाता? मारनेको तो मेरी कालिका-स्वरूपा रेमिंगटन रायफ़लकी एक गोली अनेकोंको भून देती, पर क्या दूधपीतोंको मातृ-विहीन करना था? ऐसा मैंने जानकर कभी नहीं किया। मेरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नज़र तो झुंडके एक कोनेपर बैठे हुए काले अवधूत हिरनपर थी, जो हिरन-जीवनका ऊँच-नीच ख़ूब देख चुका था, जिसका उस झुंडपर पूर्ण शासन था और जिसने अनेक शिकारियोंको बीसियों बार छकाया था। धोकेसे एक बार एक चालाक शिकारीने उसपर एक फ़ायर किया, पर उसका फल हुआ उसकी पूँछका कतर जाना। उस समयसे वह पुच्छविहीन काला हिरन बन्दूक़वालोंसे बड़ा घबराता था। बन्दूक़वाला देखा कि वह तीन-तेरह हुआ। गाँवके कुत्तोंको तो वह उल्लू समझता था। जानता था कि वे अधिक दौड़ नहीं सकते, इसलिए, उनसे पीछा किये जानेपर वह कुदका चालसे ही उन्हें परास्त कर देता था। बरसातमें वह जुते खेतों और झीलोंकी ओर आता ही न था। झुंडमें वह किसी और हिरनको आने नहीं देता था, और यदि कहीं किसी चढ़ती जवानीके गुर्रा हिरनने उसकी प्रणय-केलिमें हस्तक्षेप करनेका साहस किया, तो बस उसे अपनी उद्दंडताके लिए बंडाके सींगोंके आघात सहने पड़ते थे। लड़ाईमें वह अब तक अजेय था। उस झुंडमें और भी हिरन थे, पर वे सब उसकी दासता स्वीकार कर चुके थे। मैं उस बंडेको ही मारना चाहता था, पर उसके पास, गोलीके मार्गमें, एक हिरनी भी बैठी थी, इसलिए मैं गोली नहीं चला रहा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ देर प्रतीक्षा करता रहा, और इतने ही में एक घास लेनेवाला उस झुंडकी ओर आता दिखाई पड़ा। एक-एक करके सब झुंड खड़ा हो गया। कनौती किये हुए सब-के-सब उ' ओर देखने लगे। छोटे बच्चे हूँदें मार-मारकर अपनी माताओंका दूध पीने लगे। उस आदमीकी गतिसे वे समझ गये कि कोई राहगीर है, इसलिए, वे दुलकी चालसे उसकी बाईं ओरको, मेरे सामने होकर, चलने लगे। और बंडा? बड़ा बेवस था। एक हिरनीके प्रेम-पाशमें फँस चुका था। कामान्ध बुद्धिभ्रष्ट हो जाया करते हैं। और वह हिरनी भी स्वयं-दूतिका नायिकाके समान थी। झुंडसे अलग, जुआरके खेतकी ओर, बंडाको लुभाये लिये जा रही थी। मैंने अपनी रायफ़ल सीधी की, और इस ताकमें था कि हिरन खड़ा हो, तो निशाना लूँ। चारों ओर खेतोंमें आदमी थे, इसलिए, भागते हिरनपर गोली छोड़ना मैंने उचित नहीं समझा, पर ठहरनेके बजाय बंडाने सिर ऊँचा किया, और सामनेसे एक दूसरे हिरनको आते देखकर वह उससे लड़ने चला। दूसरा हिरन भी अकड़ता हुआ बड़े अभिमानसे सामने आया, और दोनोंने ज़ोरोंसे टक्कर ली। फिर क्या था, पीछे हट-हटके वे टक्करें लेने लगे।

यदि इतने वेग और इतनी शक्तिसे हिरन किसी आदमीके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टक्कर मारे, तो आदमी उसी क्षण समाप्त हो सकता है; पर उन्हें अपनी शक्तिका ज्ञान नहीं। मनुष्योंमें ऐसी घटनाएँ प्रतिदिन हुआ करती हैं। बस, तनिक ढंगका अन्तर है। शेक्सपियरके प्रसिद्ध नाटक 'ऑथेलो' में डैसडीमोनाकी प्राप्तिके लिए रौड्रिगोने कितना व्यय किया, और अन्तमें, किस प्रकार, सबका अन्त हुआ।

हिरनी विजेताकी प्रतीक्षामें थी, और मैंने यह निश्चय कर लिया था कि जो जीतेगा, उसीपर गोली चलाऊँगा। रही पापकी बात, सो कविवर 'अकबर' के शब्दोंमें—

"गो रफ़ल भी काम करता है;
शेर भी मौत ही से मरता है।"

पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि मैं अपने पापको—यदि यह पाप है तो—युक्तियुक्त समझता हूँ। संसारमें सबसे सरल काम अपनी करतूतके लिए युक्ति देना है। भगवान रामचन्द्र तकने बालिको छलसे मारा था, और जब बालिने उन्हें खरी-खोटी सुनाईं, तो उन्होंने बालिको यह कहकर दुतकारा था—

"यान्ति राजर्ष यश्चात्र मृगयां धर्मकोविदाः।
तस्मात्त्वं निहतो युद्धे मया वाणेन वानर॥"*

* वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धाकांड, ४१वाँ श्लोक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अर्थात्—'धर्मके तत्त्वको जाननेवाले बड़े-बड़े राजर्षि शिकार खेला ही करते हैं। हे बानर! इसीसे मैंने भी (छिपकर) तुम्हें युद्धमें बाणसे मारा है।'

मैं तो राजर्षिके स्थानमें पामर हूँ; पर शिकार खेलनेको आवश्यक समझता हूँ, अथवा मेरा यह व्यसन है, और दम लगानेवालोंकी भाँति प्रत्येक नवयुवकको शिकार खेलने—शेर और बाघके शिकार खेलने—के लिए आह्वान करता हूँ।

सुग्रीव और बालिकी भाँति वे दोनों लड़ रहे थे। सींगसे सींग भिड़े हुए, घुटना टेक-टेककर वे आगे-पीछे हटते थे। अन्तमें बंडाकी जीत हुई, और उसका विरोधी दुम दबाकर भाग गया। बंडा अभिमानसे आगे बढ़ा और छाती खोलकर अपनी प्रेमिकाके अभिवादनके लिए कामोन्मत्त दशामें खड़ा ही हुआ था कि इतनेमें रायफ़लका घोड़ा खिंच गया—अरर धम, और फिर उसीकी प्रतिध्वनि हुई अरर धम—सामने बंडा गिरा, ख़ूनकी नदी बहने लगी। गोली पेटमें, रीढ़की ओर, लगी थी। पेटमें दूसरी ओर धोंदुआ (बड़ा छेद) हो गया। पास पहुँचने तक वह बिल्कुल ठंडा हो गया। अभी थोड़ी देर पहले बंडा प्रेमासक्त था। अपने सामने किसीको गिनता न था। कामासक्ति वस्तु ही ऐसी है। आसक्तिका वह शिकार भी हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे सामने अब प्रश्न था—वहाँसे हिरनको उठवाकर ले जाना। साथमें कोई था नहीं, एक समीपवर्ती गाँवसे चमार आ सकता था; पर हिरनको छोड़कर जाता कैसे? गिद्ध तो उसको मिनटोंमें साफ़ कर जाते। टीलेपर चढ़कर इधर-उधर देखा, तो एक आदमी पशु चराता दिखाई पड़ा। टोपसे मैंने उसे अपनी ओर आनेका संकेत किया। टोप देखकर वह उधर दौड़ा आया। समझा होगा कि कोई हाकिम आया है, हुकुम उदूलीसे, न मालूम क्या विपत्ति आये। कदाचित् इसी विचारसे वह भागा आया। पास आकर मुझे झुककर सलाम किया। मैं बड़ा लज्जित हुआ। उसने मुझे सलाम नहीं किया—वह टोपका सलाम था। उसकी आँखोंमें गिड़गिड़ाहट थी। सिमटा-सहमा खड़ा था। मैंने कहा—
"कौन ज़ात हो?"

"हजूर अहीर ऊँ।"

"अरे भई, हिरन लिवा जाना है, इस गाँवमें कोई चमार भी है?"

"हाँ, सा'ब, चमार है तौ।"

"जाके बुला लाओगे?"—मैंने पूछा।

"चलौ तौ जाँग्गौ, परि मेए पौहे तिर्रिक-बिर्रिक (इधर-उधर) है जाँग्गे।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"अरे अपने पौहे इधर भूड़ाकी ओर कर जा।"—मैंने कहा।

"अच्छा हजूर जा तूँ।"

थोड़ी देरमें वह अहीर एक चमारको साथ लेकर लौट आया। चमारने आकर सलाम झुकाया, और अपना काम करके मेरे साथ चल दिया।

× × × ×

पसीनेसे लतपत मैं आगे-आगे घरकी ओर चला आ रहा था, और पीछे-पीछे चमार था।

दो-चार बातोंसे मुझे पुलिस-प्रकृतिवालोंसे भिन्न पाकर उसने मुझसे बड़ी नम्रतासे कहा—"हजूर, हूँ तौ वैसेंई आइ जातौ, मोमें पनहीं चों मरवाईं।"

चौंककर मैंने कहा—"किसने पनहीं मरवाईं और किसने मारीं?"

चमार—"हजूर, बु आदिमी जो मोइ टेरिबे (बुलाने) गयो, वाईने मारीं।"

मैं—"क्यों?"

चमार—"हूँ नैक भैंसिया पियाइ कैं आवतु ओ। सो वाने कई (कही) कै चल्तु नाएँ, कोई बड़ौ हाकिम मालिम पत्तु ऐ, नेंकऊ देर है गई, तो पल्हें है जायगी।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं—"मुझसे हुज़ूर न कहो। आख़िर जूते क्यों मारे?"

चमार—"मेए हाथमें भैंसिया ई, सो हूँ (मैं) बाइ (उसको) पोखरियाकी लंग (ओर) कूँ लै चलौ और वाने मेरैं पनहा मारे।

मैं—"तुमने उसे क्यों नहीं पीटा? इतनी कमज़ोरी दिखानेसे काम नहीं चलेगा।"

चमार—"हमाऔ काम तो ऐसें ई चल्तु ऐ। नदियामें रहि कैं मगरसूँ बैरु ना होतु।"

मैं—"यदि वह मगर है, तो तुम भी मगर हो। हो तो आदमी।"

चमार—"परि बु गामके जिमीदारकौ भैया लगतु ऐ।"

मैं—"भाई मैं तो तुम्हें मज़दूरीपर ले जा रहा हूँ।"

चमार—"नाँइ सा'ब, हूँ तो बेगारिमें आऔ ऊँ।"

मैं—"नहीं, बेगारपर नहीं, मज़दूरीपर। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम्हारी बड़ी बेइज्ज़ती हुई।"

चमार—"अरे सा'ब, हम पै तो ऐसैंई बीतति ऐ। जौ काऊसूँ कऐं, तो सिब जौं कैत ऐं कै, इतनौ भारी पुरु (चरस) मूँड़ पै धरैं तें बेइज्जती ना होति। एक पुरमें तौ बीस-पचीस जूता बन्त ऐं।"

यैं—"मुझे बड़ा दुःख है। परमात्मापर विश्वास रखो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और हिम्मत बाँधो, तभी काम चलेगा। शेर और बकरीकी दोस्ती नहीं हो सकती। सो तुम बकरी बनकर न रहो।"

× × × ×

गाँववालोंकी स्थितिपर फ़ब्तियाँ छोड़ना, उनके अज्ञानको कोसना, बिना सोचे-समझे कोई राय क़ायम करना अथवा सुनी हुई बातोंपर कोई सिद्धान्त बनाना बड़ी भूल है। घायलकी गति घायल जाने—गाँववालोंकी स्थिति जाननेके लिए उनकी मनोवृत्तिको समझना आवश्यक है। पानी पीनेके लिए बाज़को आकाशसे पृथ्वीपर उतरना पड़ता है। उसे अपने पंख बन्दकर बैठना पड़ता है। सुधारकों और हितैषियोंका भी यही कर्तव्य होना चाहिए कि वे उस खाईको, जो उनके और गाँववालोंके बीच है, भर दें अथवा पाट दें और ग्रामीण होकर उनकी हितचिन्तना करें।

चमारकी मनोवृत्तिसे पढ़े-लिखे लोगोंको लज्जा आनी चाहिए।

× × × ×

सींग और खाल रखे हुए चमार पीछे-पीछे चला आता था और अपने दुखड़े रोते आता था। मैं, 'हूँ हाँ' करता हुआ, प्रकृति निरीक्षण करता आता था। ज्वार और बाजरेके खेत एक-एक गज़ बढ़े हुए खड़े थे। काँचकी तरह हरे थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरवा हवाके झकोरोंसे झूम रहे थे, मानो नाच रहे हों। अचल थे, वर्ना उनके पत्ते-पत्तेसे जीवन-ज्योति टपक रही थी। दो-चार टूटे पौधे निर्जीव सूखे पड़े थे। मृत मनुष्यसे उनकी अवस्था अच्छी थी। आगे चलकर मार्गमें एक आमका वृक्ष मिला, और हम दोनों कुछ आराम करनेके लिए रुक गये। रायफ़लको पींड़से रख दिया, और इधर-उधर छायामें टहलने लगा। चमारको तम्बाकूकी हुड़क थी, इसलिए वह पासके खेतमें आग लेने चला गया। आग लाकर उसने चिलम भरी, और उसने तीन-चार फूँक ही मारी होंगी कि एक परिचित लाला, नौकरकी पीठपर घीकी कुपिया रखवाये, उस पेड़के नीचे आकर रुके। धूप और पसीनेसे परेशान थे। रुकना पड़ा ; पर हिरनका दृश्य उनके लिए असह्य था। पालागन की ओर मुँह फेरकर खड़े हो गये, और एक लम्बी साँस लेकर, दयासूचक मुखाकृतिसे, कहने लगे—"पंडितजी, आपमें सब गुण हैं, बस, एक यह शिकारकी लत बुरी है। ब्राह्मण होके आपको जीव-हत्या वाजिब नहीं है।"

मैं—"ख़ूब, आप जैसे प्रशंसक मुझे कहाँ मिलें ! एक ऐब तो कोई बात नहीं है। लाला आप लेन-देनके बारेमें तो पक्की राय रख सकते हैं ; पर आप मर्दुमशनास कबसे हो गये ?"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ला०—"कुछ भी हो, पंडितजी, आपको निर्दोष हिरनोंको नहीं मारना चाहिए।"

मैं—"ठीक है लाला! मैं अपने आपको हिंसासे मुक्त नहीं समझता; पर इस पापको मेरे मत्थे मढ़नेवाले वे लोग नहीं हो सकते, जो रात-दिन ब्याज लेनेकी चिन्तामें लगे रहते हैं। अच्छा, यह बताओ कि गायके भक्षकको मारनेवाला पापी या धर्मात्मा?"

ला०—"धर्मात्मा। मैं जानता हूँ कि आपने अनेक बाघ मारे हैं और यश कमाया है; पर हिरन न मारो, पंडितजी।"

मैं—"नहीं लाला, बाघको मारकर लोगोंकी दृष्टिमें मैं धर्मात्मा नहीं बनना चाहता। यदि शिकार खेलना पाप है, तो मैं पापी हूँ। गायकी रक्षा करना धर्म है; पर भगवानकी सृष्टिमें हस्तक्षेप करनेवाला मैं कौन? पर लाला, यह बताओ कि हिरनका मारनेवाला अधिक पापी, या आदमीका मारनेवाला अधिक पापी? पापी दोनों हैं; पर हिंसा हिंसामें भेद है।"

ला०—"आदमीका मारनेवाला घोर पापी।"

मैं—"बस, तो लाला आप आदमीका शिकार खेलते हैं,*

---

* किसी दिलजले क़र्जदारने किसी सूदख़ोर जैनी—दयाधर्मीसे कहा है—

"जाननहारा जानिया, बनिया! तेरी बान,
अनछाना लोहू पिये, पानी पीवे छान।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और मैं बाघ, सूअर और हिरनोंका, और साथमें किसानोंका आशीर्वाद भी लेता हूँ।"

ला०—"सो कैसे ?"

मैं—"आपने किशनपुर गाँवमें उस अहीरको १००) ब्याजपर दिये थे ?"

ला०—"हाँ।"

मैं—"तो इकन्नीके ब्याजसे वह आपको २५०) दे भी चुका, और फिर भी उसका भुगतान न हुआ! बीमारी पड़ी। बेचारा दवाके लिए पैसा खर्च न कर सका। दूध भी न पी सकता था और तड़प-तड़पकर मर गया! इसकी ज़िम्मेदारी किसपर है ?"

ला०—(व्यथित होकर)—"सो उसका भाग्य, जो मर गया।"

मैं—"पर कारण तो हुए आप !"

ला०—"आपसे मैं जीत नहीं सकता।"

मैं—"तो इसका क्या चारा ?"

इस वार्तालापके उपरान्त लाला अपने घरको चले गये, और मैंने अपनी राह ली। वार्तालापसे चमार बहुत प्रसन्न हुआ, और कहने लगा—"पंडितजी, जि बड़ौ कसैया ऐ।"

मैंने चमारकी बातोंपर कुछ ध्यान न दिया, और दुखी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होकर सोचता चला आया कि मैंने आवेशमें आकर बेचारे लालाको खरीखोटी सुना दीं। वह लाला बेचारा हिंसा और अहिंसाके गहन तत्त्वको क्या समझे? वह क्या जाने कि कभी-कभी हिंसा भी अहिंसा होती है। वह क्या जाने कि गायके जब लाखों कीड़े पड़ जाते हैं, तब गायकी रक्षाके लिए उन कीड़ोंको मार देते हैं; और न साधारण व्यक्तिसे यह समझनेकी आशा की जाती है कि हिंसाके मानी मानसिक कष्टके भी हैं।

ऐसे ही विचारोंमें मैं घर तकका सब मार्ग पार कर आया। खेतपर आकर चमारको पैसे दे विदा किया और कराहकर आरामकुर्सीपर गिर गया। दाईं ओरसे लड़कियोंके गानेकी आवाज़ कानोंमें पड़ी। बादल भी घिर आया था। वाद-विवाद-जन्य कष्टको भूल गया, और पूरे आध घंटे तक झोपड़ीसे मलार सुनता रहा—

"झुकि जा रे बदरा, बरसि जा रे मेंह!
कौनकी भींजै आली चूंदारी,
और कौनकी मिरगुल पाग? झुकि जा रे० !"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़ूनी घटवारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शराबीका स्वर्ग शराब, साक़ी और सनमके साथ है और मेरा आनन्द वेदान्त, साहित्य और शिकारमें है। जब दुनियाकी कठोरतासे, लोगोंकी धोकेबाज़ो और गृह-चिंता-चितासे चित्त जलने लगता है, तो आबादीसे वहशत आती है, जंगलका स्मरण हो आता है और पागलकी भाँति उसी ओरको भाग जानेको जी चाहता है।

मनकी ऐसी ही परिस्थितिमें, कल्पना-पर्वतके उच्चतम शिखरपर जब भावनाएँ सुकुमार विचारोंका एक ताना-बाना पुर रही थीं और जब आशा और निराशा वायुके झकोरे उन विचारोंको हिला-सा रहे थे, तब मनका पैंडुलम जगत-जन्य ग्लानिकी ओर बढ़ा, और वे सुकुमार विचार ऐसे विलीन हो गये, जैसे नदीमें बहता हुआ घड़ा पत्थरकी चोटसे टूटकर डूब गया हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोट-सी खाकर मैं तिलमिला गया; लम्बी साँस लेकर उठा और सिर नीचा किये हुए थोड़ी देर इधर-उधर कुटियाके सामने टहलता रहा, और इस नतीजेपर आया कि पहले तो यमुना-तटपर चलकर नाकेका शिकार खेलना चाहिए। ऐसा निश्चय करके मैंने गोपालसिंहको बुलाया।

गोपालसिंहका मुझपर बहुत स्नेह है, और हिरनोंके शिकारमें गोपालसिंहका नब्बे प्रतिसैकड़ा मेरा साथ रहा है। गोपालसिंहको साथ लेनेका एक दूसरा कारण और था। गोपालसिंहकी ससुराल यमुनाके किनारे है, और इसलिए, ठहरनेकी सुविधा थी। खाल निकालनेके लिए गोविन्दा चमारको साथ ले लिया।

× × × ×

राम, गोपाल, गोविन्द—तीनों गोपालसिंहकी ससुरालके निकट पहुँचे, और गोपालसिंहने बातों-ही-बातोंमें कहा—"पंडितजी, आपको मैंने कभी ससुराल जाते न देखा और न सुना। अबकी तो अपने साथ मुझे लिवा ले चलिये।"

मैं (कुछ झेंपकर)—"अब अपनी ससुरालकी बातें करते हो, या मेरीकी? तुम जाना चाहो, चिट्ठी लिख दूँगा, चले जाना। ख़ातिर ख़ूब होगी।"

गो०—"ख़ातिरको क्या मैं भूका हूँ; पर आपके साथ अवश्य चलूँगा।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं (कुछ झुँझलाकर)—"क्या फ़ज़ूलकी बातें करते हो। शिकारकी बातें करो। जब मैं चलूँ, तब चले चलना। हाँ, तो वह मगर घाटसे किधर रहता है?"

गो०—"उसका कोई स्थानविशेष नहीं है; पर है वह बहुत लागू।"

मैं—"अच्छी बात है। आज सायंकालको चलकर मौक़ा देखेंगे।"

× × × ×

सायंकालके लगभग पाँच बजे हम लोग यमुना-तट स्थित एक टीलेपर जा बैठे। यमुना धनुषाकारमें वह रही थी। न उसमें कलरव था और न लहरें। शोरगुल और जोश तो युवावस्थाका सूचक होता है—शक्ति—संचित शक्तिका द्योतक है। युक्तप्रान्तके इस भागसे यमुनाकी अधेड़ अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। यमुना मानो अपनी पुरानी स्मृतियों और ब्रज-विरहका स्मरणकर, कुछ सोचती हुई, गुम-सुम चली जा रही थी। वायुके झोंके आकर उसे गुदगुदाते थे, आलिंगन करते थे; पर वह मानो खीजकर कहती थी—'अरे हटो, अठखेलियाँ न करो, किसी दूसरेसे उलझो।' किनारेके टेंटीके वृक्षसे टेंटीका लाल फूल, अपने गर्वमें, यमुनाकी ओर तिरछी नज़रसे देखता था। कलियाँ सुषुप्तावस्थामें पड़ी मालूम होती थीं। ओस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी जवानीकी आँखें धोकर खोलनेके लिए आ चुकी थी। हमसे कुछ दूर पूर्वकी ओर घाट था, और वहाँपर तीस-चालीस आदमी खड़े हो-हल्ला करते हुए, लकड़ियों, लाठियों और जो कुछ जिसके हाथमें पड़ सका, उससे यमुना मथते हुए पार हो गये।

× × × ×

मैं, रायफ़ल भरे, घाट और मार्गसे दूर, एक रेतियाके सामने, ओटमें बैठा था। प्रातःकालके नौ-दस बजे होंगे। यमुना वहाँ बीहड़की धरातलसे समकोण-सा बनाती थी; और, इसलिए, वहाँ दो-चार गहरे दह थे, जहाँ पानी प्रत्येक ऋतुमें स्थिर-सा रहता था। नदीकी दूसरी ओरको बालुकामय ढलवाँ रेतिया थी। बीहड़से निकलकर नीलगाय, हिरन और सूअर वहाँ आकर पानी पी जाया करते थे। उस स्थानके आमने-सामने न तो कोई गाँव था, और न वहाँ कोई मार्ग। नदी किनारेका मार्ग भी, जिधर मैं बैठा था, ऊपर टीलोंपर होकर था। उस शान्त जलाशयको देखकर यह मालूम होता था, मानो प्रकृतिने अपने कोमल करोंसे वह दह बनाया हो। वहाँकी जल-राशि शान्ति-स्वरूप थी; पर मेरी गृद्धदृष्टि उसी वाह्य पवित्र गम्भीर जलाशयकी ओर थी। थोड़ी देरमें—ज्यों ही सूर्यकी किरणोंका प्रकाश छनकर नीचे पहुँचा होगा—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस दहमें लकड़ीका एक टुकड़ा-सा दिखाई पड़ा, जो दो जगह पास ही पास उठा-सा था। वह टुकड़ा चार-पाँच इंच लम्बा था। धीरे-धीरे चार-पाँच वैसे ही टुकड़े पानीपर तैरने लगे, और फिर तो वे तुच्छ टुकड़े सुरसाकी भाँति बढ़ने लगे, और कईएक तो पेड़की पींड़-से प्रतीत होने लगे। एक एक करके सब—एकको छोड़कर—बड़े मिज़ाजके साथ पानीको चीरते हुए—मानो कोई रस्सा खींच रहा हो—रेतियाके ऊपर चढ़े, और चढ़कर, दो-एक मुड़कर, पानीकी ओर मुँह करके, धूप सेकनेको पड़ रहे; पर एक मगर पानीमें पलराता रहा। न तो वह डुबकी ही मारता था, न किनारेपर आता था और न आगे-पीछे ही हिलता-डुलता था। अचल था। दूरबीन लगाकर देखा, तो उसकी गोल-गोल रक्तवर्ण, घृणोत्पादक आँखें बीहड़की ओर लगी हुई थीं। उसकी थूथड़ीसे मालूम हुआ कि वह छिपकलीके मुँहवाला—चपटी थूथड़ीवाला (Snub-nosed)—मनुष्य और पशुओंको खानेवाला मगर है।

एक घंटे तक वह उसी आसनपर जमा रहा। दाँव-पेचका जानकार था। बुरे-भले भोजनसे बुद्धि और समझ घटती और बढ़ती है। मनुष्यका मीठा मांस मुँहसे लग गया होगा—फिर भला चालाकी क्यों न आवे? सात्त्विकी, राजसी और तामसी प्रकृति, अनेक अंशोंमें, भोजनपर भी तो अवलम्बित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। यदि वह अपने क़िले—पानी—से अपने भावी शत्रुओंकी अथवा भोजनकी तलाशमें कोई ऊँच-नीच काम करे, तो क्या हानि। कम-से-कम वह अपनी जातिका ख़याल रखता था। बुद्धिके पुतले ब्रह्मके निकटतम प्राणी इस दो पैरके पशुकी भाँति तो वह अपने काले कारनामोंपर बाइबिल, कुरान और वेदकी छाप तो नहीं लगाता था। उसकी तो अहर्निश रट यह थी कि भूककी व्याकुलतामें कोई रुचिकर जीव उसकी दाढ़ोंके नीचे आये। मनुष्यकी भाँति एकत्र करना उसे न आता था। कट्टर कम्युनिस्ट (समष्टिवादी) था। परिश्रम करके, दाव-घात लगाकर, अपनी जानको हथेलीपर रखकर, घंटों प्रतीक्षा करके और दिनों भूके रहकर, उसे अपना भोजन मिलता था। लोग उससे डरे हुए थे। उनका डर युक्ति-युक्त था। मनुष्य मनुष्यकी जानका गाहक हो जाता है; पर वह ख़ूनी घड़ियाल किसी अन्य घड़ियाल और नाकेका शत्रु न था। हाँ, और मगर उसको तरह देते थे, और वह भी उनका तिरस्कार-सा करता था। उसका ऐसा करना ठीक भी था, क्योंकि और नाके तो मनुष्यको आदर और भयकी दृष्टिसे देखते थे और वह रक्त-पिपासित दृष्टिसे।

मैं अपने आसनपर जमा बैठा था, और वह अपने जल-दुर्गसे चारों ओरका विहंगावलोकन कर रहा था। मैं वहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो घंटे तक और जमा रहा ; पर वह पानीसे न निकला। मेरी आँखें तिलमिलाने लगीं, और नाकोंकी पीठ सूखकर भुरभुरी-सी हो चुकी थी ; पर वह अपनी ड्यूटीपर डटा था। कभी-कभी तबियत करती थी कि उसका ख़याल न करके किनारेपर पड़े नाकोंमें से एकपर गोली चला दूँ। किनारोंपर पड़े नाकोंमें भी छपकलीकी थूथड़ीवाले दो छोटे नाके थे। दूरबीन लगाकर मैंने उन्हें फिर देखा। मज़ेसे मानो समाधिस्थ पड़े थे। एक उनमें लम्बी थूथड़ीवाला (Long nosed) मुँह फाड़े पड़ा था। सूटकेसों और अटैचीकेसोंके लिए लम्बी थूथड़ीवाले नाकोंकी ही खाल अच्छी होती है ; पर मैं अपने स्वार्थमें, नामके लिए, जमा बैठा था कि ख़ूनी घड़ियालको मारूँ।

कुछ दिनोंसे घड़ियालने मार नहीं की थी, इसलिए, मैं भी अपने भाग्यकी परीक्षाके लिए बैठा था ; पर यह पता न था कि वह पानीसे न निकलनेवाला—वही ख़ूनी घड़ियाल है, जिसके मारे घाटपर से एक-दो आदमी अकेला निकलनेका साहस न करता था। अन्तमें, थककर, अच्छे शिकारीके सिद्धान्तोंकी पर्वा न कर, सन्तोष और लगनको छोड़कर, किसी दूसरे मगरपर फ़ायर करनेका विचार किया। कदाचित् वह घड़ियाल भूका है, और जब तक वह अपना पेट न भर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेगा, तब तक वह किनारेपर न निकलेगा। आराम और आनन्द तो क्षुधा-निवृत्तिके उपरान्त ही सूझते हैं। भूके भगति नहीं होती। वह घड़ियाल भी शायद भूका था, इसलिए, ताकमें था। घाट सुनसान था। दो-चार आदमी निकलें, तो वह भुगत ले; पर बीस-पचीसकी टोली—और वह भी कुहराम मचाते निकलती हुई टोली—में से किसीको पकड़नेका उसका सहसा साहस न होता था। छोटे बालक और बूढ़े हृष्टपुष्ट आदमियोंके बीचमें होकर चलते थे, इसलिए, उसे भय हो जाता था कि अक़लका पुतला आदमी, जानपर खेलकर, न-जाने क्या कर बैठे, और फिर वह एक बातसे बहुत घबड़ाता था—उसका उसे काफ़ी अनुभव था—भुक्तभोगी था—कि लोहेकी नालमें से फिस्स और दन्न करके सीसेका टुकड़ा कहीं उसके न आ लगे। एक बार उसकी पीठपर ऐसे ही एक चोट लगी और धाँयसे शब्द हुआ, और चारों दिशाएँ कम्पित हो गईं। उसकी पीड़ाके मारे हफ़्तों तक वह बेचैन रहा। एक दूसरी बार एक चमारिनका आहार करके वह एकान्तमें जाकर धूप लेनेको पड़ा था कि धड़ामसे उसकी पूँछ और पिछले पाँवके बीच वैसी चोट लगी, और अररधमकी ध्वनि हुई। गोली खाकर वह तड़पा और पूँछ और थूथड़ी एकत्र-सा करता हुआ कला मुंडी खाकर उसने जमुना मैयाकी शरण ली। उफ़! घावमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मृत्यु-वेदना हो रही थी, और ख़ूनका पनाला-सा चल रहा था। ख़ूनकी गन्धसे मछलियाँ और कछुए, जो उसके भयसे दूरसे ही भागते थे, उसके पास आ गये, और मछलियोंने घावमें नोचना प्रारम्भ कर दिया। एक तो आफ़त थी ही, तिसपर वे तुच्छ मछलियाँ भी उसको अपमानित करने लगीं। पीड़ासे मूर्छा-सी आ रही थी, और वह अपने युद्ध-क्षेत्रकी एक खाई—नदीके भीतर बग़लवाली खोह—में लेटना चाहता था कि कछुओं और मछलियोंके झुण्डने, चक्कर काट-कूटकर, उसके घावमें से मांसके टुकड़े तोड़ने प्रारम्भ कर दिये। परेशानी थी। उसकी शक्तिको 'चैलेंज' किया गया था ; पर हिलने-डुलनेकी किसमें शक्ति थी। मुड़कर मुँह मारता तो हिलनेसे पीड़ा बढ़ती थी ; पर उनसे कैसे पिंड छुटाता। आख़िर दिक़ होकर निकला। कछुए और मछलियाँ भी साथ थीं, और घावमें से कुछ-न-कुछ ले ही जाती थीं। धारकी ओर पड़कर उसने अपनी स्टीम तेज़ की। कछुए तो पीछे रह गये ; पर मछलियाँ तो पानीमें सरपट तैर सकती हैं। उनसे पीछा छुड़ाना कठिन था। अन्तमें उसे बाहर किनारेपर आना पड़ा। वहाँ मछलियोंकी एक न चली। हाँ, एक कछुआ आया। उसपर उसने कटसे अपने दाँतोंके दोनों आरे चला दिये। कछुआ घायल होकर लौट गया। और इस प्रकार मगरने राम-राम करके उससे अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जान बचाई। अरिष्ट नहीं, मारकेश था; पर बच गया। पर, वह अपने इन कटु अनुभवोंको भूलता न था, और जहाँ तक उससे बन पड़ता, वह पानीसे बाहर न निकलता, और निकलनेपर—क्योंकि धूपमें लेटना नाकोंके लिए कुछ आवश्यक है—बड़ा सतर्क रहता। कोई भी, कैसा ही, आदमी उसको दिखाई पड़े, या उसे आदमीकी शंका हो जाय, तो वह शीघ्र ही पानीमें सरक जाता था।

इसलिए, वह पानीसे निकलनेवाला न था। बैठे-बैठे मैं थक गया। नाकोंका शिकार नीरस होता है। गोली खाकर या तो आप वहीं धरे रह जायँगे, या फच्च करके पानीमें सरक जायँगे और फिर हाथ आनेवाले नहीं, इसलिए, मैंने घड़ी जेबसे निकाल ली कि यदि आध घंटेमें वह बाहर निकला तो ठीक है, नहीं तो मैं और नाकोंपर फ़ायर करूँगा; पर अभी दस मिनट भी न होने पाये थे कि उसने डुबकी लगाई। हैं यह क्या! क्या उसने मुझे देख लिया है? ऐसा तो हो नहीं सकता। फिर क्या कोई आदमी इधर-उधरसे आ रहा है, जिसके डरसे वह डुबकी लगा गया; क्योंकि उसे तो मनुष्य केवल खानेमें ही अच्छा लगता था।

दूरबीन लगाकर सामने बहावकी ओर देखा, तो कोई नज़र न आया। फिर क्या कोई अभागा अजनवी आदमी यमुनामें पानी पीनेको आया है, या स्नान कर रहा है? नदीके ऊपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो नज़र डाली, तो माथा ठनक गया। एक आदमी और एक स्त्री घाट पार कर रहे थे। आदमी आगे-आगे था और स्त्री पीछे लहँगा ऊँचा किये सँभल-सँभलकर चल रही थी। छींटके लहँगे और चुनरीसे भान हुआ कि कोई ग्रामीण विदा कराके लौटा है। होगा कहीं दूरका और उसे घाटपर के ख़तरेका कुछ ज्ञान न होगा; नहीं तो इस प्रकार अकेला न निकलता, अथवा जान-बूझकर भी ग्रामीण मनोविज्ञानके भ्रममें होगा कि घड़ियाल प्रतिदिन थोड़े ही मार करता है, या जिसकी मौत आ गई है, वही पकड़ा जायगा, नहीं तो दस आदमी अमुक दिन निकले और सातवेंको ही क्यों पकड़ा गया?

अपने ठौरसे उठकर मैं घाटकी ओरको भागा। भागता जाता था और चिल्ला-चिल्लाकर उन दो अभागे व्यक्तियोंको सम्बोधन करता जाता था कि नदीसे जल्दी निकलो, नहीं तो ख़ूनी घड़ियाल किसीको पकड़ लेगा। मेरे दो-चार बारके चिल्लाने तक आदमी तो किनारेपर पहुँच चुका था, और स्त्री सूखेमें पैर रखनेसे पूर्व उन्हें धो रही थी। मेरी चेतावनीका उन्होंने कुछ ख़याल न किया। आदमीने ख़याल किया कि मैं किसी औरसे कह रहा हूँ। स्त्री पैर धोकर अपनी जूतियाँ पहननेको झुकी ही थी कि एकदम उसके मुँहसे चीख़ निकली और लड़खड़ाकर वह पानीकी ओर खिंची, और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

केवल यही कह पाई—"हाय मोय (मुझे) वचैयौ!" और पानीमें विला गई!

इस आकस्मिक वज्रपातसे वह आदमी हक्का-बक्का रह गया। यद्यपि स्त्रीके मरनेके उपरान्त भारतवर्षमें दूसरे विवाहके लिए कोई विशेष कठिनाई नहीं पड़ती; पर जो अपना दिल दे चुकते हैं, वे फिर लौटा नहीं सकते। उसमें तो एकके लिए ही स्थान होता है। उस आदमीकी भी कुछ ऐसी गति थी। जब मैं उसके पास पहुँचा, तो वह और रोने लगा। समवेदनासे हृदयमें ज्वार-भाटा-सा आता है, और आदमीका दुःख तरल होकर आँखोंके मार्गसे निकल जाता है। समझा-बुझाकर मैं चला गया।

× × × ×

इस घटनाके ठीक सात दिन पश्चात् एक उचित स्थानपर, घात लगाये, मैं छिपा बैठा था। टोपके सहारे रायफ़ल भरी रखी थी। छै कारतूस उसमें पड़े थे। दूरबीन बग़लमें रखी थी, और जमुनाका दूसरा किनारा मुझसे सौ गज़ दूर था। उस पार नदी-तटसे चार-पाँच गज़ दूर एक बच्चेवाली बकरी बँधी थी। उसका बच्चा उसके पास न था, इसलिए, वह उसकी ममतामें मिमिया रही थी। पिछले सात दिनोंमें, एक मीलकी दूरीमें, किसीने न तो जमुना पार की, और न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

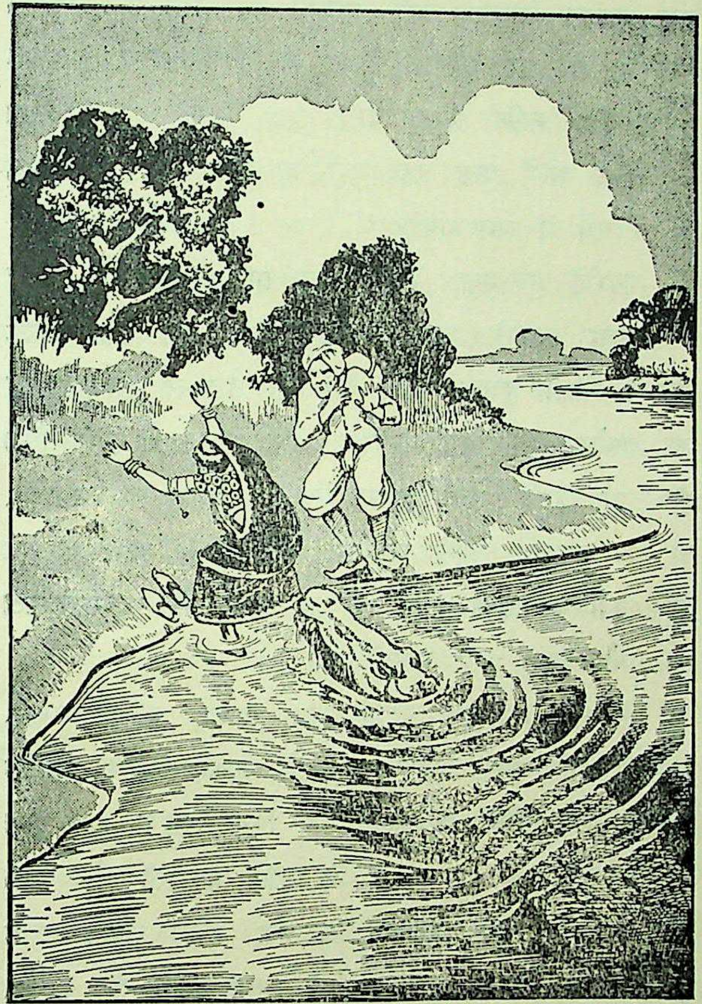

"हाय मोय बचैयौ !" [पृष्ठ १४०]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई जानवर पिलाया, और जंगली जानवरोंको पानी पीनेसे रोकनेके लिए कई रखवाले नियत कर दिये गये थे। बकरी बाँधना एक नवीन प्रयोग था। एक ख़याल था, जिसकी सफलताके बारेमें कुछ कहा नहीं जा सकता था। एक धुन थी, जिसमें मैं लग गया।

बकरीने मुक-मुक, मैं-मैं करना प्रारम्भ कर दिया, और मेरी नज़र जमुनाके जलके धरातलपर थी। एक घंटेकी बैठकके बाद मैं चौकन्ना हुआ। मेरी बाईं ओर डेढ़ सौ गज़की दूरीपर एक तख़्तेका टुकड़ा-सा पलराया, और फिर उसमें से एक सिरा ही ऊपर रहा। शेष डूब-सा गया। दूरबीन लगाकर देखा, तो उस टुकड़ेकी आँखें बकरीकी ओर थी। हो न हो, यह वही ख़ूनी घटवारा है—ऐसा ख़याल करके मैंने रायफ़ल उठा ली, और लगा करने उसकी प्रतीक्षा।

धीरे-धीरे नपी-तुली गतिसे वह तख़्ता, नदीकी धारमें, बकरीकी ओर बढ़ा, और कुछ आगे जाकर रुका। दूरबीन लगाकर मैंने उसकी आँखोंकी ओर फिर देखा। उन ख़ूनी आँखोंसे कपट चू रहा था। वे आँखें बकरीकी ओर लगी हुई थीं। वह इस प्रतीक्षामें था कि बकरी अपनी प्यास बुझाने आवे—अपने सूखे ओठोंको जमुना-जलसे तर करनेका साहस करे—प्यासकी आतुरतामें अपनी टाँगें घुटनोंसे मोड़कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पानीपर घुटनावे, फिर तो वह भुगत लेगा ; पर अभागी बकरी पानी पीने आती ही न थी। अपना बिरहा गा रही थी। दो घंटे तक वह ताकमें रहा। बकरी हाँफ भी रही थी; पर अमृत-पानके लिए नहीं आती थी। अच्छा, न आवे। वह अपने कर्तव्यसे च्युत हो। प्याससे मरे; पर घड़ियाल भूका क्यों मरे—कदाचित् ऐसा ही कुछ ख़याल करके वह पुराना पापी धीरे-धीरे बाहर निकला, और वह भौंड़ा घड़ियाल—जिसकी छोटी-छोटी टाँगों और भारी शरीरसे तीव्र गतिकी कुछ आशा न थी—झपटकर बकरीपर दौड़ा और बकरीको अपने मुँहमें ऐसे पकड़ लिया, जैसे छिपकली दीयेके पास अखफुट्टेको पकड़ लेती है, और अखफुट्टा उसके मुँहमें दाएँ-बाएँ रखा दिखाई पड़ता है। ज्यों ही उसने बकरीको पकड़ा, त्यों ही मैंने ताककर एक गोली उसकी गर्दनमें मारी। गोली खाकर वह भन्ना-सा गया। ज़मीनपर पट गिर गया। बकरी उसके मुँहसे निकलनेका प्रयत्न कर रही थी। उधर मैं धाँय-धाँय लगातार फ़ायर कर रहा था। छै गोली चलाकर मैंने रायफ़ल फिर भरी और उसकी पीठपर गोली चलाई। सन्न करती हुई गोली उसकी पीठपर लगी और फिर बकरीको भी उसने भून दिया !

× × × ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मगर मरा पड़ा था। उसकी पूँछ छै-सात इंच पानीमें थी। गोलियोंसे उसकी पीठ छलनी हो गई थी। वह बारह फ़ीट नौ इंच लम्बा था। पेट फाड़कर देखा, तो उसमें चूड़ियाँ तथा कड़े निकले और हालमें खाई हुई स्त्रीके शरीरके भाग। ये चीज़ें जमुनामें फेंक दी गईं। स्मृति-चिह्नमें मैंने कड़े रख लिये। उस दिनसे घाटका प्रयोग होने लगा—लोग बेखटके नहाने-धोने लगे तथा मेरी प्रशंसाके पुल बाँधने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चील-झपट्टा

S. 10

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिहरी (गढ़वाल) राज्यका बन-विभाग-कार्यालय दयारा नामक स्थानमें है। दयारा सुरसरि-चुम्बित तथा भिलंगना-आलिंगित टिहरी नगरसे, दक्षिणकी ओर, भिलंगना-पार है। कौआ-उड़ानमें तो वह टिहरीसे दो फ़र्लांगकी दूरीपर होगा; पर मार्गसे श्रीनगर (गढ़वाल) वाली सड़कसे होकर और भिलंगना-पुल पार करके उसकी दूरी एक मीलके लगभग बैठेगी। अपने पाँच-छै वर्षके टिहरी-जीवनमें वह कोई बिरला ही दिन होगा, जब मैं उस सुन्दर सड़कपर घूमने न गया हूँ। घोर वृष्टि और कड़ाकेदार जाड़ेमें भी एक मील तक तो उस सड़कपर टहल ही आता था। सड़कके दोनों ओरवाली झाड़ियोंमें बसेरा लेनेवाले पक्षियों तकसे मेरा परिचय था। अमुक खालेवाले वृक्षपर चार जंगली मुर्गियाँ और एक मुर्ग रातको बसेरा लेता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है ; उससे आगे कोई बीस क़दमपर कलचिराड़ पक्षीका जोड़ा रहता है, और सड़कके अमुक घुमावपर मीठे करौंदेका पेड़ है—ये सब बातें मुझे मालूम थीं। सड़कसे नीचे भिलंगनावाले तट और उसकी दीर्घकाय चट्टानें मेरे विशेष आकर्षणकी वस्तुएँ थीं। नदी-तटवर्ती चट्टानोंपर, अकेले बैठकर, मैंने अपने जीवनके अनेक सुखद स्वप्न देखे हैं, और वहींसे यौवन-मदमाती भिलंगनाका अश्रुपूर्ण करुण रुदन तथा उसकी कटि-भंगी छटा देखी है। उसके कल-कल निनादमें मैंने, वहींसे, संसारकी असारताका गान सुना है ; सड़कसे ऊपर पर्वतश्रेणियोंके ऊँचे अंचलोंमें बालरविकी अपार छटा देखी है ; और दूसरी ओर तीतरपाँखी बदलीमें शशीकी आँखमिचौनीका मज़ा भी लूटा है। सैपर्स अहातेके पश्चिमवाले कोनेसे एक मील तक सड़क धनुषाकारमें सुषुप्त-सी पड़ी है, और नीचे भिलंगना उसकी प्रत्यंचा है। इस प्रत्यंचाके पूर्वी छोरपर ऊपरको दयारा है। दयारेसे यदि कोई प्रकृति-प्रेमी अपनी आँख उठाकर देखे, तो एक विचित्र ही छटा दृष्टिगोचर होती है। भिलंगना क्या है, मानो शेषनाग नगरकी रक्षाके लिए वक्ररूपमें पड़े हुए रोम-रोमसे फुफकार रहे हैं।

दयारेका एक दूसरा आकर्षण था वहाँपर बाघका आना ; पर दयारेमें जिन लोगोंकी पहुँच थी, उनके होते हुए मेरा वहाँ बिना बुलाये जाना शिष्टाचारके विरुद्ध था, और यदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दख़लदरमाक़ूलातका साहस भी करता, तो किस बूतेपर ! हाँ, यदि मैं स्वयं उन लोगोंसे बाघकी तलाशमें या प्रतीक्षामें वहाँ बैठनेको कहता, तो वे इनकार न करते। ऐसा मेरा ख़याल है ; पर पूछता कैसे ? थोथे मान (False prestige) की केंचलीका पर्दा जो दिमाग़पर पड़ा हुआ था। कहते हैं, केंचलीसे साँपको कष्ट होता है। जब तक केंचली उतर नहीं जाती, तब तक वह अन्धेकी भाँति फिरता है—उसकी असली आँखें ढक जाती हैं। मनुष्योंमें भी व्यक्तिगत मान-सम्बन्धी थोथी केंचली बहुधा चढ़ी रहती है, और वास्तविक परिस्थिति-रूपी नश्तरसे कटकर वह उतर जाती है ; अथवा काईकी भाँति फटकर फिर आ जाती है। भीतरसे तो तबीयत करती थी कि वहाँ बकरा बाँधकर बाघ मारनेका प्रयत्न करूँ ; पर किसीसे कहनेका मेरा साहस न होता था। इसी प्रकार उधेड़-बुनमें सुबह और शाम होती रहती, और दयारेमें बाघके लिए बैठनेका विचार विचाररूपसे आगे न बढ़ता।

× × × ×

कभी-कभी मनुष्यकी वर्षोंकी मुरादें ऐसे पूरी हो जाती हैं, जैसे अनेक वर्षोंके देवी-देवताके पूजनके उपरान्त किसी ग़रीब किसानके विवाहका आना। स्वभावानुसार मैं एक दिन टहल रहा था और हवाई क़िला बनाता हुआ ध्यानावस्थित चला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाता था। ऊटपटाँग विचारोंमें एक बार सोचा कि आगे मोड़पर तीन लाख रुपयेके नोट कोई भूल गया हो, तो झट उठा लूँ, और त्यागपत्र देकर ग्राम-संगठन-कार्य करने लगूँ। इस अनधिकार चेष्टाके होते ही विचारके चक्रमें 'ब्रेक'-सा लगता और अन्तरात्मा कहती—"परद्रव्येषु लोष्ट्रवत्। तुझे दूसरेका—बिना परिश्रमका धन लेनेका क्या अधिकार?" पापात्मा कहती—"यह मूर्खोंकी दलील है। पड़ी हुई चीज़पर तेरा अधिकार है। ग़रीबी संसारमें निकृष्टतम पाप है। रुपया किसी प्रकार एकत्र कर ले, फिर धर्म कमा लेना।" इसी मानसिक द्वन्द्वमें—फ़ज़ूलके पापमें—लिप्त चला जा रहा था कि कुछ ऐसी भनक-सी मालूम हुई, मानो कोई पीछेसे पुकार रहा हो कि मास्टर साहब, तनिक खड़े रहिये, आपसे काम है। मेरा ध्यान तो कहीं और था, और समगतिसे मेरी टाँगें शरीरको धीरे-धीरे आगे बढ़ाये लिये जा रही थीं, मानो शरीरमें कूक-सी भर दी हो। तल्लीनता—एकाग्रतामें मनकी विचारशक्ति आतशी शीशेकी किरणोंकी भाँति एक बिन्दुपर लग जाती है। आवाज़से मानो विचार-किरण अवरुद्ध हो गई हो। सिरको कुछ हिलाया, मानो आँखोंपर से कूड़ा हिलाकर गिराया हो, और पीछे मुड़कर जो देखा, तो एक आदमीने हाथका झाला देकर कहा—"मास्टर साहब खड़े रहिये।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं रुक गया, और सोचा कि प्रातःकाल ही यह क्या बला आई। कहीं दरबारसे कोई काग़ज़ तो नहीं आया। आवाज़ सुनकर मैं रुका। चपरासी पास जो आया, तो मेरा चेहरा क्रोधसे तमतमा गया। मैंने उसे महाराजका चपरासी समझा था। उसीकी-सी आवाज़ मालूम हुई थी। महाराजके चपरासीकी आवाज़पर न खड़ा होना दरबारका अपमान समझा जाता। रियासतोंमें और विशेषकर पिछड़ी हुई रियासतोंमें महाराजके चपरासीके बड़े मानी होते हैं; पर वह तो बन-विभागका चपरासी था। उसे मेरे साथ बदतमीज़ी करनेका साहस क्यों हुआ? बदतमीज़ी तो मुझे महाराजके चपरासीकी भी असह्य थी। ख़याल किया, सीधा-सादा पहाड़का आदमी है। सुनूँ तो क्या बात है। दम लेकर उसने कहा कि कन्सरवेटर साहबने मुझे आपके घर भेजा था कि आपसे कह दूँ कि दयारेमें एक बाघ आता है। उसके मारे लोगोंके नाकमें दम है। कन्सरवेटर साहबके वह सात बकरे खा गया है।

बाघका नाम सुनकर मेरी क्रोधाग्नि ऐसे शान्त हो गई, मानो एक अंगारेपर घड़ों पानी डाल दिया हो। जैसे चिड़िया पड़े हुए दानेको विचित्र दृष्टिसे देखती है, वैसे ही मैंने उसकी ओर ध्यान देकर कहा—"सात बकरे खा गया!"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चपरासी—"हाँ साहब, सात बकरे खा गया और अभी मरा नहीं।"

मैं—"मारने कौन बैठा था?"

चपरासी—"....सिंह और अन्य कई शिकारी।"

मैं—"पहले दिन कितने बकरे मारे थे?"

चपरासी—"घरमें दो बकरे थे। एकको मारकर खा गया और दूसरेको अधखाया छोड़कर चला गया।"

मैं—"तो फिर उस अधखायेपर कोई बैठा था?"

चपरासी—"नहीं साहब, बैठा तो कोई नहीं। अधखाये बकरेको तो एक डोम ले गया। कन्सरवेटर साहबने गाँवसे अपने लिए एक बकरा और मँगाया, और उसको बन्द करके रखा; पर न मालूम बाघने किवाड़ कैसे खोल लिये, और बकरा उठा ले गया।"

मैं—"बकरा उसने खाया कहाँ?"

चपरासी—"पासके खालेमें।"

मैं—"तब फिर उसे मारनेके लिए लोग कब बैठे?"

चपरासी—"कन्सरवेटर साहबने तब एक और बकरा मँगाकर...सिंहको दिया। उन्होंने उसे खालेमें बाँधा और पास लालटेन भी रखी। बाघ आया और बकरा ले गया। ग्राफ़से लालटेनका शीशा और टूट गया।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं (कुछ सोचकर)—"शेष चार बकरे कैसे खा गया, यह भी बता दो।"

चपरासी—"अरे साहब, क्या पूछते हो! मेरी उमर साठ वर्षकी होने आई। जन्मभर जंगलातकी नौकरी की। बीसों बाघ मरते देखे; पर ऐसा बाघ मैंने न कभी देखा और न सुना........"

मैं (बात काटकर)—"तुमने तो आल्हा गा डाली। यह बताओ कि बाक़ी चार बकरे कैसे खाये गये, और...सिंहके अतिरिक्त उसे मारनेके लिए और कौन-कौन बैठा?"

चपरासी—"बाक़ी चार बकरोंको वह एक-एक करके चार दिनमें ले गया। एक दिन तो चार बन्दूक़वाले इस प्रकार बैठे कि सबकी गोलियाँ एक ही ओरको पड़ें। बाघके आनेका रास्ता एक ही ओरसे था। बकरा खालेमें बाँधा गया। लालटेन रखी गई, पर बाघ बकरेपर बिजलीकी तरह टूटा और बकरेको ऐसे उठा ले गया, जैसे बाज़ बटेरको ले जाता है।"

मैं—"तो फिर फ़ायर भी नहीं हुआ होगा?"

चपरासी—"अरे साहब, चाँदमारी-सी कर डाली। सबकी सब नालें दाग़ दीं।"

मैं—"और वह घायल तक न हुआ!"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चपरासी—"घायल होता तो हमला करता। ख़ूनका खोज मिलता। बाघ क्या है, जादूगर है।"

मैं—"और कौन बैठा ?"

चपरासी—"खिसियानपनके मारे वे तो फिर नहीं बैठे। दो सैपर्स बैठे। उनका बैठना ही था कि बाघ कहींसे आ कूदा। गोलियाँ चलीं। बाघ बकरेको ले गया। गोली बकरेके लगी। बाघकी वह ढाल बना।"

मैं—"यह कैसे जाना कि गोली बकरेके लगी ?"

चपरासी—"अगले दिन प्रातःकाल खोजा तो ख़ूनकी धारका खोज मिलता गया। शिकारी खुशीके मारे आपेसे बाहर हो गये, और बन्दूकें भरकर सावधानीसे खोजपर चले। सबका यह ख़याल था कि बाघके पेटमें चोट लगी है, और वह आगे मरा हुआ मिलेगा, आध मीलकी दूरीपर एक झाड़ीके पास बकरेके खुर और सींग मिले।"

मैं—"शिकारियोंको इतना अनुभव न था कि घायल बाघको अपनी जानके लाले पड़ते हैं। यदि बाघ घायल हो जाता, तो बकरा वहीं मरा हुआ या सिसकता हुआ मिलता। हाँ, तो कन्सरवेटर साहबने क्या कहा है ?"

चपरासी—"उन्होंने कहा है कि कृपा करके मास्टर साहब भी आकर आज़मा लें। बकरा बाँधनेको तैयार मिलेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कन्सरवेटर साहब कहते थे कि वह दरबारमें भी सूचना देनेवाले थे कि सैपर्सको भेजकर बाघ मरवा देना चाहिए, नहीं तो किसीकी जानपर आ बनेगी। कहीं आदमीका ख़ून उसकी दाढ़को लग गया, तो वह रुद्रप्रयागके मनुष्य-भक्षीसे अधिक ख़ूँख़ार बन जायगा।"

मैं—"अच्छी बात है। देर होती है। कन्सरवेटर साहबसे जाकर कह देना कि मैं आऊँगा। बकरा तैयार रहे। मैं दिनमें ही आ जाऊँगा।"

चपरासी फ़ौजी सलाम करके चला गया और मैं ख़ुशी-ख़ुशी घर आया। शिकारका मेरा शौक़ व्यसनमें परिवर्तित हो रहा था। व्यसनी पहले थोड़ी मात्रासे प्रारम्भ करता है, और फिर बिना गहरी छने उसे आनन्द नहीं आता। इन्द्रिय-जन्य सुख—चाहे वह किसी इन्द्रियका हो—रबरकी भाँति घटाया-बढ़ाया जा सकता है। यह सब कुछ जानते हुए भी मैं शास्त्रविद्याकी अपेक्षा शस्त्रविद्यामें अधिक तल्लीनता (चित्तवृत्ति निरोध) पाता था। एक बाघ मारकर, अधिक नहीं तो, इतना प्रसन्न तो होता ही था, जितना कि पूर्वकालमें वैयाकरण सूत्रोंकी एक मात्रा घटाकर सुखी होते थे।

घर आकर सोचता रहा कि बाघको मारनेके लिए क्या उपाय करना चाहिए। बकरा बाँधा और बाघ आकर उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ले गया, और बकरा मेरी ही गोलीसे मारा गया, तो बड़ी बुरी बात होगी, मुँह दिखानेका ठौर न रहेगा। तब फिर क्या किया जाय? अपना बकरा मोल लें? ऐसा करना भी अनुचित था, क्योंकि बकरा लिया और बाघने उसे न भी मार पाया, तो वह लक्ष्मीदत्तजीकी हाँड़ीको गरम करता। इसके सिवा कन्सरवेटर खीझे बैठे थे। कई बकरोंकी बलि चढ़ा चुके थे। एक और सही, बात कौन-सी थी।

नौकरसे पं० लक्ष्मीदत्तको कहला भेजा कि स्कूल चलनेसे पहले वह मुझसे मिलें, बाघकी खबर आई है। मेरे साथ ही खाना खायँ, तो और भी अच्छा है। घंटाघरकी ओर देखा, तो स्कूलके लिए चालीस मिनट बाक़ी थे। पन्द्रह मिनटमें ड्राइंग-मास्टर लक्ष्मीदत्तजी आ जायँगे, तब तकके लिए मैं लेट रहा, और यह सोचने लगा कि बाघको मारनेका कौनसा ढंग निकाला जाय। बाघके दाव-पेंचको समझ लेना आवश्यक था। दिल्लीपति पृथ्वीराजने मुहम्मद ग़ोरीके दाव-पेंच नहीं समझे, और ग़ोरीने चौहान-शिरोमणिकी कमज़ोरी—जीतके उपरान्त सतर्कताका अभाव और पराजित शत्रुको तुच्छ समझनेकी कमज़ोरी—को ऐसा समझा कि अवसर पाते ही उसने चौहान-विजयकी धवल-कीर्तिको कलंकित कर दिया। वीर लड़े; पर शेर जालमें फँस चुका था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बावके छलनेके लिए भी उसके स्वभावसे काम लेना था। पड़ा-पड़ा सोचता रहा और मुँहसे यह गुनगुनाता रहा—

"सच कह दूँ ऐ बिरहमन, गर तू बुरा न माने;
इस बुतकदेके सारे बुत हो गये पुराने।"

बावको मारनेका कोई नवीन ढंग ही निकालना पड़ेगा। पुराने ढंगोंसे तो बहुतोंने शर्म उठा ली थी। उपाय निश्चयकर मैं उठना ही चाहता था कि लक्ष्मीदत्तजीके पैरोंकी आहट हुई।

× × × ×

सायंकालके चार बजे पं० लक्ष्मीदत्त एक लेंडी कुत्तेको ज़ंजीरसे बाँधे मेरे पास आ गये। कुत्तेके नाख़ून जो गिने, तो बाईस निकले। कुत्तोंके प्रायः अठारह नाख़ून होते हैं। बीस नखवाले कम होते हैं, और गाँवोंमें बीस-नखा कुत्तेको प्रायः बीसा कहते हैं। बाईस नखवाला कुत्ता मैंने पहले नहीं देखा था। बाईस-नखे कुत्तेको पाकर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ। यह एक शुभ शकुन था। भीतरसे तबियत करती थी कि दयारा पहुँचनेपर भरा घड़ा भी मिल जाय। मनुष्य अपनी शुभ कामनामें अशुभकी आशंका नहीं करता। छोटे बच्चेकी भाँति अपने जीवनकी योजना बनाता है; घरुआ-पतुआका-सा स्वांग रचता है, और सृजनहार उसके इस खेलको पानीके बुलबुलेकी भाँति फोड़ देता है, या असम्भवको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्भव कर देता है। हम लोग भी बाघ मारनेका वरुआ-पतुआ-सा बना रहे थे। मैंने दोनों बन्दूक़ें ले लीं, और कारतूस जेबमें डाले। लक्ष्मीदत्तजीने कुत्ता लिया, और दो फालतू ज़ंजीरें और दो मज़बूत रस्सियाँ भी ले लीं। हम लोग घरके पिछवाड़ेसे निकले, सड़कसे होकर नहीं। शिकारी जब शिकारको जाता हो, तो उसे कभी न टोके। यदि कोई पूछे—"क्यों साहब, आज कहाँ जा रहे हैं, क्या शिकार होगा?" तो शिकारी कुढ़ जाता है। इस टोककी रोकके लिए ही हम लोग पीछेसे गये। दयारा पहुँचकर कन्सरवेटर साहबसे अभिवादन किया। पहलेकी मुलाक़ात विशेष न थी। एक बार हम लोगोंने उनके यहाँ चाय पी थी। पहाड़पर इतना परिचय काफ़ी होता है। कुत्ता देखकर वे बड़े चकराये। दत्तात्रेयका रूप धरकर हम लोग वहाँ पहुँचे थे। सबसे पहले यही बात हुई कि कुत्ता क्यों लाया गया। मैंने उन्हें समझाया कि हम लोग अपने भाग्यकी परीक्षाके लिए आये हैं। खालेमें न बैठेंगे, और न बकरा ही बँधेंगे। बाघके रसगुल्ले—कुत्ते—से काम लिया जायगा। यदि बाघ कुत्तेको ले भी गया, तो कोई बात नहीं। कन्सरवेटर साहबको हमारी बात कुछ जँची नहीं, उनकी मुखाकृति इस बातको प्रकट कर रही थी; पर हम लोग अपनी बातपर दृढ़ थे। सबसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले हम लोगोंने कुत्ता बाँधनेका स्थान निश्चय किया। बाघ जब इतना मूर्ख हो कि कोलाहलमें से भी बकरा उठा ले जाय, तो उसके लिए जंगलमें क्या बैठना? पर ऐसे बाघ कम ही होते हैं, इसलिए हम लोगोंने कुत्तेको मकानके पास ही, अमरूदके पेड़के पास बाँधना निश्चय किया, और अपने लिए दोतल्लेपर दालानमें एक कम्बल बिछा लिया, और सामने लकड़ीकी बाड़पर ओटके लिए कम्बल डाल दिया। बैठनेका स्थान बनानेकी कोई कठिनाई नहीं पड़ी। घरमें जाकर बैठ रहे; पर कुत्तेका बाँधना शेष था, और वही परमावश्यक था।

बाघ आता अवश्य था, और बकरा ले जाता था। फिर बकरे या कुत्तेको इतना कड़ा क्यों न बाँधा जाय कि बाघ कितनी ही शक्ति लगाये—चाहे कुत्तेकी बोटी-बोटी भी उड़ा ले जाय—पर उसका रस्सा न टूटे। हमने यही सोचा कि बाघ कुत्तेको वहीं भले ही मार जाय; पर झपट्टा मारकर, रस्सी तोड़कर, उसे न ले जा सके। एक बात और थी, वह भी बड़ी विचारणीय थी। उद्वेगमें आकर अन्धाधुन्ध फ़ायर करना भी मूर्खता थी। हम लोगोंने इन्हीं दो बातों—अन्य शिकारियोंकी भूलों—से लाभ उठाया। मैं तो बन्दूक़ हाथमें लिये खड़ा-खड़ा देख रहा था, और कुत्ता और बकरा बाँधनेमें सिद्धहस्त पं० लक्ष्मीदत्तजी कुत्ता बाँधनेमें लगे थे। पहले तो कुत्तेके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गलेमें चार लड़ की रस्सीका कालर डाला, और फन्दा डालकर चौलड़ी रस्सीको अमरूदके पेड़में कसकर बाँध दिया। कुत्तेकी दाईं और बाईं ओर दो खूँटे ख़ूब गहरे गाड़े और कुत्तेको दोनों ज़ंजीरोंसे जकड़ दिया; पर इतने ही से हम सन्तुष्ट न थे। यदि कुत्ता बैठ जाय और भौंके नहीं, तो कदाचित् बाघको पता भी न चले कि उसका रसगुल्ला इतना निकट है। उसका भी उपाय सूझ गया। रुईकी पूनीसे जैसे धागा निकलता है, वैसे ही मन-रूपी चर्ख़ा घुमानेसे विचार-रूपी तागोंका ताँता पुर जाता है। कुत्ता बैठ कैसे सकता था? उसकी कमरसे एक रस्सी बाँधी, और उसको पेड़की शाखासे बाँध दिया। इन सब कृत्योंके उपरान्त लक्ष्मीदत्तजीने कुत्तेके कान मलने प्रारम्भ किये। काँय-काँय और हाँव-हाँवकी ध्वनिसे आसपासका जंगल प्रतिध्वनित हो उठा। मैंने हँसते हुए मना भी किया कि कान न मलो; पर लक्ष्मीदत्तजीके अंगूठे कुत्तेके कानपर ही थे। मैंने पास जाकर कुत्तेको छुड़ाया, और कहा कि क्रूरताकी भी सीमा है। हम लोगोंका तमाशा है, और उसे कष्ट हो रहा है।

लक्ष्मीदत्त—"सीरम निकालनेमें, बधिया करनेमें और क्लोरोफ़ार्म सुँघानेमें कौन कम कष्ट होता है? हमारा उद्देश तो एक आततायीको मारना है। इसी उद्देश-सिद्धिके लिए तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन क्रूर साधनोंको स्वीकार करना पड़ रहा है। यहाँ सत्याग्रहसे काम न चलेगा।"

मैं—"सत्याग्रहपर फब्ती क्यों छोड़ते हो? महात्मा लोग बाघसे भी सत्याग्रह कर सकते हैं। स्वामी रामतीर्थ काले साँपको पकड़ लेते थे। बाघ उनके पास आ जाता था। अब ऊपर चलो, नहीं तो बाघ हाथ न आयेगा।

× × × ×

मकानके ऊपर बैठे हुए हम लोग आँखें फाड़-फाड़कर कुत्तेके चारों ओर देख रहे थे। कुत्तेसे तीस गज़की दूरीपर पूर्वकी ओर स्टूलपर लालटेन रखी थी, जिससे कुत्तेके चारों ओर उजाला था। हाँ, स्टूलके चारों ओर अँधेरा था, और अमरूदके पेड़की पींड़की छाया कुत्तेके पश्चिमकी ओरको पड़ रही थी। कुत्तेको अपने अटूट बन्धनोंसे कष्ट हुआ, और उसने रोना प्रारम्भ किया। दस-पन्द्रह मिनट तक तो वह अनवरत-रूपसे करुण-क्रन्दन करता रहा। रोग अथवा कष्टकी प्रारम्भिक अवस्था बड़ी दुखदायिनी होती है। बादको समयके आवर्तमें पड़कर अभ्यास, सन्तोष और टिमटिमाती हुई दीप-शिखा-सी आशासे, दुखी और रोगी कष्टको भोगने लगते हैं, इसीलिए, पुराने रोगकी अवस्था (Chronic stage) में प्रारम्भिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवस्थाकी अपेक्षा कम कष्ट होता है। कुत्तेको भी इस अटल नियमका पालन करना पड़ा।

हम लोग घूर-घूरकर और आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे कि कहीं बाघकी झाई पड़े। थे तो हम मूर्तिवत्, पर हमारी आँखें अजगरकी-सी हो रही थीं। घूरने और ध्यानसे देखनेसे आँखोंपर ज़ोर पड़ता, तो उन्हें तनिक बन्द करके उनपर हाथ फेरते, और फिर उसी मुद्रामें हो जाते। सारी प्रकृति निद्राकी तन्द्रामें मस्त थी। हमारे पीछे कमरेमें कन्सरवेटर साहब भी सो रहे थे। घंटाघरकी टन-टनसे मालूम हुआ, दस बजे थे; पर हिमालयके शिखर और भिलंगनाकी अन्धकारमय घाटी निर्जीव-सी थी। हिमालय कुछ गतिरहित-सा है। शिव और पार्वतीके कालसे हिमाच्छादित शिखरोंपर कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। हाँ, नदियोंने उसकी छातीपर आरे-से चलाये हैं, पर वह फिर भी मस्त है। सामने भिलंगनाने ही हज़ारों वर्षसे उसे सताया है, पर वह टससे मस नहीं होता। भारतका वह उत्तरी चौकीदार है और भारतके स्वार्थके लिए ही वह पड़ा है। अपने कर्तव्यपर अटल है, चाहे कोई उसे चीरे अथवा मारे, उसके परम रम्य शिखरोंपर चाहे तपस्या करो अथवा प्रणय-केलिमें समय बिताओ। भारतीय इतिहासका नाटक देखते-देखते वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बूढ़ा हो गया। उसे साधारण-सी घटनाओंकी पर्वाह नहीं, हमारे कृत्यका फिर उसे क्या खयाल हो सकता था और क्यों होता ?

"What is the use of it all,
These lips, these flowers,
These dew-dimmed eyes,
These star kissed skies,
This Wine, these Music mad hours."

है तो सब निस्सार, पर तारागण-चुम्बित नीलाम्बरके नीचे हमारे निकट, कुत्तेके पास रखी लालटेनके पास, अर्ध अँधेरेमें हमारे खेलके मुख्यपात्रकी झाईं-सी दिखाई दी। ध्यानसे जो देखा, तो कोई काली-सी चीज़ अँधेरेमें से अर्ध अन्धकारकी ओर बढ़ी। बाघके अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है ? कुत्तेकी घ्राणशक्ति बड़ी प्रबल होती है, पर उसने तो अपने निकटवर्ती शत्रुको सूँघ ही न पाया। कदाचित् वायु कुत्तेकी ओरसे बह रही होगी। मैंने ड्राइंग-मास्टरको संकेतसे बताया कि हमारी चीज़ हाज़िर हो गई, पर ड्राइंग-मास्टरकी आँखें बहुत तेज़ नहीं हैं। उत्तरमें उन्होंने मेरा हाथ दबाया, जिसका अर्थ था कि उन्होंने तो बाघको नहीं देख पाया। दिखाई मुझे भी नहीं पड़ता था, पर एक काली-सी चीज़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अँधेरेमें बैठी थी। मैं उसपर गोली भी चला सकता था, पर मुझे भी एक आशंका हुई। यदि बाघ होता, तो इतनी देर तक प्रतीक्षा क्यों करता? कुत्तेपर टूट ही पड़ता; पर सभी बाघ तो प्रतीक्षा करते हैं। लोगोंको मालूम यही होता है कि अमुक बाघ सीधा तीरकी भाँति आया। इसी असमंजसमें मैंने अपनी बन्दूककी नाल ऊपरको की। नाल ऊपरको हुई ही थी कि एक ऐसा दृश्य सम्मुख आया, जो जीनवमें कभी न देखा था और फिर देखनेको तो क्या मिलेगा। बाघ वहाँसे एकदम झपटा और उसने बाएँ पंजेसे कुत्तेकी गर्दन और ज़ंजीरको इतने वेगसे धक्का मारा कि यदि कुत्ता ढीला बँधा होता, तो उस झपेटेके मारे वह गज़ों आगे जा गिरता, पर कुत्ता तो ड्राइंग-मास्टरके क्रूर हाथोंसे बाँधा गया था। बाघ ज़ंजीर और रस्सीसे ऐसा टकराया कि उसकी पिछली टाँगें ऊपर आसमानको हो गईं। ऐसी बढ़िया क़लाबाज़ी मैंने कभी न देखी थी। छुटपनमें, स्कूलमें, मोर-चाल और बिच्छू-चालका मुझे भी अभ्यास था, पर ऐसी बढ़िया क़ला कभी नहीं देखी थी। तीव्रगतिसे दौड़ते हुए इंजनके मार्गमें कोई भारी रोक आ जाय, तो इंजन पटरीसे उतर जायगा। बाघकी गति भी एकदम रुक गई, पर उसने अपने शरीरको ऐसा सँभाला कि पिछली टाँगोंके ऊपर होते ही उसने एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरी क़ला खाई और क़लामुंडी खाता हुआ आगे अमरूदके पेड़की छायामें पहुँच गया। हँसीके मारे पेटमें बल पड़े जाते थे। मुँहमें रूमाल ठूँसकर हँसी रोकी। बाघकी घात ख़ाली गई, और वह बहुत खिजा, नहीं तो दूरसे कुत्तेपर क्यों गुर्राता। हँसीका एक कारण बाघका गुर्राना भी था। छायामें से कुत्तेको धमका रहा था कि उसके साथ ऐसी बेअदबी क्यों की। कुत्तेकी तोमड़ी बन्द थी। उसकी घिग्घी बँध गई थी। हू-हू, काँय-काँय और दिखावटी क्रोधसे—वह क्रोध जो कोई मरते समय दिखाता है—वह अपनी स्थितिका परिचय दे रहा था। बाघ थोड़ी देरके लिए गुर्राना बन्द कर देता, और एकदम भागकर पेड़की पींड़ तक आता। कुत्तेकी आँखें कान और सारा शरीर उसी ओरको लगा रहता। ज्यों ही बाघ झपट्टा मारकर आता कि उसकी काँय-काँय और हाँव-हाँव करुणा और क्रोधके अन्तिम बिन्दु तक पहुँच जाती। बन्धन खोलनेके लिए पैर पीटता, पर वह बाँधा गया था यम-पाशमें, और यम-यातना वह भुगत भी रहा था। यदि किसी प्रकार उन बन्धनोंसे उसकी मुक्ति भी हो जाती, तो वह बाघका स्वादिष्ट व्यालू बनता। बाघके लिए वह पसीनेकी कमाई होता। हम लोग समझ गये थे कि भयके कारण कुत्तेके स्नायु और अवयव ढीले पड़ गये होंगे। छोटे बच्चे बहुत धमकाये जानेपर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेशाब कर देते हैं। बाघको देखकर अनेक शिकारियोंकी भी, कभी-कभी, यही गति हो जाती है।

बाघ तेज़ीसे पेड़की पींड़की छाया तक आता और गुर्राकर लौट जाता। कुत्ता कातरतासे खीस निकालकर अपने दाँत दिखाता, अपने हथियारोंका प्रदर्शन करता और हँव-हँव जारी रखता; बाघ गुर्राकर फिर लौट जाता। यह तमाशा—यह चील-झपट्टा—लगभग पन्द्रह मिनट तक रहा। लालटेनके प्रकाशमें वह आता न था। कुत्ता अपना मुँह इधर-उधरको कर नहीं सकता था, क्योंकि कड़ा बँधा था। यदि कुत्तेका मुँह बाघकी मारकी सीधी रेखासे इधर-उधर होता, तो वह अपनी थापसे उसपर वार करता। इसके अतिरिक्त बाघ जब अपने शिकारपर वार करता है, तो सर्वदा गर्दनपर वार करता है, और अपने पंजे और दाँतोंसे एक ही चोटमें अपने भोजनके जीवको बेक़ाबू कर देता है। जब गाय और बैल तक उसके प्रहारको नहीं झेल सकते, तो बकरे और कुत्तेकी बात ही क्या! मुँहके चार कीले गर्दनमें; अगले पैरके चार-पाँच नाख़ून—पैने छुरे—गर्दनकी एक ओर और उतने ही दूसरी ओर, पीठपर बोझा और पिछले पैरोंके नाख़ून मांसमें घुसे हुए और ये सब एकदम, एक साथ—इस प्रलयकारी प्रहारसे कौनसा गाय-बैल बच सकता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। केवल वही, जिसकी आयु हो और जिसको भगवान बचाना चाहें। यदि उस प्रहारसे कोई बच भी जाय, तो नख-विषसे पशु नहीं बचता। बाघ अपने स्वाभाविक प्रहारको नहीं कर रहा था। पहला वार उसका ख़ाली गया था, कदाचित् वह, इसीलिए, कुत्तेको अँधेरेमें से खींचना चाहता था; पर वह ऐसा न कर सका, इसीलिए वह रुक-रुककर चील-झपट्टेका आश्रय ले रहा था। एक और बात थी। बाघ घायल होकर तो न आव गिनता है न ताव, और जहाँ भी, और जैसे भी, उससे बन पड़ता है, आक्रमण करता है; पर अपने शिकारमें वह सावधानीसे काम लेता है। गायको मारना हो, चाहे बकरेको, जंगलमें वह बड़ी सावधानीसे और सोच-समझकर वार करता है। बाघ अँधेरेमें होकर कुत्तेपर झपटता था; पर वार होनेसे पहले कुत्ता भूँक पड़ता था। बाघको भी कोई आशंका हो जाती थी। कदाचित् इसी कारणसे वह आगे न बढ़ रहा था, अथवा उसे हमारे बैठनेका पता चल गया होगा।

दस-पन्द्रह मिनट उपरान्त चील-झपट्टेका खेल थम गया। तूफ़ान आनेसे पूर्व वायुका वेग रुक जाता है। मरनेसे पहले जीवन-ज्योति दीप-शिखाकी भाँति कुछ अधिक प्रज्वलित हो जाती है। मैंने भी यही समझा, और ठीक समझा कि बाघ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पैंतरा बदल रहा है। वह पीछेसे वार करेगा; पर आध घंटे तक कहीं कुछ दिखाई न पड़ा। कुत्तेने भी समझा कि बला टल गई; पर वह बला टलनेवाली न थी। मैंने जो घूरकर आँखें गड़ाईं, तो स्टूलके पूर्व ओर पहलेकी-सी कोई वस्तु प्रतीत हुई। मैंने संकेतसे लक्ष्मीदत्तजीसे कहा कि फ़ायर करता हूँ, चाहे लगे या न लगे। बन्दूक़में ग्राफ़ भरे थे। बाईं आँख बन्द की और अनुमानसे निशाना बाँधा। रातके अँधेरेमें निशाना लेनेका ढंग यह होना चाहिए कि बन्दूक़की नाल ऊँचेसे नीचे करता चला जावे और जब शिकार नलीकी सीधमें आवे, तभी घोड़ा दाग़ दे। ऐसा करनेसे निशाना प्रायः ठीक पड़ता है। नहीं तो रातमें निशाना लगाना बड़ा कठिन है। अगली मक्खीपर थोड़ी रुई भी लगाना अच्छा है। मैंने ऐसा ही किया। बन्दूक़के चलते ही बाघ कुत्तेकी ओर होकर भागा। लक्ष्मीदत्तजीने भी फ़ायर किया, पर वह नीचे पड़ा। प्रकाशमें धूल उड़ गई।

बन्दूक़की आवाज़ सुनकर कन्सरवेटर साहब आ गये और पूछने लगे—"बाघ मरा?"

बड़ी झेंपसे मैंने कहा—"फ़ायर तो मैंने कर दिया है, पर लगा नहीं मालूम होता।"

"तो आप बैठे रहिये। वह बड़ा पाजी है। फिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आयेगा। जब तक कुत्ता बँधा है और वह जीवित है, तब तक तो वह आये विना मानेगा नहीं।"

"तो आप सो जाइये। अभी तो बारह बजे हैं। हम लोग डटे रहेंगे।"—मैंने कहा।

× × × ×

गोली लगी कि नहीं लगी, इस प्रश्नका उत्तर नहीं मिल रहा था। अन्दाज़से ही तो फ़ायर किया था। गोली लग भी सकती है और ख़ाली भी जा सकती है। चित्त चलायमान हो रहा था। नीचे उतरकर हम लोग देखने आये। ऐसा करना मूर्खता और पागलपन था। फ़ायर करनेके उपरान्त चाहे गोली लगे अथवा नहीं, कभी भी, रातमें, स्थानसे नहीं हटना चाहिए और न बोलना चाहिए। अनेक शिकारी ऐसी भूलोंसे मारे गये हैं, पर शिकारी भी तो बुद्धिहीन हो जाया करते हैं। सफलताकी उत्कट लालसा शिकारियोंको भी इन्द्रियोंके अधीन कर देती है। लालटेनसे चार-पाँच गज़ तक देखा कि कहीं रक्तकी बूँदें मिलें; पर कुछ भी दिखाई न दिया। यदि घायल बाघ उस समय हमपर टूट पड़ता, तो हम कुछ न कर पाते।

हम लोग फिर ऊपर आ बैठे, पर बाघ न आया। प्रातःकाल होने आया। बसन्तऋतु थी। पक्षियोंका प्रभात-संगीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रारम्भ हो गया। साथ ही प्रणय-केलि भी। स्वकीया और परकीया नायिकाएँ वृक्षोंकी शाखापर फुदकने लगीं। नर पंडुक गर्दन फुला-फुलाकर अपनी मानिनी पंडुकीको मनाने लगा। हम लोग नीचे उतरे। तबीयत तो यह करती थी कि कन्सरवेटर साहबसे बिना मिले ही निकल जायँ, पर हमें एक सन्तोष था कि बाघ हमसे कुत्ता न छीन सका।

लोटा लेकर लक्ष्मीदत्तजी शौचको गये। मैंने सोचा कि भिलंगनाकी करारवाली झाड़ियोंमें ही एक नज़र मार लूँ। घायल होकर बाघ वहीं मरने न चला गया हो। बन्दूक़ लेकर मैं उधर चला। वहाँसे भिलंगनाकी करार तीस गज़पर होगी। यह सोचकर कि घायल बाघ सीधा निकटवाली झाड़ीकी ओर जायगा, मैं उधर गया। वहाँ पहुँचते ही मुझे बाघका पंजा दिखाई पड़ा, मैं एकदम पीछे लौटा और घोड़ा चढ़ा लिया, पर बाघका पंजा चित पड़ा था। जीवित होता, तो पंजा चित न होता। मैंने यह समझकर कि बाघ मरा पड़ा है, एक कंकड़ मारा। वह टससे मस न हुआ। मैंने वहींसे आवाज़ लगाकर ड्राइंग-मास्टरको बुलाया।

दयारेमें चारों ओर ख़बर फैल गई कि बाघ मारा गया। कन्सरवेटर साहबने हम लोगोंको अनेक बधाइयाँ दीं। बाघ लाकर कुत्तेके पास रखा गया। कुत्ता मरे बाघको भी देखकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घबराता था। कुत्ता खोल दिया गया। उसके कहीं भी कुछ चोट न थी।

बाघ लदवाकर हम लोग घर आये। पड़ोसकी स्त्रियाँ भी उसे देखने आईं। खाना खाकर मैं उसे सेठ मुरलीधरजीकी कुटियापर ले गया। मेरे विद्यार्थी गंगाधर तड़ियालने बाघकी फोटो ली। मेरी बिटिया कमलाने बाघके पास खड़े होनेकी बड़ी हठ की। मैंने उसीके हाथमें बन्दूक़ दे दी। कमला और मैं बाघके शवके पास खड़े हो गये। लोग उसको अब भूल गये हैं, पर उसका चित्र मुझे अब भी उसके 'चील-झपट्टे' का स्मरण दिलाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़लीफ़ाके हाथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोटरकी बैटरी जब समाप्त हो जाती है, तब बिजली-घरमें उसे 'चार्ज' करते हैं। चाकू जब मोथरा हो जाता है, तब पत्थरपर उसे पैनाते हैं। मेरा जब मस्तिष्क और शरीर थक जाता है और जब चिन्ता और कष्टरूपी ग्राह समूचा निगल जानेपर उतारू दीख पड़ता है, तब मुझे मानसिक और शारीरिक बैटरीको चार्ज करनेके लिए प्राकृतिक डायनमो—वन और पर्वतोंकी शरण लेनी पड़ती है। जंगलों और खेतोंमें—मनुष्योंसे दूर—पक्षी और पशुओंकी किलोलों, झूमती हुई डालियों और लहलहाते हुए खेतों और चिड़ियोंकी चहकमें मुझे जो आनन्द प्राप्त होता है, वह कोरे पांडित्यके बोझसे दबी हुई आत्माओंकी वाणीमें नहीं मिलता। जंगलोंमें—आधुनिक सभ्यताके कीटाणुओंसे दूर—हृदयकी हिलोर और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कल्पनाकी उड़ानके लिए कोई बन्धन नहीं होता, इसीलिए सालमें दो-एक बार भीतरवाला कहता है—

"Away, away, from men and towns,
To the wild wood and the downs—
To the silent wilderness
Where the soul need not repress
Its music."

पर प्राकृतिक प्रांगणसे आनन्द ग्रहण करनेके लिए विशेष प्रवृत्ति होनी चाहिए। रातमें फोटो लेनेवाले केमरेका लेंस विशेष ही होता है। प्राकृतिक छटामें मुझे वही मज़ा आता है, जो मोरको घन-गर्जनमें, बतख़को तैरनेमें और शिकारीको शिकारका पीछा करनेमें। प्रकृति-दर्शनके समय कहीं साथमें रायफ़ल और बन्दूक़ हो, तो फिर क्या कहना। पांडित्य और योगका जहाँ मिलन हो, उस अवस्थाकी बात ही निराली है।

यदि आपमें प्रकृतिके निरीक्षणकी ओर थोड़ासा भी झुकाव हो, तो उसमें आपको ऐसे-ऐसे दृश्य देखनेमें आएँगे, जो मानव-संसारमें दीखना मुश्किल है। राजनैतिक दाँव-पेंच, आत्म-रक्षाकी विकलता, युद्धकी चालें, स्वावलम्बन—कौनसी ऐसी बात है, जो मानव-संसारसे दूर प्रकृतिके इस स्वच्छन्द साम्राज्यमें न होती हो?

× × × ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोतीझलाके उपरान्त मैं अपनी कुटियासे चालीस-पचास गज़की दूरीपर तबीयत बहलानेके लिए बैठा था। मेरी दृष्टि जामुनके वृक्षकी ओर थी कि इतनेमें, दाईं ओरसे, ईखके खेतके कोनेसे, श्यामोली चिड़ियाकी चटचट-चटरर-चटरर सुनाई पड़ी। दूसरी श्यामोलीने वही क्रोध और विरोध-भाव प्रकट किया। पासमें सतभैया फुदक-फुदककर अपनी जीविका-प्राप्तिमें लगे थे। ये स्वभावसे ही डरपोक और कोलाहलकारी होते हैं। चटचट चटरर—आतंक सिगनल—सुनकर सबके सब नीमकी डालियोंपर जा बैठे और चटचट-चटररमें उन्होंने भी अपनी कर्णकटु "कोंहै कोंहै कैं कैं" ध्वनि मिला दी। गिलहरी भी सँभल गई और पूँछ ऊपर-नीचे करती हुई बोलने लगी—"तिरिप तिरिप तिर्पिरो।" इस सम्मेलनसे आकर्षित होकर चार-पाँच बड़ी गलगलें ऊपर आकर "क्कैं क्कैं" कर मँडराने लगीं। यह सब कुछ आतंक-सूचक था। पक्षियोंका कोई शत्रु वहाँ अवश्य ही होगा, नहीं तो ये अनेक स्वरमें—एक ही विरोध-पूर्ण और आतंक-सूचक स्वरमें—क्यों बोलते? हो न हो, साँप या न्यौला होगा; पर मार्चके प्रारम्भमें प्रातःकालके समय साँप नहीं हो सकता। ईख अभी उगी न थी। कोनेपर घास थी। उसीमें कुछ था। वही आतंकविन्दु हो रहा था। अपनी गर्दन ऊँची करके जो मैंने देखा, तो पिछली टाँगोंपर बैठा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न्यौला चारों ओरको ताकता हुआ दिखाई पड़ा। मेरा अनुमान ठीक था, और पक्षियोंका विरोध युक्तियुक्त। उस ओरको मैं ज्यों ही बढ़ा, त्यों ही पूँछके बाल फुलाये हुए नकुल महाराज तीन-तेरह हो गये। चिड़ियोंने थोड़ी देर तक अपनी दैया-तोबा जारी रखी, बादको वे केवल प्रस्ताव पास करनेवालोंकी भाँति अपनी दैनिक क्रिया—दैनिक भोजनकी टोहमें लग गईं। पशु-पक्षियोंमें संग्रहकी लालसा नहीं होती। संग्रह करना—जिससे भविष्यमें काम आवे—सामूहिक शक्ति और सभ्यताका सूचक है। मानव-समाजमें तो पूँजी बड़प्पनका पैमाना-सी हो गई है; पर वह सुखका पैमाना नहीं हो सकती। पशु-पक्षी जो संग्रह नहीं करते, जो अपनी भूख बुझाकर सायं-समय आनन्द-सागरमें लीन हो जाते हैं, अगले दिन फिर उसी धुनमें लगते है, और आनन्दसे विचरते हैं। यह दो-चारमें केन्द्रीभूत अतुल संपत्ति अनेक युद्ध और पापोंकी मूल है।

कोनेमें जाकर देखा, तो एक अधखुदे छेदमें न्यौलेके नख-चिह्न अंकित थे। चिड़ियोंने उसे देख पाया, तो फिर हाय-हाय मचा दी। हाय-हायका हो-हल्ला चाहे थोड़ी देरके लिए कारगर हो, पर है वह घृणा और हिंसासूचक। आत्म-बलका प्रदर्शन उसमें नहीं है। आख़िर न्यौलेको भी मैदान छोड़कर भागना पड़ा। खुदाई बन्द करके देखभालमें वह वैसे ही बैठा था और शायद भागनेवाला ही था। मेरी गतिसे वह हवा हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं लौटकर अपनी जगह जा बैठा। थोड़ी देर बाद क्या देखता हूँ कि न्यौला एक मरी हुई चिड़ियाकी गर्दन दबाये खेतकी मेंडपर खींचता चला आ रहा है।

मैं आश्चर्यसे यह तमाशा देख रहा था। चिड़ियाका डैना कहीं दूब-घासमें उलझ जाता, तो न्यौला झटका मारकर उसे खींच लेता था। चिड़ियाको खींचता जाता था और स्वाभाविक शिकारीकी भाँति अपने रक्तवर्ण तथा सतर्क नेत्रोंसे चारों ओर देखता भी जाता था। मैं यह सब देख रहा था। इतने ही में मेरे भाईकी कुतिया 'रूबी' वहाँ आई। न्यौलेको मरी चिड़िया घसीटते देखकर पहले तो वह चकराई, और फिर पूँछ ऊँची करके और गर्दनके बाल फुलाकर धीरे-धीरे गुर्राई और झपट पड़ी। गाँवके लेंडी कुत्ते पहला हमला तो ऐसा करेंगे, मानो बोटी-बोटी नोच ले जायँगे, पर कहीं एक भी डंडा या लाठी लग जाय, तो काँय-काँयकी धुनिसे और कुत्तोंको भी दब्बू बना देंगे। तब और कुत्ते इधर-उधरको 'हू' और 'घू' करते हुए चले जाते हैं। कोई-कोई थोड़ी दूरपर खड़े होकर अखलोर करते हैं, मानो मैदान मार लिया हो, और दो-एक दीवारोंके कोनोंको सूँघकर अपनी राह लेते हैं। रूबी भी इसी तरहकी देहाती कुतिया थी। न्यौलेपर धावा बोल दिया। दो-एक बार पहले वह न्यौलेको भगा चुकी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ख़याल करती होगी कि इस न्यौलेकी बिसात ही क्या है ? मुँहमें पकड़कर चबाकर फेंक दूँगी। दस-बारह छलाँगोंमें न्यौलेके पास पहुँच गई। कुतियाके इस आक्रमणके पूर्व ही उसकी रोषपूर्ण आकृति देखकर न्यौला अपनी लूटको छोड़ दुम दबाकर भागा था; पर रूबी कर्ण-मार्गसे भागकर दस-बारह छलाँगोंमें उसके पास पहुँच गई।

न्यौला स्वभावसे ही शिकारी और वीर होता है, और अब तो आत्म-रक्षाका प्रश्न आ गया था। भोले पक्षी तक सताये जानेपर मारते हैं। धूलि तक चोटीकी ख़बर लेती है। फिर न्यौला! और यह सबसे बड़ा और बूढ़ा न्यौला, जिसको मैं 'ख़लीफ़ा' कहता था! बचनेका उपाय न देखकर वह अकस्मात् लौट पड़ा और 'झिक्क चख़' करके पहले तो उसने कुतियाको विभीषिका दी; पर कुतिया तो उसे कदाचित् चूहा समझती होगी। कुतियाका मुँह न्यौलाकी ओर बढ़ा और उधरसे भी चोट हुई। ख़लीफ़ा उछला और कुतियाका सारा क्रोध काफ़ूर हो गया। काँय-काँय और कूँ-कूँ करती हुई मैदान छोड़कर भागी। मेरे सामने होकर निकली, तो उसकी नाकसे ख़ूनकी धार बह रही थी, और न्यौला अभी तक उसकी नाकमें अपने दाँत गड़ाये और अपने पँजोंके नखोंसे कुतियाकी थूथनीको पकड़े लटका चला जा रहा था। भयंकर परिस्थिति थी। कुतिया चिल्लाती फिरती थी और वीर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न्यौला उससे चिपटा हुआ था। मैंने कुतियाको पकड़ा। मुझे देखकर न्यौला कुतियाको छोड़कर पूँछ और शरीरके बाल फुलाये हुए भाग गया। मैंने कुतियाको न्यौलेपर हुलकारा; पर अब वह ज़ोरोशोर कहाँ? कातर-दृष्टिसे पूँछ हिलाकर रह गई।

× × × ×

इस घटनासे दो विशेष बातें हुईं; कुतियाको अयोग्यताका सार्टिफ़िकेट मिला; दूसरी बात यह हुई कि न्यौलेके प्रति हमारी श्रद्धा बढ़ गई। बलिदान, वीरता और त्याग विपक्षियोंके हृदयोंमें भी श्रद्धा उत्पन्न करता है। न्यौला मांसाहारी है; पर वह घी, दूध, मिठाई और रोटीको भी बड़े स्वादसे खाता है। मैंने न्यौलोंको अपनी कुटियाके भीतर आकर्षित करनेका ढंग निकाला। कुटियावाले खेतमें चार-पाँच न्यौले रहते हैं और इधर-उधर घूमा करते हैं। उनके मार्गमें बताशे, रोटी और अन्य खाद्य-सामग्री रखनी प्रारम्भ की। फिर तो न्यौले प्रतिदिन कुटियामें आने लगे। पालतू तो नहीं हुए, पर उनकी झिझक खुल गई। कुटियाकी एक ओरसे आकर सबका निरीक्षण कर जाना उनका साधारण काम था, और ख़लीफ़ा तो बड़ी शानसे निरीक्षण करता था। झींगुर और अन्य कीड़ों-मकोड़ोंको वह खा जाता था। बर्तनोंकी तलाशी तो वह खुफ़िया पुलिसवालोंके समान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेता था। कहीं वन्द बर्तनमें कोई घीकी सामग्री न हो—यह लालच उसके लिए बहुत था। एक बार एक कोनेवाले छेदको सूँघकर उसने खोदना प्रारम्भ किया। थोड़ी देर खोद लेता था और फिर बैठकर देखता था कि हममें से कोई उसकी ओरको आ तो नहीं रहा है। खोदते-खोदते दस-बारह मिनट हो गये और तब छेदमें से चीं-चींकी आवाज़ हुई। न्यौला एक बड़े चूहेको पकड़ लाया और उसे लेकर भाग गया। इस प्रकार मियाँ ख़लीफ़ा कुटियामें आते और कुछ-न-कुछ सफ़ाई कर जाते। हम लोग न्यौलेको इन्सपेक्टर-जनरल कहने लगे।

× × × ×

प्रकृतिका ऐसा नियम है कि किसी अवस्था अथवा वस्तुका विपरीति रूप भी वहीं होता है। समुद्र-मथनमें विष मिला, तो साथमें अमृत-कलश भी आया। जन्म होता है, तो उसका दूसरा रूप मृत्यु भी होती है। विषधरके साथ-साथ उसका नाशकारी न्यौला भी परमात्माने दिया है। संख्या-विरोध नियम प्रकृतिमें अद्भुत है। वह एक ऐसी विचित्र श्रृंखला है, जो कभी टूटती नहीं; जहाँ साँप होगा, वहाँ न्यौला अवश्य मिलेगा। अपनी कुटियाके निकट कई साँप भी रहते थे। दो-एक साँपोंके पंजर मिले। कदाचित् वे न्यौले द्वारा खाये हुए साँपोंके होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक दिन मैं प्रातःकाल खेतोंमें जा रहा था। अभी कुछ-कुछ अँधेरा था। सामने कोई लकड़ी-सी दिखाई पड़ी। ध्यानसे देखा, तो साँप मालूम हुआ और समीपसे देखा, तो दुमुही—कुचलैंड—निकली। दुमुही अन्य साँपोंके बराबर द्रुतिगामी नहीं होती। उसे कोई भी पकड़ सकता है। कोई-कोई लोग तो उसका घरमें होना शुभ समझते हैं; पर साँपकी भाँति उसका लपर-लपरकर जीभ निकालना और उसकी तेज़ आँखें भयावनी होती हैं। उसमें एक और बात विचित्र है। वह अपने शरीरकी इतनी कड़ी गुँजलकें (Coils) बना लेती है कि उनका खोलना या छुड़ाना कठिन हो जाता है। अँगरेज़ीमें जीव-जन्तुओंपर प्रसिद्ध पुस्तक 'वुड्सका प्राकृतिक इतिहास' है। उसमें लिखा है कि दुमुही प्रायः क्रोध नहीं करती और न आक्रमण करती है। वह आवश्यकतासे अधिक शान्त है। यह ठीक है, पर वह क्रोध भी करती है। उसे पकड़कर पानीमें दो-एक बार फेंको और तब पकड़ो, तो मुँह फाड़कर काटनेका प्रयत्न करती है। उसमें विष नहीं होता; पर किम्बदन्ती तो यह है कि वह बड़ी विषैली होती है। ख़ैर, मैं कुछ आगे जाकर कुएँपर बैठ गया। जिधर दुमुही पड़ी थी, वही मार्ग ख़लीफ़ाके आने-जानेका था। मैं सोचने लगा कि यदि ख़लीफ़ाका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और इसका सामना हो जाय, तो क्या हो ? मैं आध घंटे तक कुएँपर बैठा रहा। इस बीचमें दुमुही लिपटकर बड़ी कठोर इंडुरी मारकर बैठ गई थी। आध घंटेके उपरान्त ख़लीफ़ा साहब आये। मार्गमें लिपटी पड़ी कोई वस्तु देखकर वह दूरसे ही चौकन्ना हो गया। सिर ऊँचा करके और नाक हिलाकर बग़लसे उसे देखा और उसपर टूट पड़ा। ख़लीफ़ाने दुमुहीपर वारोंकी झड़ी-सी लगा दी। वंशपरम्परागत स्वभावसे वह दुमुहीके मुँहको पकड़ना चाहता था; पर दुमुहीने उसको गुँजलकमें ऐसा छिपाकर रखा कि ख़लीफ़ाकी गुँजलपर एक न चली। तब उसने उसकी पूँछपर अपने पैने दाँत चलाये। उसे लोहू-लुहान कर दिया; पर उसे काट न सका। उस ओरसे विफल होकर उसने शरीरके अन्य भागोंपर चोटें कीं। नीचे थोड़ा घुसकर कई जगह काट दिया। सब कुछ हुआ; पर मुँहपर उसकी पहुँच न हुई। ख़लीफ़ाने उसे उलटने-पलटनेके लिए दाँव-पेच भी किये; पर वह तो अभेद्य दुर्ग था। पत्थरमें से भी कहीं तेल निकलता है ? लगभग आध घंटेके उपरान्त ख़लीफ़ाने अपना सिर हिलाया और दुमुहीको उपेक्षा और घृणाकी दृष्टिसे देखता हुआ चला गया। ख़लीफ़ाके हाथ ओछे पड़े। उसके वार निकम्मे प्रमाणित हुए। विजयश्री दुमुहीके हाथ रही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आश्विनके महीनेमें दोपहरके समय नीमके नीचे चारपाईपर पड़ा 'टुर्गनेव' की पुस्तक पढ़ रहा था। पानीके लिए उठा और पानी पीकर गिलास रख रहा था कि मेंडके पार, दूसरे खेतमें, ज्वारके कुछ पेड़ हिलते हुए दिखाई पड़े। आँखें उस ओर हुईं। चौकन्ना होकर जो देखा, तो कुछ समझमें न आया। वायुका वेग इतना प्रबल न था। और वायुका वेग इतना प्रबल भी होता, तो ज्वारके अन्य पौदे भी हिलते; पर नहीं, तीन-चार पौदे ही झुक-झुककर किसीको प्रणाम-सा कर रहे थे। क्या था? कुछ समझमें न आता था। कौतूहल तो था ही, तिसपर शिकारीका कौतूहल और उस समय पढ़ भी रहा था टुर्गनेवका शिकार-वर्णन। वर्णनको रखकर उठा और चुपचाप पाँव साधकर उस ओर गया। मेंडके समीप पहुँचा और झुककर मैंने अपना सिर धीरे-धीरे ऊपरको दूसरी ओरको किया, जिससे वहाँका कोई जीव डरकर भाग न जावे। दूसरी ओर दृष्टि पड़ी, तो मैं दंग रह गया। धामिन-जातिका एक मोटा साँप ज्वारके तीन पेड़ोंसे लिपटा हुआ था। ढाई-तीन गज़ लम्बा होगा। उसके फनसे रुधिर बह रहा था। एक आँख उसकी ग़ायब हो चुकी थी। ज्वारके पेड़ोंसे लिपटा हुआ धीरे-धीरे फुसकार रहा था—फी ३ (प्लुत) फी ३। मानो कह रहा था—ज़ालिम, अब तो छोड़ दे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुक्ति दे। मैं हारा, तू जीता। तोबा है, हज़ार बार, जो अब मैं तेरे मार्गमें आऊँ; पर उसका शत्रु था ख़लीफ़ा, जो विजयी सेनापतिकी भाँति चंगुलमें आये हुए अपने शत्रुको छोड़नेवाला न था। ख़लीफ़ाकी कुछ धज ही निराली थी। क्रोधमें वह आपेसे बाहर था। उसका शरीर दुगुना प्रतीत होता था। साँपने तो मुझे देख लिया था; पर अपनी वर्तमान परिस्थितिमें वह मुझे अपना त्राता समझता होगा। मैंने जान-बूझकर अपना सिर आगे बढ़ा दिया। ख़लीफ़ा एकदम खेतमें भाग गया। साँप जहाँका तहाँ त्रिशंकुकी भाँति टँगा था। ख़लीफ़ाके कारनामे देखनेके लिए मैं छिपकर आगे निकल गया, और पासवाले आमके पेड़पर चढ़ गया। थोड़ी देरमें ख़लीफ़ा साहब तशरीफ़ लें आये; पर थे रुद्र-रूपमें। दाएँ-बाएँ देखकर शत्रुकी स्थिति देखी। साँपका फन उसकी पहुँचसे दूर था। ज्वारके पेड़पर वह चढ़ नहीं सकता था। साँपका एकमात्र आश्रय था अपने फनको न्यौलेसे दूर रखना, सो ज़मीनसे वह दो गज़ ऊँचा और पेड़से अलग था। साँप तो पेड़ोंसे लिपटा हुआ था; पर उसने अपना फन पेड़से दूर रखा था। चोटसे बचनेका उपाय ही यही है कि चोटकी मारसे दूर रहा जाय और बचावके सभी साधनोंको प्रयोगमें लाया जाय। दुखी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साँपने इसीलिए अपना फन दूर रखा था; पर ख़लीफ़ा पुराना खिलाड़ी था। उसने ऐसे अनेक रण जीते होंगे। वह कोई नौसिखिया नहीं था। फन तक पहुँचनेका कोई साधन न पाकर, वह उछलकर उसकी पूँछपर चढ़ गया, और आगेको बढ़ा; पर साँपने एकदम अपनी पूँछ पलटकर उसको गुँजलकमें फाँसना चाहा। ख़लीफ़ा इस चालको ताड़ गया, और वहींसे नीचे कूद पड़ा। इसी प्रकार उसने बीस-पचीस बार ऊपर चढ़नेका प्रयत्न किया; पर प्रत्येक बार उसे विफल होना पड़ा। अन्तमें एक बार वह तीव्र गतिसे ऊपर चढ़ा, और साँपके फनको जाकर पकड़ लिया और चबचबा डाला। न्यौले और साँपके बोझसे पौदे झुक गये, और ख़लीफ़ाके पैर ज़मीनपर टिक गये। साँप इतना बड़ा था कि यदि किसी प्रकार वह न्यौलेको गुँजलकमें पकड़ पाता, तो उसका भुरता कर देता; पर 'यदि'की जो कठिनाई थी। न्यौला साँपके फनपर ही आक्रमण करता है। साँप उसको काटने और फाँसनेका हज़ार प्रयत्न करता है; पर न्यौलेके पैंतरोंके आगे साँपकी एक नहीं चलती। फिर ख़लीफ़ा ऐसे युद्धोंमें निपुण था। फनको मुँहमें पकड़ लिया। अब उसके सामने प्रश्न था लिपटे साँपको पेड़ोंसे खींचना। रुक-रुककर, अपनी संचित शक्तिको लगाकर वह साँपको खींचता था। ढंगोंसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतीत होता था कि नाग-पाशको खोलना कोई सरल काम नहीं; पर न्यौला डटा था। न मालूम कितने बार उसने साँपको खींचा। उधर साँपका सम्पूर्ण फन ख़लीफ़ाके मुँहमें था। रुधिरसे पेड़ और न्यौला रंजित थे। इतनी देरके तुमुल युद्धने साँपकी शक्तिको क्षीण कर दिया; वे कड़े बंधन, जिनसे साँप पेड़ोंपर लिपटा हुआ था, ढीले पड़ गये, और साँपकी लोथ नीचे गिर गई। ख़लीफ़ाने तनिक विश्राम लिया, और इधर-उधर देखकर फिर खींचनेमें लगा, और खींचकर उसको घासमें आमके पेड़के नीचे ले आया और खाने लगा। एक तिहाई भागसे वह सन्तुष्ट-सा हो गया; शेषको वह खेतमें घसीट ले गया।

× × × ×

तीन-चार दिन उपरान्त साँपका पंजर आमके वृक्षके नीचे मिला। ख़लीफ़ाके मैंने अनेक हाथ देखे थे; पर ख़लीफ़ा-सर्पके इस तुमुल युद्धसे मेरी यह धारणा हो गई है कि न्यौला बाँका लड़ाका है, और यदि कहीं वह बिल्लीके बराबर होता, तो शेर और बाघको भी लड़ाईमें हरा देता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्मशानके सींग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी कुटीपर, खेतमें बाहर, चारपाईपर पड़ा हुआ एक समाचारपत्र पढ़ रहा था, और पास ही बड़े भाई चाय बना रहे थे। इतनेमें एक चमार कुछ दूरपर आ खड़ा हुआ और बोला—"पाइ लगूँ पंडितजी।"

मैं—"खुश रहो। क्या बात है? क्या कोई खेत काट ले गया, जो सुबह-ही-सुबह आया है।"

चमार—"नाँइ तो पंडितजी। खेतु-बेतु तो कोई नाँ काटि ले गयौ। परि—"

मैं—"परि क्या? बोलता क्यों नहीं?"

चमार—"बोलूँ का? बड़े पंडितजी इल्ल (हल्ला) करिंगे।"

मैं—"तू कुछ कहे भी! आख़िर बात क्या है?"

चमार (धीरेसे)—"आजु मैंने एक बड़ौ मतबारौ (बढ़िया) कस्सैला हिन्नु (काला हिरन) देखौ ऐ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं—"बस, यही बात थी! कहाँ देखा है?"

चमार—"खेरियाके ऊसरा माँऊ (ओर) जो मरघटा ऐ; मैंऐं (वहीं) बु रहतु ऐ। तुमाई सौं (आपकी क़सम) पंडितजी, वाके सींग हूँ का बताऊँ! गंगाधाई (गंगाकी सौगंद) जि मालिम पत्ति ऐ कै काऊने मूँड़ पै दुऐ लठियाँ गाड़ि दई होंइ। और बु कारौ किट्टि है। परि सैज (सरलतासे) में मराई ना खबैया।"

मैं—"अच्छी बात है। आज तो देर हो गई है, कल देखा जायगा। तू उस ओर जो बन्दूक़की आवाज़ सुने, तो आ जाना। ऐसा न हो कि कहीं तेरे लिए मैं बैठा रहूँ।"

चमार—"हाय कऊँ (कभी) ऐसौ है सकतु ऐ! हमाऔ तौ और काम बनैगो। आगि दयौ सिबरो तो खेतु खाऐं जातु ऐ। जो मरि गयौ, तौ ऐसे अकालमें लरिका-बारिनको पेटुई भरैगो। तो हूँ जातूँ। पालागैं।"

× × × ×

अगले दिन प्रातःकाल उठा और रायफ़ल तथा छै-सात कारतूस लेकर खेरिया गाँवकी ओर बढ़ा। चार-पाँच मील जाना था, फिर शिकारका समय भी तो सुबह या शाम ही होता है। हिरन रातको खुले मैदानमें रहते हैं, और दो-एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन्तरी बने निगहवानी करते रहते हैं, जो भयके समय सबको सचेत कर देते हैं। प्रातःकाल जाड़ेके दिनोंमें, धूप चढ़े, ओस छूटने तक खुली जगहोंमें धूप लेते रहते हैं, फिर चरनेके लिए खेतोंमें घुस जाते हैं। दोपहरके समय दो-एक टोली या दो-चार हिरन खुले मैदानोंमें भी आ जाते हैं। सायंकालको फिर खेतोंमें से निकलकर बाहर आ जाते हैं। इस विचारसे कि श्मशानवाला काला हिरन कहीं इधर-उधर न निकल जाय, मैं तेज़ीसे लपकता हुआ श्मशानकी ओर बढ़ा।

शिकार खेलनेमें अनेक दोष हों; पर लाभ भी अनेक हैं। 'कछु तुन्द घटे, कछु मेद कटे' के अतिरिक्त प्रकृतिका आनन्द और सूर्योदयसे पूर्व उठनेका मज़ा शिकारी ही जानता है। शीतकालका समय था। भंगीके घरकी ओरसे 'अरुण शिखा धुनि कान' पड़ रही थी—'कुकड़ूँ कूँ २, कुकड़ूँ कूँ २।' प्रभाका आभास था। जल्दी उठनेवाले कोई-कोई आदमी तालाबकी ओर शौचादिके लिए जा रहे थे। मैं भी रायफ़ल लिये चला जाता था। आगे चलकर देखा, तो दो गीदड़ हड्डियोंपर जुटे थे। मुझे देखकर भाग गये। धीरे-धीरे पृथ्वीपर चहल-पहल दिखाई पड़ने लगी।

एक गाँवमें होकर निकला, तो लोगोंको अलावपर तापते पाया। गज़ी-गाढ़ेकी एक-एक चद्दर ओढ़े, सिरसे अँगोछा या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पिछौरा लपेटे ताप रहे थे। कोई फू-फू करके आग तेज़ कर रहा था, तो कोई तम्बाकू पी रहा था। मुझे वहाँ होकर जाते देख सबने कहा—"पालागैं पंडितजी।" सबसे 'खुशी रहो' कहकर मैं आगे बढ़ने लगा। यह देखकर उनमें से एक बोला—"आऔ पंडितजी, नैंक तापि लेउ। हाथ-पाँय ठिठुरि गये हौइंगे। आऔ तापि लेउ।"

मैं—"नाँइ निठुर गये। चलिबे सूँ देहमें गरमी आवति ऐ। रुकिबेसूँ देर है जाइगी।"

एक—"आज सबेरे ईं सबेरे कां जात औ?"

दूसरा (उसकी ओर दाँत पीसकर और धीरेसे)—"सिकारी कूँ खुपटत नाएँ (टोकते नहीं)।"

मैं—"तुमैं ना मालिम पत्ति कां जात ऐं।"

एक बूढ़ा—"तो बु तौ मराई खातु ना पंडितजी। दस-बीस पोत (बार) तो पिरोजाबाद (फ़ीरोज़ाबाद) के सीसगरा (चूड़ी बनानेवाले) हैरानु है चुके ऐं। बा पै निरी गोलीऊँ चलाईं, परि सिब्बरी खाली गईं। बा दिना, (एक लड़केकी ओर देखकर) अए बा दिना, जा दिना हमाएं कुआकी तार भई, ता दिना डिपटी सा'ब सिबरे दिन हैरानु भये, परि बु हाथ नाँइ आयौ। बु तो मरघटाको हिन्नुऐ सो बापै गोली असरु थोरैंऊ कत्ति ऐ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं—"ना कत्ति तौ न सई। देखें तौ।"

सब लोग—"पालागैं।"

'खुश रहो' कहकर मैं चल दिया। मेरे कानमें यह भनक पड़ी—'देखौ, पंडितजी कैसे सूदे ऐं। गाँम वान्निसूँ गाँमकी बोली बोल्तऐं। हमाऐं बु लोधेकौ लौंडा है, सो नैक पढ़ि आऔऐ, सो मुगली वानी बोल्तु ए और पास्सी (फ़ारसी) की टाँग तोंरैं ई डात्तुऐ।' गाँववाले विकट समालोचक होते हैं, और राय क़ायम करनेमें और राय बदलनेमें उन्हें देर थोड़े ही लगती है। जब बातें करनेपर आते हैं, तो अपनी बातको वेद-वाक्य समझते हैं। गाँवके आसपास किसी रईसका बढ़िया मकान देख लिया, तो उनमें यहाँ तक बातें हो जाती हैं कि क्या आगरेका ताजमहल उसकी हवेलीसे भी अच्छा है। कोई छोटासा जंकशन स्टेशन देख लिया, तो बस उसकी प्रशंसामें ही दूसरेसे भिड़ पड़ेंगे और दूसरे मनुष्य द्वारा बताये स्टेशनको तुच्छ समझेंगे। मेरे पीछे उन्होंने अपने उथले समालोचना-तालमें न मालूम कितने ग़ोते लगाये होंगे। मैं यह सोचता चला जाता था कि हिरन नहीं मरा, तो बड़ी भद्द होगी। चार-पाँच बार मैं ही प्रयत्न कर चुका हूँ; पर मेरे फ़ायर करनेकी बात लोगोंको मालूम न थी। यह बात मैंने चमारसे भी नहीं कही थी; पर मैं अपनी असफलताका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कारण जानता था। बन्दूक़की गोलीपर जादू-टोना नहीं चलता। भगवान कृष्णके पैरमें बहेलियाका तीर तक न चूका, तो फिर आजकलकी रायफ़लोंसे निकली गोलीको कौन रोक सकता है? जब निशाना ठीक है, तब गोली निशानेपर क्यों नहीं लगेगी? पहले फ़ायर इसलिए ग़लत पड़े कि दो तो भागतेमें लिये थे। सोचा था, कहीं अन्धेके हाथ बटेर लग जाय, और दो-एकमें दौड़-धूपके कारण दम फूल जानेसे हाथ हिल गया होगा। आज या तो फ़ायर ही नहीं होगा, और होगा तो सँभालकर होशियारीके साथ। बस, इसी उधेड़बुनमें श्मशान समीप आया। निर्दिष्ट स्थान अभी चार फ़र्लांग होगा। यह ख़याल करके मैं रुका और सोचने लगा कि किस ओरसे चलना चाहिए, जिससे हिरन देखने न पाये और मैं मारकी दूरीपर पहुँच ही जाऊँ। श्मशानकी ओर पूर्वसे जाना ठीक तै पाया। हिरन श्मशानके पश्चिमी कोनेकी ओर प्रायः रहा करता था, क्योंकि पूर्वकी ओर खेत थे, जहाँसे उसपर लुक-छिपकर आक्रमण किया जा सकता था। पश्चिमकी ओरसे खुला था, इसलिए, उधरसे उसके ऊपर वार करना कठिन था।

× × × ×

बैठ-बैठकर, एक-एक क़दम सम्हाल-सम्हालकर रखता,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

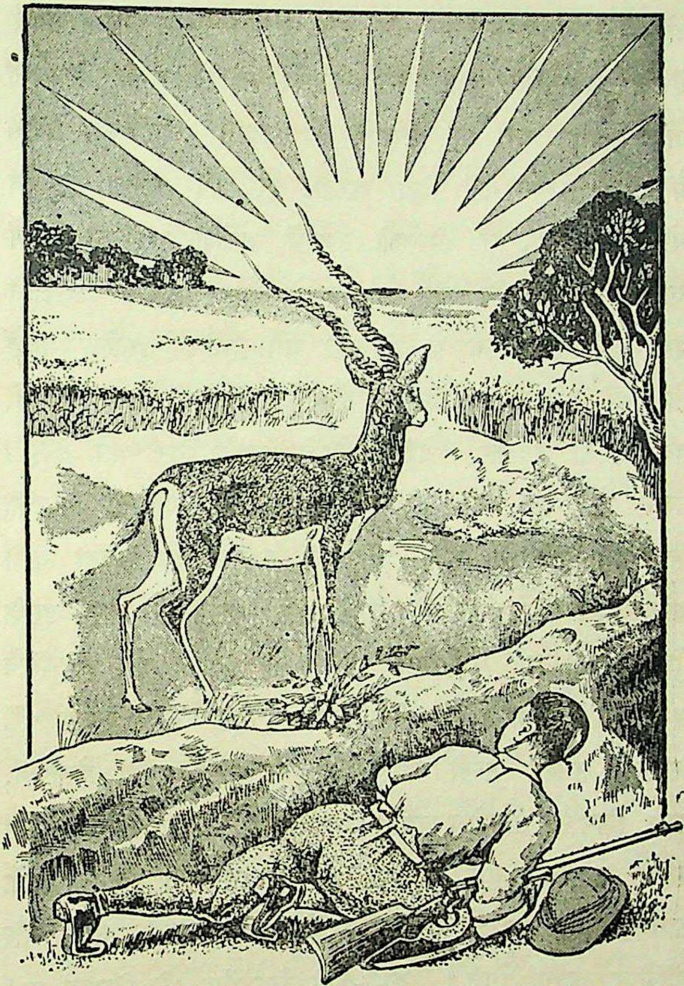

"नजर जो पड़ी, तो सामने एकान्तवासी, पीड़ित, विरक्त, हिरनियोंसे उपेक्षित तथा बहिष्कृत काला हिरन खड़ा था।" [पृष्ठ १९८]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओसमें और मिट्टीसे टाँगे और जूते लथपथ किये, गेहूँके खेतकी मेंडके सहारे होता हुआ, उस स्थानसे, जहाँपर हिरनके मिलनेकी आशा थी, चार सौ गज़पर आ गया। चार सौ गज़से मैं प्रायः फ़ायर नहीं किया करता; पर यदि दूरीको एक इंच भी कम करता, तो हिरनकी नज़रमें आनेका भय था। मैं चाहता तो था कि तीन सौ गज़से फ़ायर करूँ; पर इतने पास पहुँचनेके मानी थे हिरनको भगा देना। इसलिए पहले तो वहीं बैठकर दम लिया, और जब साँस ठीक हो गई, तब सिरको टेढ़ाकर, गेहूँके पौदोंके सहारे उस ओर देखा। नज़र जो पड़ी, तो सामने एकान्तवासी, पीड़ित, विरक्त, हिरनियोंसे उपेक्षित तथा बहिष्कृत काला हिरन खड़ा था। अपूर्व दृश्य था। सूरजकी ताज़ी और सुखदायिनी किरणें उसके मुँहपर होती हुई पड़ रही थीं। वह पूर्वकी ओर मुँह किये खड़ा था। किरणें उसकी बग़लपर पूरी नहीं पड़ती थीं, इसलिए, उसकी काली बग़लें और भी काली प्रतीत होती थीं, मानो किसीने तारकोल लगा दिया हो। हिरन निस्तब्ध खड़ा था। कदाचित् धूप ले रहा था। कभी-कभी एक-एक करके कान हिलाता था; प्रातःकाल होनेसे मक्खियाँ नाक और आँखोंपर आती होंगी। कभी-कभी एक टाँग भी हिलाता था। एक बार उसने पुट्ठेपर खुजलाया भी। पेटकी ख़ातिर वह

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

शीघ्र ही वहाँसे सटकनेवाला था। उसका मुँह मेरी ओर न थां। मैं उसके अगले पुट्ठेपर—हृदयपर—निशाना लेना चाहता था। ग़ज़बका दृश्य था! एक तपस्वीकी भाँति वह अकेला खड़ा था। उसके भाइयोंने—नई जवानीकी मस्ती और उमंगमें—उसे झुंडके नेतृत्वसे न केवल च्युत ही कर दिया था, वरन सींगोंकी मारसे उसे प्रणय-पन्थसे भी वंचित कर दिया था। जब अपनी ढलती जवानीमें उसे और हिरनोंसे मुक़ाविला पड़ा, तो उसे झुंडकी मुखियागीरीसे हाथ धोना पड़ा। उसकी प्रणय-केलिके बाधक हिरनोंने पहले कुछ दिनों तक उसका कुछ ख़याल किया, क्योंकि वे पहले दंडित हो चुके थे; पर जब उसकी जवानीका सूर्य तपकर मध्याह्नको पहुँच गया और धीरे-धीरे ढलने लगा, तब औरोंने उसको निकाल वाहर किया। शक्तिकी ही पूजा होती है। उसकी टाँगें अब इतनी बलवती न रहीं, जो उसे प्रतिद्वन्द्वियोंसे बचा सकतीं। सींगोंमें वह ज़ोर न था, जिसका कोई ख़याल करता। हिरनियाँ भी उसके पास न जाती थीं। गर्दन ऊँचीकर, कानोंको सतरकर, मस्त चाल चलकर उसे अब रिझाना न आता था। हार मानकर उसे अपना झुंड छोड़ना पड़ा, और उसने श्मशानकी शरण ली। वहाँपर खड़ा मानो वह अपनी बीती ज़िन्दगीका सिंहावलोकन कर रहा था। जब पैदा हुआ होगा, उसकी माने कितने प्रेमसे चाट-चाटकर दूध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पिलाया होगा। कुत्तों और भेड़ियोंसे बचानेमें उसे कितनी सावधानी रखनी पड़ी होगी। बड़े होकर जवानीमें एक पूरे झुंडका स्वामी होकर उसने कैसे सुख भोगे होंगे। हाँ, अब वह अपनी वर्तमान बेबसीको ख़ूब समझता था। उस श्मशानमें और हिरन नहीं आते थे। उसके लिए वह श्मशानभूमि ऋष्यमूक पर्वतके समान थी। दरअसल दूसरे हिरनोंके लिए वहाँ कोई आकर्षण भी न था। एक झुण्डके लिए स्थान न था, इसलिए, वह वहाँ अकेला रहा करता। दिन-भर चौकन्ना रहकर मील दो मीलकी परिधिमें खेतोंमें छिपकर चरा करता। शामको अँधेरेमें आता। रात-भर रहकर, सुबह फिर चला जाता। चौकन्ना वह इतना था कि आदमीकी सूरत देखकर भागता था, चाहे वह आदमी शिकारी हो अथवा भिखारी या किसान, इसलिए, वह शिकारियोंके हाथ न चढ़ता था। उसकी खालकी अपेक्षा उसके सींग बहुत अच्छे थे, इतने लम्बे कि उस इलाक़ेमें मैंने वैसे सींग नहीं देखे। हज़ारों मल्लयुद्धोंमें उसने अपने प्रतिपक्षियोंको हराया था। उसके सींगोंके सौन्दर्यपर हिरनियाँ मोह जाती थीं, और मैं भी उन्हीं सींगोंके लालचसे आया था। रायफ़ल भरी थी। चार सौ गज़का निशाना लगाया। हिरन अचल, उसी आसनपर, खड़ा था। सामने उसकी बग़ल थी, मैं घोड़ा (Trigger) खींचनेवाला ही था कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पासके एक खेतसे एक लोमड़ी 'खौ खौ खौ, खौ खौ खौ' बोलती हुई मेरी ओर आ निकली; पर वह उसकी आवाज़का अभ्यस्त था। नर-लोमड़ी मादाका आह्वान कर रही थी। दिसम्बर-जनवरी उनके जोड़ेका समय होता है। लोमड़ी मेंडपर होती हुई ज्यों ही एकदम मेरी मेंडपर मुड़ी, तो मुझे देख दुम दबाकर श्मशानकी ओर भागी। हिरनने चौकन्ना होकर छलांग भरी, और जिस ओरसे लोमड़ी भगी थी, उसी ओर वह खड़ा होकर देखने लगा।

× × ×

फ़ायर हुआ। चारों ओर आवाज़ फैल गई। आसपासके हिरनोंके दिल दहल गये। काला हिरन उछला। ख़ूनके फ़ौवारे चल गये। एक बार वह गिरकर रेंगा। पैर छटपटाता था, और अपने भूशायी शीशको धुन रहा था। गोली लगी थी; पर हृदयपर नहीं—पेटसे तनिक नीचे, इसीलिए, यह घबराहट थी। मैं फ़ायर करके खड़ा हुआ इधर-उधर देखने लगा; पर वहाँपर मेरे निशानेको देखनेवाला प्राकृतिक शक्तियोंके अतिरिक्त और कोई न था। जब मैं हिरनके पास पहुँचा, तब उसके सींग और भी बड़े मालूम हुए। कोई पचीस-छब्बीस इंचके! मैं वहाँ बैठा ही था कि हिरन एकदम चौंककर उठा और दुलकी चालसे भागा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह देखकर मेरे आश्चर्यकी सीमा न रही। मरा-मराया हिरन उठ भागा! बेहद ख़ून पड़ा था; पर कोई आश्चर्यकी बात न थी। गोली अँतड़ियोंमें लगी थी। सब पेट सुन-सा गया होगा। धक्केके मारे गिर गया। मरेगा वैसे भी। यदि मैं वहाँ न आता, तो भी मर जाता; परन्तु मेरे आनेसे उसने अपनी बची-खुची ताक़त लगाई, और उठ भागा। मैंने पीछा किया। चोटके कारण तेज़ तो जा ही नहीं सकता था। आगे-आगे चला जाता था, और मुड़-मुड़कर मेरी ओर कातरदृष्टिसे देखता जाता था। अँतड़ियाँ उसके पेटके बाहर लटक रही थीं। मुँह फाड़कर हाँफने लगा। मुझसे यह दृश्य न देखा गया। यदि किसीको मारना हो, एकदम मारना चाहिए। धीरे-धीरे किसीकी जान लेना बहुत ही बुरा है। झटसे एक दूसरी गोली मारी, और वह धड़ामसे गिर गया।

× × ×

चमार खाल खींच रहा था। ऊपर गिद्ध मँड़रा रहे थे। मांसकी तिक्का-बोटी तो वहीं हो गई; बल्कि बहुतसे उससे वंचित रहे। प्राकृतिक म्यूनिसिपैलिटीके सदस्यों—गिद्धों—को अँतड़ियाँ ही मिलीं।

खाल और सींग रखाकर गाँवकी ओर आया। सींग और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खाल बननेके लिए देहरादून भेजे गये, और बनकर आ भी गये। बहुत बढ़िया थे; पर मुझे उनसे हिरनकी अन्तिम घड़ियोंकी वह कातरदृष्टि स्मरण हो आती थी। उनका अपने पास रखना असह्य था, इसलिए, वह खाल और सींग एक अमेरिकन मित्रको भेंट कर दिये।

अमेरिकामें वे सींग दीवारपर लगे अब भी उस हिरनका स्मरण दिलाते हैं, और कदाचित् मेरे मरनेके बाद भी—जब इस शरीरके पंचतत्त्व उस हिरनके पंचतत्त्वके समान परिमाणुओंसे मिल जायँगे—वे श्मशानके सींग मेरी उस निर्दय हत्याके मूक स्मारक बने रहेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पैने छुरे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीवनसे हाथ धोनेको तैयार रहना साहसकी कसौटी है, और साहस जीवन-गृहका एक स्तम्भ है। जिस शिकारमें जीवन जानेकी आशंका नहीं, वह ऐसा है, मानो ब्रह्मरहित उपनिषद्-पाठ अथवा गृहिणीके बिना गृहस्थ। मैं ऐसा ही महसूस करता हूँ। अन्य शिकारियोंकी यह राय नहीं है। अनेकोंको तो तीतर, बटेर और क्रौंचके शिकारमें भी आनन्द आता है। मेरे ख़यालसे—जो ग़लत हो सकता है—शिकार और जोखिममें पुरुष और प्रकृतिका-सा सम्बन्ध है। शिव प्रकृति बिना—इकार बिना—कोरे शव रह जाते हैं, और शिकार जोखिमके बिना—कम-से-कम मेरे लिए—विकार है। हाँ, परिश्रम और उत्तेजनाकी मात्रा जोखिमहीन शिकारमें कुछ आकर्षण उत्पन्न करती है—और ऐसे शिकारमें स्वार्थकी भावना उत्तेजनाको और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी आकर्षक बना देती है। हिरन मारे जाते हैं अपने मीठे मांसकी ख़ातिर नहीं, वरन उस चर्मके लिए, जिससे परमात्माने उनकी देहको ढका है और जिसपर बैठकर लोग धारणा, ध्यान और समाधिकी ओर प्रवृत्त होते हैं। सींग और खालका लालच, घूमघाम और प्रकृति-दर्शनने न मालूम कितनी बार मुझसे उनका अन्त कराया है। सीताजीके आग्रहसे राम 'परम रुचिर मृग' के पीछे दौड़े थे, और यह महापातकी 'राम' नामधारी भी मगरकी खालके लालचसे—वह भी अपने लिए नहीं, मित्रोंके लिए—और भ्रमण-प्रवृत्तिके कारण गंगा, काली और यमुनाकी ओर दौड़ा करता है। कभी-कभी मनमें द्वन्द्व होता है कि किसी और प्रकार मन बहला ले। चिन्ता और विपत्तियाँ साथ छोड़नेवाली नहीं। वे चिरसहचरी हैं। तू रोता हुआ पैदा हुआ और शायद रोता हुआ ही महायात्रा करेगा। तू ही उनका साथ छोड़। शिकारके क्षणिक नशेमें उन्हें भूलेगा, तो फिर खुमारमें उनकी वेदना अतिविषम होगी; पर वर्षमें एक बार—अधिक नहीं—उधर जाता हूँ। अपने वशकी बात नहीं है। क्या करूँ?—

"फिरता हूँ फेरता है वह परदानशीं जिधर,
पुतलीकी तरह मैं नहीं कुछ अख़्तियारमें।"

× × × ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूस मासके अन्तिम दिनोंकी बात है। मगरके शिकारके लिए यमुनाके किनारे गया हुआ था। नदी-तटसे ठहरनेका स्थान एक मील बीहड़में था। ठहरनेके स्थानसे सात-आठ मीलकी दूरीपर एक दिन घंटोंकी तपस्या और कठिनाईसे दो मगर मारे। खाल निकलवानेमें देर हो गई, इसलिए, मार्ग छोड़कर ऊबड़-खाबड़ नालों (Ravines) में होकर हम लोग पड़ावकी ओर चले। दो-तीन मील गये होंगे कि रक्तवर्ण कम्पित सूर्यने क्षितिजकी चादरमें अपना मुँह ढँक लिया, और श्यामा रातकी परिचारिका गोधूलिने प्रकृतिको अपनी स्वामिनीके आगमनका संवाद दिया। चारों ओरसे मानो साम्राज्ञी रातकी दुन्दुभी बजने लगी। दिनचर इधर-उधर दौड़ रहे थे। प्रकाशकी सत्ता पलट गई थी। हम लोग लपके चले जाते थे। अभी सम्राज्ञी रातका श्याम अंचल दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। सूर्य डूब चुका था; पर दिग्दर्शनके लिए उजाला काफ़ी था। नीलगायके झुंड चरनेके लिए डाँडोंपर आ रहे थे। ख़रगोश हमारी आहटसे बिदककर और भागकर कुछ दूर खड़े हो जाते थे। तीतर झाड़ियोंमें जा चुके थे। ठंड बढ़ रही थी। रायफ़लमें चार कारतूस भरे मैं सैनिक-वेषमें खटाखट चला जा रहा था। शिकारका कोई ख़याल न था, जो बिना आहट किये लुक-छिपकर चलता। मैं तो चाहता था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि पर लग जाते, तो उड़ जाता और पड़ावपर जाकर मगरकी खालोंमें नमक लगवाकर, रायफ़लको साफ़कर, दस-बारह रोटियाँ पेटमें डालता ; पर कल्पनाके परोंसे शरीरमें पर थोड़े ही लग सकते थे। भूख और थकावटमें गपशप भी अच्छी नहीं लगती थी और न बात करनेकी तबीयत ही होती थी। चमार खाल लादे पीछे-पीछे आ रहा था। पीछे मुड़कर उसको देखनेसे ही वह मेरा अभिप्राय समझ जाता था ; पर मेरी चालको एक तो वह वैसे ही नहीं पा सकता था और तिसपर वह लदा भी था। थोड़ी दूर आगे गये कि एक लम्बा-चौड़ा डाँडा मिला। उसकी बग़लकी ओरको नीचे मैदान था। उसके एक कोनेमें कुछ खेत थे। चमारने कहा—"पंडिज्जी, ईखकौ खेतु ऐ। खाउ तो बालंग है कैं निकच्चलो। एकादु तोह्रीऔ।"

मैं—"ठीक कहा। दो-एक खेतका ही तो चक्कर पड़ेगा। भूखसे दम भी निकला जाता है। चलो, पूरबकी ओरसे चलना ठीक होगा।"

यह कहकर हम लोग नीचेको उतरे। जौके पौदे ओसकी मणिमाला पहने रातके शुभागमनके लिए खड़े थे। सरसोंके पौदे झुके हुए कोरनिश-सी बजा रहे थे। खेतको मेंडसे पार किया, तो बीचमें एक नाला दिखाई पड़ा। उस नालेसे दो-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीन फ़र्लांग पार करके पूर्वसे पश्चिमको डाँडेके आगे ईखका खेत था। नाला पश्चिमसे पूर्वको टेढ़ा-मेढ़ा बहा था, मानो वह मैदानकी करधनी हो। नालेके पास पहुँचा ही था कि चमार बोला—"अरे पंडितजी, बु देखौ, कितनौ जैयदु (बड़ा) सूअरं जाई ओरकूँ आइ रहौ ऐ!"

हक्का-वक्का होकर मैंने देखा, तो मुझसे सौ गज़ आगे एक बहुत बड़ा सूअर मस्त दुलकी चालसे—कर्णमार्गसे—पश्चिमकी ओरसे पूर्वको जा रहा था। ओ हो, कितना बड़ा था और उसमें कितनी चर्बी थी! उसकी बड़ी-बड़ी काँपें (Tusks) साफ़ बाहर दिखाई देती थीं, मानो बादलमें आधे दबे हुए दो द्वितीयाके चाँद मुँहमें दवाये जा रहा हो। उसने हमारी उपेक्षा की। सायंकालके समय अपने भोजनके लिए निकला था। फिर दो-चार आदमियोंकी वह क्या परवा करता! उसकी काँपें कम्प उत्पन्न करती थीं। बड़े सूअरपर शेर भी सामनेसे वार नहीं करता। उसकी टक्करको शेर सह नहीं सकता, पर शेर और बाघ इतने फुर्तीले और चालाक होते हैं कि अपने ऊपर सूअरकी चोट होने नहीं देते। जंगलमें जब कभी सूअर और शेर-बाघका सामना हो जाता है, तो सूअर झाड़ी या चट्टानकी ओर पिछाई करके खड़ा हो जाता है और क्षत्रियकी भाँति छाती खोलकर डट जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेर या बाघ ऐसी अवस्थामें सूअरपर वार नहीं करते, और, उसको बहकाकर या भगाकर, पीछेसे उसपर टूट पड़ते हैं।

इतने बड़े सूअरको देखकर मेरा उत्साह जागृत हो उठा, मानो बुझते हुए कोयलोंमें किसीने फूँक मारी हो। भूख तो जाने कहाँ चली गई। रायफ़लको कन्धेसे झट उतार बोल्टसे नालमें कारतूस पहुँचाया। खड़ाखड़की ध्वनिसे सूअरने मेरी ओर मुड़कर देखा, मानो अपनी काँपोंकी शक्तिकी चेतावनी दी हो। वह तनिक रुका और फिर कुछ तेज़ होकर नालेमें चला गया। मैंने उसकी अगाई काटनेके लिए दो आदमियोंको उधर भेजा। नाला टेढ़ा-मेढ़ा था, इसलिए, आदमी भागकर सीधे सूअरके मार्गके आगे पहुँचे। मैं नालेके ऊपर इस ख़यालसे खड़ा था कि सूअर लौटकर नाला-ही-नाला मेरी ओर आयगा। नालेकी गहराई केवल डेढ़ गज़ होगी, इसलिए, सूअरको ऊपर चढ़ना कोई कठिन न था। मैंने तो मोर्चा जमा दिया था। पचास गज़के निशानेकी दूरी लगाकर रायफ़ल साधे बैठा था और द्वितीयाके चन्द्राकार काँपवाले वाराहके आगमनकी प्रतीक्षामें था। भीतर-ही-भीतर यह भी आशंका थी कि कहीं गोली ठीक न लगी, तो चीरकर टुकड़े-टुकड़े कर देगा; पर बाज़ी लगा चुका था। इतना बड़ा सूअर ढूँढ़नेसे भी नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिलता। न मालूम निरामिष भोजी उस सूअरने कहाँके कंद-मूल खाये थे। वह शायद इक्कड़ था। हाथी जैसे मस्त होकर इक्कड़ हो जाता है, और जिसे पा लेता है, उसे समाप्त करके ही छोड़ता है, उसी प्रकार सूअर भी इक्कड़ होता है, और अन्य सूअर उससे घबराते हैं। बुड्ढा होकर भी वह एकान्तवासी हो जाता है। अब तो मेरी उससे ठन गई थी। थोड़ी ही देरमें क्या देखता हूँ कि एक भारी काली-सी शिला खेतमें होकर भागी जा रही है। वह सूअर था। नाले-नाले न आकर वह अपने उसी रास्तेसे लौट पड़ा, जिससे आया था। आगे आदमियोंका खटका समझ वह लौटा था। उसे खेतमें जाते देख, टोप एक ओरको फेंक, मैं खड़ा हो गया। सूअर एकदम ऐसे रुका, मानो मोटरमें कोई एकदम ब्रेक लगा दे। मेरी ओर कान किये हुए वह खड़ा हो गया। आँखें स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती थीं; पर वे द्वितीयाके चाँद-रूपी उसके अस्त्र स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। उसकी आकृतिसे प्रतीत होता था, मानो कह रहा हो—"ऐ मूर्ख अपना रास्ता देख। छेड़खानी करेगा, तो करेका फल पायगा।" पर मैं तो अपनी रैमिंगटन रायफ़लके बूतेपर उससे उलझनेको तैयार था। कहीं २२० ग्रेनकी गोली काँखमें जम जाय, तो भीत-सी गिर पड़े—यह ख़याल करते हुए और 'पीप साइट'में से सँभालकर

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

(क्योंकि अँधेरा था और अँधेरेमें 'पीप साइट' ठीक काम नहीं करती), निशाना लेकर गोली दाग़ दी। घुर्र और कीं करके सूअर भागा। बड़े आश्चर्यकी बात हुई, जो वह सीधा मेरी ख़बर लेने नहीं आया। केवल तीस-चालीस गज़की ही दूरीपर तो था। उधर नज़र जो डाली, तो सूअरकी एक अगली टाँग ही नदारद थी! गोली तनिक नीचे पड़ी। दो-तीन इंच ऊँची पड़ती, तो बाबाकी भीत बैठ जाती।

सूअर बीहड़की ओर भागा, और हम लोगोंने उसका पीछा किया। अनुमानसे एक घनी झाड़ीके पास आये, तो कराहनेका शब्द सुनाई पड़ा। शब्दसे प्रतीत होता था कि मौतके कीटाणु उसके शरीरमें प्रवेश कर चुके हैं। हमने छेड़ख़ानी करना उचित न समझा और अगले दिन वहाँ आनेका निश्चय किया। जान-बूझकर आगमें कूदना मूर्खता है; पर शिकार-उत्तेजनामें लोग मूर्ख बन ही जाते हैं। उस दिन मैंने सीमाका उल्लंघन नहीं किया। उत्साह और आश्चर्यकी तरंगोंमें मेरा मन बह रहा था। प्रसन्नता और आनन्द—विशेषकर शिकारके आनन्द—का मार्ग बाह्य होता है। वह गलित कोढ़के समान फूट-फूटकर प्रकट होता है। अपने भाग्यको सराहता हुआ कि इतना बढ़िया सूअर अनायास ही मिल गया, मैं चला जाता था। प्रातःकालके लिए लम्बे-चौड़े मंसूबे बाँधने लगा कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूअर मरा मिलेगा। अफ़सोस! कैमरा नहीं, जो उसका फ़ोटो लिया जाता; पर अन्तरिक्षमें विधाता हँस रहा था!

× × × ×

सूर्योदय होते-होते हम लोग वहाँ पहुँच गये। साथमें गाँवके दो कुत्ते भी लेते गये, ताकि आवश्यकता पड़नेपर वे सूअरको झाड़ीसे निकाल सकें या भागनेपर उसे रोक सकें; पर यह सब कुछ तो सावधानीके लिए था। आशा तो यह थी कि सूअर मरा मिलेगा। कई आदमी साथ थे और गाँवके कुत्ते भी, इसलिए, चुपचाप वहाँ न पहुँच सके। वहाँ जाकर देखा, तो झाड़ीमें निस्तब्धता थी। जिधरसे सूअर उसमें घुसा था, उधर ख़ूनकी धार थी। ख़ून ताज़ा न था। ख़याल किया कि सूअर मरा पड़ा होगा। मैंने ऊपरसे एक बड़ा ढेला फेंका, तो झाड़ीमें कोई खड़खड़ाहट न हुई; पर जैसे ही दूसरा ढेला मारा कि घुर्र करता हुआ, सूअर निकल भागा। उसके निकलते ही गाँववालोंने हो-हा मचाई। कुत्तोंको प्रोत्साहन हुआ और तीन टाँगवाले घायल सूअरको उन्होंने बातकी बातमें जा पकड़ा। एकने तो पीछेसे हमला किया, दूसरेने उसकी अगाड़ी रोकनी चाही। रायफ़ल या बन्दूक़ चलानेका अवसर लोगोंने न दिया। लाठी और बल्लम लेकर उस ओरको पिल पड़े। वे कुत्ते बड़े लागू कहे जाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्होंने अनेक सूअरोंको पछाड़ा था, पर इतने बड़े सूअरका उन्हें अनुभव न था। अनुभव ही होता तो क्या! पशुवृत्तिमें समझ और अनुभवका काम थोड़े ही होता है। आगेवाले कुत्तेने ज्यों ही सूअरकी अगाड़ीसे जाकर उसकी बग़लमें मुँह मारना चाहा कि सूअरने मुड़कर कुत्तेको मुँहमें दबा लिया और सेकेंडोंमें कच-कच-कच करके कुत्तेको मार दिया। उस कुत्तेका चीत्कार सुनकर दूसरा कुत्ता हतोत्साह हो गया और दूर जाकर भोंकने लगा। फिर आदमियोंसे भी आगे नहीं बढ़ा गया। प्रोत्साहनमें एक बिजली होती है, जो लँगड़े-लूलोंको भी कर्मण्य बना देती है। हार और पतनमें अकर्मण्यताका बास है। पीछेवाले कुत्तेने अपने साथीका पतन देखा और ह्रास और अकर्मण्यताने प्रोत्साहनकी बिजलीके 'स्विच' को बन्द कर दिया। कुत्तेके चीत्कार और उसके पतनसे ह्रास और भयके परिमाणु उसके कान और आँखोंके मार्गसे प्रवेश कर गये। शक्ति क्षीण हो गई। सोच-विचारसे वह पीछे नहीं हटा था। सोच-विचारका काम तो आदमीका है, और मानव-समाजमें भी विपत्तिमें विरले ही साथ देते हैं। विपत्ति वह भयंकर शीत है कि जिसमें सहानुभूति-रूपी उष्णता ठिठुर जाती है—मृतकके समान हो जाती है। सूअरकी विकराल काँपें और उसकी अपूर्व शक्ति देखकर हम लोग भी सहम गये। कुत्तेके प्रति उनकी पूर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संचित सहानुभूति भी ठिठुर गई। उधर सूअरके रौद्ररूपने उन्हें सहमा दिया। कुत्तेको कराहता छोड़ सूअर आगे भागा। लोग उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे। मैं कुत्तेके पास आया। उसकी आँखोंमें अब भी ज्योति थी। अन्तिम प्राण-वेदना हो रही थी। उसका भीतरवाला बलपूर्वक निकाला जा रहा था। जिस घरमें उसका वास था, उसका अन्त सूअरने अपने छुरोंसे कर दिया था। वह मर चुका था; पर उसमें जीवन प्रतीत होता था। जीवनकी गन्ध तो थी ही। फूल सूख जाता है; पर गन्ध शेष रह जाती है। रस्सी जल जाती है; पर उसका टेढ़ापन क़ायम रहता है। कुत्तेके शरीरका निवासी यात्रा कर चुका था; पर उसके पदचिह्न शेष थे। कुत्ता शरीरका स्वामी न था; पर उसका वस्त्र पड़ा रह गया। मैंने उसके मुँहमें ब्रांडी डाली; पर अग्नि होती, तो आहुतिका धुआँ निकलता। उसको छोड़ मैं भी सूअरके पीछे लगा। दौड़कर मैंने लोगोंको पकड़ा और उनसे कहा कि वे मुझसे एक फ़र्लांग पीछे चलें, ताकि मैं सूअरको मार सकूँ। भम्भड़में सूअर भी हाथ न आयगा और किसी आदमीकी जान भी चली जायगी। लोग पीछे रुक तो गये; पर अनिच्छासे। ठीक वैसे, जैसे अध्यापकके रोबके कारण लड़के तमाशा देखने जानेसे रुक जाते हों। पीछे जब हो-हल्ला कम हुआ, तो मैं भी धीमा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पड़ गया और सूअरकी खोजपर चलने लगा। खोज लगानेके लिए मैंने भीड़में से एक खोजीको भी साथ ले लिया।

शिकारका सबसे बड़ा आनन्द और शिकारकी एक मुख्य कला है खोज लगाना। खोज लगाना साधारण बात नहीं है। बड़े अनुभवका काम है। जहाँ एक-से ही ताज़ा खोज हों और ख़ून भी न हो, वहाँपर खोजका लगाना बड़ा कठिन है। सूअर, पता नहीं, किस ओर गया था; पर हम लोग झुके हुए, उसकी खोज ढूँढ़ते हुए, और उन्हींपर, चले जाते थे। पथरीली और चटकीली धरतीपर खोज लेनेमें बड़ी कठिनाई पड़ती थी। जब खोज न मिलती, तो पन्द्रह-बीस गज़की परिधिमें घूमकर उसके खुरोंके चिह्न देखते। फिर खोज मिल जानेपर ऐसी प्रसन्नता होती, मानो निधि मिल गई हो। कभी-कभी नालेमें, जहाँ चौरस्ता होता, बड़ी कठिनाई पड़ती; पर लगा खोजी बुरा होता है। हम लोग कभी-कभी ग़लत खोजपर चले जाते; पर दस-बीस गज़ जाकर लौट पड़ते और फिर असली खोज ढूँढ़ निकालते। ठीक डेढ़ घंटे बाद हम लोग बीहड़के एक सुनसान स्थानमें आये। खोजके चिह्न एक पीलूकी घनी झाड़ीकी ओर गये थे। "हो न हो, सूअरने यहीं विश्राम लिया है"—यह कहकर मैंने अपने साथी खोजीको आगे बढ़नेसे रोका। वह झाड़ी एक घने नालेकी बग़लमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी। यह निश्चय करनेके लिए कि सूअर वहीं है, हमने उस नालेके आसपास उसकी खोज ली। यदि वह उस घनी झाड़ीमें न होगा, तो झाड़ीके आसपास उसका खोज ज़रूर मिलना चाहिए। हमारा अन्दाज़ ठीक निकला। पास कहीं खोजके और चिह्न नहीं थे। हम लोग झाड़ीके अति निकट नहीं गये। सूअर बिदका हुआ था। कहीं टूट पड़े, तो कुत्तेकी मौत मरनेकी आशंका थी—यह सोचकर मैं नालेके ऊपर चला गया और रायफ़ल सम्हाली, और अपने साथीसे पीछेवाली भीड़में से छै-सात आदमियोंको—बल्लमवालोंको—बुलानेको कहा। उनको चुपचाप आनेका आदेश दिया था।

क्रोधित सूअरने जब देखा होगा कि उसका पीछा करनेवाले नहीं हैं, तो वह नालों और डाँडोंको पार करता हुआ वहाँ आया। ख़ूनकी खोज न थी; पर उसके खुरोंकी खोजके सहारे हम लोगोंने उसे जा घेरा। आदमी भी आ गये और वे ही आये थे, जो उसके मांसके लिए लालायित हो रहे थे। उन्हें सूअर मारनेका कुछ अनुभव भी था, तिसपर मेरी रायफ़लके सहारेको वे ब्रह्मास्त्र समझते थे। आते ही एकने कहा—"का करैं सा'ब, कसूर बनि परौ। मैंऐं (वहीं) बन्दूक़ हम चलाइ लैं देते, तौ न तौ बु कुत्ता मत्तो औ न हैरानगती होती।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"अच्छा, हो गया सो हो गया, अब जैसा मैं कहूँ, वैसे ही तैयार खड़े रहो।"—मैंने कहा।

नालेके ऊपर ढाँग थी, इसलिए, उधरसे तो हिमालयकी-सी रोक थी। उधर सूअर चढ़ नहीं सकता था। उसके निकलनेका एक ही मार्ग था, और उसे हमने घेर लिया था। एक आदमीको मैंने ऊपर ढाँगपर से झाड़ीमें ढेला फेंकने और कोलाहल करके सूअरको निकालनेके लिए भेज दिया। तीन आदमी नालेकी एक बगलमें बल्लम लेकर खड़े हो गये और तीन एक ओर। सबसे आगे मैं रायफ़ल लेकर खड़ा हो गया। सूअर वहाँसे एक ही मार्गसे नालेमें होकर निकल सकता था। यदि गोली न भी लगी, तो छै बल्लमवालोंमें से एक-दोके बल्लम तो उसके अवश्य छिदेंगे, और इतनी देरमें फिर सूअर क़ाबूमें कर लिया जायगा। कन्दराके मुँहपर कोई व्यूह रच ले, तो कन्दरामें से कोई कैसे निकल सकता है? हलाहल पीकर कोई कैसे बच सकता है? पर मनुष्यकी बुद्धिसे परे भी कोई चीज़ है। कभी-कभी अनहोनी होनी हो जाती है। घनघोर बादल घिर आता है, और यह प्रतीत होता है कि पृथ्वी जलमग्न हो जायगी। घोर वृष्टिकी सब प्रतीक्षा करते हैं; पर कभी-कभी ऐसी दशामें एक बूँद भी नहीं पड़ती। सुखकी आशामें—भविष्यकी कोमल कल्पनाओंमें—कभी-कभी घोर संकट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

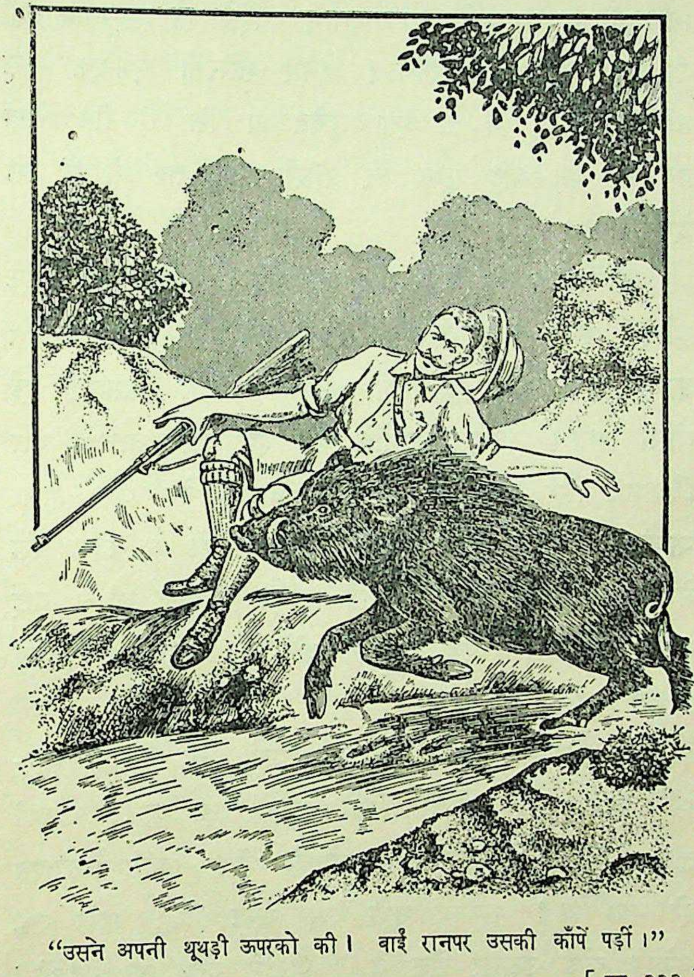

"उसने अपनी थूथड़ी ऊपरको की। बाईं रानपर उसकी काँपें पड़ीं।"

[पृष्ठ २२२]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आ पड़ता है। हम लोग भी यह निश्चय कर बैठे थे कि सूअर निकलते ही बल्लमोंमें बिंध जायगा। पहले तो वह रायफ़लकी गोलीका ही निशाना बनेगा। हमारे शरीरकी एक-एक नस उत्तेजित थी। मैं तो ऐसा सचेत था कि रोम-रोम आँख बन रहा था—यदि सूअर मेरे पीछेसे आता, तब भी मैं उसे देख लेता।

ढँगके ऊपरसे ढेले और पत्थर पड़े। झाड़ीमें कुछ आहट हुई। हमारे स्नायु और भी खिंच गये। सूअर निकला। फ़ायर हुआ और कुम्भकर्ण—सूअरकी पीठमें फिसलती हुई गोली लगी। पिछली टाँगोंके बल वह तनिक घुटनाया और चिंघाड़ा, फिर शीघ्र ही भागनेकी चेष्टामें मेरे पास होकर झपटा। दूसरी गोली चलानेका अवसर ही न दिया कि मेरे पास आकर उसने अपनी थूथड़ी ऊपरको की। बाईं रानपर उसकी काँपें पड़ीं, सो भी ओछी। पीड़ासे मेरी चीख़ निकल गई।

दो मिनटकी मूर्छाके उपरान्त देखा, तो मुझसे चार-पाँच गज़ आगे बल्लमोंसे बिंधा सूअर पड़ा था। उसकी तीक्ष्ण काँपें—पैने छुरे—मेरी ओरको थीं। ख़ूनसे मैं लतपत हो गया था। सूअरने मुझे ऐसे पलट दिया, मानो कच्चे घड़ेको कोई उठाकर फेंक दे। पीड़ासे मूर्छा आ गई थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूअर कहीं रुककर पूरा वार कर देता, तो मेरी भी गति उसी कुत्तेकी भाँति होती। नाममात्रको तनिक झपेट ही हुई थी कि मैं मृतप्राय हो गया। मुझपर उसने चोट की और मैं सूअरके पीछेकी ओर गिरा। सूअरका वार नीचेसे ऊपरको—भागतेमें पीछेकी ओरकों—था, इसलिए, मैं पीछेकी ओर गिरा। जो कहीं आगेको गिरता, तो जाने क्या होता! मुझपर चोट होते ही बल्लमोंके तीक्ष्ण फल सूअरकी देहमें प्रवेश कर गये। वह गोलीसे ही लगभग भुन चुका था। भालोंने ख़ात्मा ही कर दिया!

करवटके बल आधा लेटा हुआ मैं कराह रहा था और जाँघसे निकलनेवाले ख़ूनके परनालेको रोकनेके लिए कपड़ा बँधवा रहा था। सूअरकी काँपें हड्डी तक न पहुँची थीं, इसीलिए, ख़ून रुक जानेपर कोई डरकी बात न थी। उस पीड़ा और कष्टमें उस समय ख़याल आ रहा था कि अन्तरिक्षमें विधाता मेरी इस गतिके लिए हँस रहा है!

× × × ×

सूअरकी लाश पड़ावकी ओर लादकर लाई गई, और मैं भी खटियापर लाया गया। लोट-पोटकर मैं अच्छा हो गया; पर उन पैने छुरोंका चिह्न अब भी चन्द्राकारमें बाईं जाँघपर है और तब तक रहेगा, जब तक काया इस रूपमें है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब जब कभी मैं किसी बड़े सूअरको देखता हूँ, तो मुझे दाग़ी करनेवाले सूअरका स्मरण हो आता है, और उसकी प्रशंसामें बाराह-अवतारका यह श्लोक कह बैठता हूँ—

"वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना।
शशिनि कलंककलेव निमग्ना ॥
केशव धृतशूकररूप। जय जगदीश हरे!"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकार-सप्ताह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गृहस्थी-भार-शृंखलासे जकड़े और चिन्ता-चितापर जलते व्यक्तिको, किसी प्रकार, वर्षमें दो-चार दिन मन-बहलाव और प्रकृतिदर्शनके लिए मिल जायँ—और उन दिनों वह घर-बारको भूल सके—तो उसे भाग्यशाली समझना चाहिए। मेरी गणना ऐसे ही भाग्यशाली व्यक्तियोंमें की जा सकती है।

कई वर्षकी बात है। भाग्य-भँवरके थपेड़ोंसे व्याकुल, शरीरसे क्लान्त और सम्बन्धियों तथा मित्रोंसे त्याज्य—एक प्रकारसे उपेक्षित और भुलाया हुआ—मैं कष्टोंके रसातलकी ओर धीरे-धीरे सरक रहा था। न कहीं आना था, और न कहीं जाना। लोग मुझे एक प्रकारसे भूल-सा गये थे। कष्टपीड़ित व्यक्तिको अनेक लोग मूर्ख और निकम्मा भी समझते हैं। मेरे प्रति कईएकको ऐसी धारणा थी—ऐसा मेरा ख़याल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। मैं भी उनकी उपेक्षा करता था; पर था मैं दुखी। उन दिनों कोई ऐसा साथी भी न मिलता था, जिससे मनकी व्यथा कहकर हृदयको कुछ हलका कर सकूँ। पके आमकी भाँति भीतर-ही-भीतर घुला जाता था। कुटियाके आसपास काफ़ी रौनक़ थी। पुराने मित्र—वृंद—डालियोंके संकेतसे बुलाते भी थे। मैं उधर जाता भी था, और वहाँ एकान्तमें अन्तरमुखी दुख तरल होकर, आँखोंको निस्तब्ध कन्दराके दो झरनोंके रूपमें परिवर्तित कर देता था। फोड़ेके मवाद निकलनेसे जैसे कुछ चैन मिल जाता है, उसी भाँति तबीयतमें कुछ हलकापन तो आ जाता था; पर वहाँसे हटनेके बाद वह दिलका फोड़ा दुखकर भर आता था। भरिया फूटा फोड़ा कितना दुखदाई होता है—विशेषकर मानसिक कष्टरूपी फोड़ा—इस बातको भुक्तभोगी ही महसूस कर सकता है। हर समय मेरे लिए वही रोना था, इसलिए, मेरी दशा पिंजड़ेमें बन्द उस पक्षीकी-सी थी, जिसके लिए—

"ख़िज़ां क्या फ़सले गुल कहते हैं किसको कोई मौसम हो,
वही हम हैं, क़फ़स है और मातम बालोपरका है।"

पर युद्ध करनेकी प्रवृत्ति, अथवा भगवानकी प्रेरणासे दृष्टि सर्वदा आशा-प्रभातकी ओर रही है, इसलिए, डेढ़ वर्ष उपरान्त उस अन्धकार-कालमें एक आशा-किरण दिखाई पड़ी, और सबसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहले मैंने शिकार खेलनेका प्रोग्राम बनाया, और वह भी सात-आठ दिनके लिए।

× × × ×

गोपालसिंह और गोविन्दा चमारको साथ लेकर मैं चला। दुनाली बन्दूक़को केसमें बन्द किये और रायफ़लको हाथमें लिये हुए मैं भदान स्टेशनपर उतरा। उतरते ही मेरी नज़र एक आर्त किसानपर पड़ी, जिसे एक टिकट-चैकर एक हाथसे पकड़े हुए था और दूसरेसे तमाँचे मारता था। कारण था उस किसानका बिना टिकटके यात्रा करना। मैंने आगे बढ़कर और त्यौरियाँ बदलते हुए उस चैकरसे अंग्रेज़ीमें कहा—"यदि यह मारनेपर आ जाय, तो तुम्हारा कोफ्ता बना दे। मारते क्यों हो? चालान कर दो।" मेरे हस्तक्षेपसे, अथवा अपने-आप ही, चैकर, किसानको प्लेटफ़ार्मपर छोड़, चलती रेलमें जा बैठा, और वह किसान भी स्टेशनसे बाहर हो गया।

रायफ़ल, बन्दूक़ और मगरकी खालके सूटकेस और उनके मालिकको टोपधारी देखकर स्टेशनके कर्मचारियोंकी आँखोंमें मेरे प्रति इज्ज़तकी भावना स्पष्ट दीख पड़ती थी। दो-एकने तो गोविन्दासे कानाफूँसी करके पूछा—"जि को हाकिम ऐं?" दूसरेने कातर दृष्टिसे आगे बढ़कर सलाम किया। उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभिवादनको करबद्ध स्वीकार करके मैंने कहा—"मैं कोई हाकिम नहीं, वरन एक किसान हूँ।"

बनावटी हँसी—खीस—से साहस करके वह बोला—"सो कैसें हजूर! घोड़ा और गदहा ऊँ एक है सकत ऐं!"

ऊँटपर सामान लदवाकर हम लोग अपने ठहरनेके स्थानकी ओरको चले। स्टेशनवाले आश्चर्यमुद्रामें खड़े हमारी ओर देखते रहे। रायफ़ल और बन्दूक़से सुसज्जित और टोपधारी व्यक्ति—और वह भी शिकारकी मुहिमपर—किसान कैसे हो सकता है! वे लोग यह निश्चय नहीं कर पाये कि मेरे रायफ़लधारी अफ़सरी बाह्य रूप और भीतरी ग्रामीण रूपमें से कौनसा विश्वसनीय था। क्या कोई देहाती रेलके कर्मचारीको दुत्कार सकता है? क्या कोई किसान शिकारका शौक़ कर सकता है? और इन साधनोंके होनेपर क्या वह अपनेको किसान कहनेमें अपनी तौहीन नहीं समझेगा? ऐसे ही प्रश्नोंकी समस्या उनके सम्मुख उपस्थित हो गई थी। उन्होंने मेरे आन्तरिक रूपको नहीं समझा। समझनेका कोई कारण भी न था।

बातें करते और दो-एक गाँवोंको पार करते दो घंटेमें, सायंकालके समय, हम लोग पड़ावपर आ गये। गाँव-भरमें ख़बर फैल गई कि मैं शिकारके लिए आया हूँ। एक-एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो-दो करके बहुतसे आदमी मिलने आये, और लगभग सभीने पालागन और नमस्कार करनेके बाद कहा—"अबकैं पंडितजी भौत दिननमें आये।"

"का करैं, सौबतो (अवकाश) ई ना मिलौ। अब जि बताऔ कि मगर कौनसे घाटपै मिलिंगे?"—मैंने पूछा।

"मगरनके का टोटे ऐं। जौं ई भैंसिसे धरे रैत ऐं। अब बन्दूककी भस सूँ चाँय (चाहे) कछु है जाय"—उन्होंने कहा।

मैं जानता था कि बेचारे गाँववालोंको समय, गिनती और फ़ासलेका अन्दाज़ कम होता है। उसमें न्यूनता या अतिशयोक्तिकी मात्रा बहुत होती है। खाना खाकर अगले दिनके लिए प्रोग्राम बनाया। मेरे पास तीनसौ कारतूस बन्दूक़के थे, और नव्वे रायफ़लके। शिकार भी जल और थलका था। जलमें मगर, और थलमें—जमनाके नालोंमें—सूअर और भेड़ियाका। हिरन और फुसकैला—चिंकारा (Ravine Deer) के मारनेका कोई विचार न था, और नीलगायपर फ़ायर करनेका ख़याल ही क्या हो सकता था; पर एक कठिनाई थी। बहुत दिनोंसे रायफ़ल न चलाई थी, इसलिए, पहले कुछ फ़ायरोंके ठीक न पड़नेकी आशंका थी। बन्दूक़का अभ्यास तो बुढ़ापे तक रह सकता है; पर रायफ़लके लिए

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह ज़रूरी है कि वर्षमें दस-बीस फ़ायर तो कर ही लिए जाया करें। रायफ़ल चलाना सीखकर कोई भूल नहीं सकता; पर बिना अभ्यासके निशानेमें गड़बड़ी हो जाती है, और फिर शिकार खेलना केवल बढ़िया निशानची होनेपर ही निर्भर नहीं, इसलिए, अगले दिन प्रातःकाल मैंने सूअरोंकी खोजपर नदीके किनारे जानेकी ठहराई। ख़याल था मार्गमें हाथ साफ़ कर लूँगा।

पहला दिन

प्रातःकाल चार बजे उठा। गोपालसिंह और गोविन्दाको जगाया। शौचादिसे निवृत्त होकर रायफ़लकी नालमें से पुल थ्रू (Pull through)* दो-चार बार निकाला, और कारतूस जेबमें डाले। गोपालसिंहको दूरबीन दे, गोविन्दाको अपने हथियार—राँपी और सुतारी—लेकर चलनेको कहा। गोविन्दा कोनेमें बैठा, पीठ मेरी ओर किये, चिलम चूसनेमें लगा था। गोविन्दा-जैसा अमली—तम्बाकूका पियक्कड़—मैंने आज तक नहीं देखा। उमरमें मुझसे छोटा, क़दका नाटा, स्वभावका शान्त और मन, वचन और कर्मसे ईमानदार गोविन्दामें (मैं उसे

* वह रस्सी, जो रायफ़लकी नालमें होकर निकाली जाती है, और जिसके एक सिरेपर फलालेनके टुकड़े लगा देते हैं। रस्सीको आरपार निकालनेसे फलालेनके टुकड़े नालकी गन्दगीको साफ़ कर देते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोविन्दा ही कहता हूँ) यदि कोई दोष है, तो उसकी तम्बाकूकी लत। पन्द्रह-पन्द्रह मिनटमें उसे चिलम चाहिए। यात्रामें बैठनेका अवकाश न हो और उसका एक हाथ घिरा हो, तो झटपट तम्बाकू भरकर चल पड़ेगा, और एक हाथसे ही चिलम पीता चलेगा। खाल निकालने बैठेगा, तो चिलम भरके रख लेगा, और बीच-बीचमें दो-चार घूँट मारता जायगा। चलनेकी बात सुन वह एकदम खड़ा हो गया; पर चिलम उसके हाथमें ही थी। अभी ऊषाकाल ही था। सूअर डाँडोंपर होकर, रातमें पेट भरकर, दिनमें सोनेके लिए, अपनी गूँड़ोंको लौट रहे होंगे—इस ख़यालसे हम लोग चल दिये।

पड़ावसे दो मील पश्चिमकी ओर पहुँचनेपर पूर्वके क्षितिजसे शिवके तीसरे नेत्रके समान, दिनकर प्रकट हुआ। किरणोंने सबका आलिंगन किया। तमके प्रदान किये हुए मोती—ओसकण—तेज द्वारा लुटने लगे। नालों और डाँडोंपर सोनेकी कान्ति फैलने लगी। हम लोगोंकी आँखें चारों ओरको लगी थीं। पूँछ हिलाती फुसकैलियाँ भागकर खड़ी हो जाती थीं, और फिर भाग जाती थीं। बग़लमें कुछ ख़च्चर-से दिखाई पड़े। हमें देखते ही वे पदर-पदर करके नालोंमें घुस गये। वे मादा नीलगाय थीं। तीतर और ख़रगोशोंका तो ठिकाना ही न था। थोड़ी दूर कुछ और आगे बढ़े होंगे कि उत्तरकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओरको सात-आठ कुछ काली-काली झाड़ियाँ चलती-सी मालूम हुई। वह सूअरोंकी टोली थी! रायफ़लमें छै कारतूस पड़े थे। सूअर दुलकी चालसे बीहड़की ओर जा रहे थे। शायद नील गायोंकी पदर-पदरने अपने स्थानपर आनेवाले सूअरोंको चौंका दिया होगा, या उन्होंने हमें देख लिया होगा। प्रातःकालके समय तो सूअर बस्तीकी ओरसें बीहड़ और अपनी छिपनेकी जगहकी ओर जाते हैं। फिर वह टोली उल्टी खेतोंकी ओर क्यों जा रही थी? शायद चक्कर काटकर अपने स्थानको जा रही थी। आना तो था उसे बीहड़की ओर; पर मैं उसके उधर आने तककी प्रतीक्षा थोड़े ही करनेवाला था। बस मैं फ़ौरन बैठ ही तो गया। सूअर लगभग चार सौ गज़की दूरीपर थे। बीचमें अनेक नाले थे, इसलिए, उनके आक्रमणकी कोई चिन्ता न थी। टोलीका नायक कुछ बड़ा था। शेष सब मझले आकारके थे। घोड़ा खिंचा। नायकसे कुछ आगे गोली पड़ी। मेरी प्यारी रैमिंगटन तड़पी— अररर···और प्रतिध्वनिने चैलेंज स्वीकार किया अररधम। गोली ज़मीनसे लगकर खि खि खि करती हुई विलीयमान हो गई। टोलीका नायक चकराया कि यह बला सुबह-ही-सुबह कहाँसे आ गई। वह रुका—उसने घुर भी की होगी—और हमारी ओर देखकर दाईं ओरको मुड़ना चाहता था कि उधर भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक गोली पड़ी। दाएँ, बाएँ, आगे और पीछे दनादन मैंने फ़ायर किये। चाँदमारीका-सा शीघ्र फ़ायर (Rapid fire) का दृश्य था। जंगलमें कम्पसा होने लगा। मेरे शिकारके इलाक़ेमें युद्ध-घोषणा हो गई। पहले दिनकी पहली खाईकी लड़ाई (Trench fighting) में दो सूअर खेत रहे। धड़ाधड़ फ़ायरिंगकी आवाज़ सुनकर पासके गाँवके आदमी भागते हुए आये। मैंने टोपके संकेतसे सूअरोंको उठा ले जानेकी अनुमति दे दी; पर तो भी दो आदमी पास भागे आये, और कहा कि उनके यहाँ बरात आई है, इसलिए, वे सूअर उन्हें दे दिये जायँ। मैंने उन्हें अनुमति दे दी; पर ऐसा करनेके लिए मुझे सूअरोंके पास आना पड़ा, क्योंकि उनपर और लोग अधिकार जमा चुके थे।

वहाँसे चार मील आगे बढ़कर हम लोग करीलवृक्षकी घनी झाड़ीसे होकर निकले। एक झाड़ीकी ओटमें तेरह-चौदह वर्षका एक लड़का घास खोद रहा था। अचानक चुपचाप हमें अपने पास आते देखकर वह घबड़ा-सा गया, और सिमट-सुकड़कर खड़ा हो गया। उसकी मनोवृत्तिको समझकर मैंने पूछा,—"अरे, यहाँ कुछ शिकार भी है?"

लड़केने दाएँ-बाएँ सिर हिलाते हुए कहा—"नांइ तौ।"

"कुछ भी नहीं!"—मैंने आश्चर्यसे पूछा?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"एकु चर्खा (Hyena) तौ अबै हालई बालंग (ओर) कूँ चलौ गयौ ऐ।"

"तूने देखा था ?"

"अबै तो गयौई ऐ। चार किरियाँ (क्यारी) ऊँ (भी) नंई गयौ होइगौ। तुम जालंग तैं जाउगे, औरु बु ऊपर तैं आवैगौ। सो मुकामेलौ है जाइगौ।"

"अच्छी बात है"—कहकर और सबको वहीं खड़ा करके बन्दूक़में ग्राफ़ रखकर मैं बताये हुए नालेके किनारेपर पहुँचा। झुका हुआ, हाथ घोड़े (Trigger) पर रखे, एक-एक क़दम सँभालकर रखते, मैं उधरको बढ़ा। ख़याल था चर्ख़ बाहर निकलनेवाला ही होगा। नालेकी बग़लका सहारा लेकर और एक झाड़ीसे सिर सटाकर जो मैंने नालेकी मोड़की ओर देखा, तो दो कान और थूथड़ी दिखाई दी। घोड़ा (Hammer) चढ़ाकर मैं फ़ायर करनेवाला ही था कि आँखोंको कुछ भ्रम-सा हुआ, और फ़ायर नहीं किया। ध्यानसे देखा, तो वह एक ऊँट था। यदि कहीं फ़ायर हो जाता, तो 'ऊँट बलबला' भूधरशायी हो जाते। परमात्माने ही ख़ैर की, नहीं तो ऊँट मारा जाता। जो बात ध्यानमें जम जाती है, उसका चित्र सामने आ जाया करता है। दिमाग़में घुसा था चर्ख़, और ऊँटके कान और थूथनी झाड़ीके किनारे दिखाई पड़नेसे जल्दीमें मुझे चर्ख़का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भ्रम हो गया। लड़केपर मुझे उस समय बड़ा क्रोध आया, और मैंने कहा—"क्यों रे, तूने तो ऊँट ही मरवा दिया होता।" क्रोधपूर्ण दुत्कार सुनकर, लड़का घास छोड़कर बेतहाशा भागा। उसने ख़याल किया होगा कि मार पड़ेगी। गोपालसिंहको लड़केके डरपर बड़ी हँसी आई; पर मुझे उसपर तरस आ रहा था, और अपने ऊपर लज्जा। नेकनीयतीसे उसने चर्ख़का पता दिया था। उसका मंशा ऊँट मरवानेका कदापि न था। उसे शायद यह मालूम भी न था कि वहाँ ऊँट है। मुझे इस बातकी आशंका थी कि उसने मुझे राजकर्मचारी समझा होगा। कर्मचारियोंके दुर्व्यवहारके कारण, लोग उन्हें आतंकस्वरूप समझते हैं। यही गति रही तो जैसे गर्मी प्रकाशमें परिवर्तित हो जाती है, उसी भाँति समय और परिस्थिति पाकर आतंक घृणाका रूप धारणकर न मालूम कैसे ज्वालामुखीको जन्म दे।

लड़केको छोड़कर हम लोग आगे बढ़े और यमुनाका मार्ग पकड़ा। मार्गमें मालूम हुआ कि हमारे पड़ावसे एक मील पश्चिमको दस-बारह भेड़ियोंका झुंड रहता है, और उसने लोगोंको इतना तंग कर रखा है कि भेड़-बकरीका चराना कठिन हो गया है। उस ओरको कोई भेड़-बकरी लेकर निकला कि भूखे भेड़ियोंने छापा मारा। शोरोगुल मचाते-मचाते तो बकरीको

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकर वे डाकू चम्पत हो जाते थे। रातको वे अपनी मुहिमपर गाँवकी ओर जाते थे और दीवार फाँदकर या किवाड़ खुले पाकर भेड़-बकरीको उठा ही ले जाते थे। यह समाचार सुनकर तबीयत फड़क उठी, और उनपर एक दिन जिहाद करनेकी ठानी।

बारह बजेके लगभग यमुना किनारे पहुँचे। हमारे वहाँ पहुँचनेसे कुछ पूर्व खाना वहाँ आ चुका था। टोप, बूट, जुर्राव और नेकर उतारकर एक लंगोट पहना और यमुनामें घुसा और पेटपाप मनमें घुसा कि कहीं मगर न आ दबा बैठे। मैंने अनेक मगर मारे थे, और मुझे कोई मगर दबोच दे, तो कौनसा आश्चर्य। निर्दोष व्यक्तियों तकको मगर पकड़ ले जाते हैं। दुधपियोंकी मा तकको खा जाते हैं। मेरे कारनामे तो काले थे। मगरोंका वश चलता, तो मुझे कुत्ता-फाँसी दिलाते या गरम लोहेसे दाग़-दाग़कर मरवाते। पानीमें से मैं शीघ्र बाहर निकल आया। सबने मिलकर खाना खाया। खानेमें बड़ा ही स्वाद था। स्वाद विशेषतया भूखमें है, और भूख बिना शारीरिक परिश्रमके लग नहीं सकती। पेड़की पींड़के सहारे बैठ गया। परिश्रमजन्य नशा-सा चढ़ने लगा—आँखें भारी होने लगीं और झपकी लग गई।

सुस्ताकर उठे। यमुनाका किनारा पकड़ा। दूरबीनसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखकर अन्दाज़ा लगाया कि यमुनाकी मोड़पर रेतिया थी और वहाँ दह भी मालूम हुआ। कदाचित् कोई मगर उधर मिले, इसलिए, हम लोग उधर गये। रायफ़लके नौ फ़ायर कर चुका था, इसलिए, हाथ साफ़ हो गया था। आगे बढ़कर देखा; तो छिपकलीके मुँहवाला (Snub-nosed) मगर आधा पानीमें और आधा रेतीमें पड़ा था। पूर्व और पश्चिमकी ओरसे सौ-डेढ़सौ गज़की दूरीसे आनेवालेको वह देख सकता था। दूरसे फ़ायर करनेमें निशाना न लगनेकी आशंका थी। हाँ, किसी प्रकार पेटके बल रेंगकर, उत्तरकी ओरसे, और सावधानीसे, जानेसे मगरसे दस-बारह गज़की दूरीपर पहुँचा जा सकता था। पेटके बल घसिटनेमें रायफ़लमें बालू भरनेकी आशंका थी। मुझे रायफ़ल अपनी जानसे भी अधिक प्यारी है, इसीलिए, उसको फ़र्स्ट-क्लास दशामें रखता हूँ। सेठ-साहूकारोंके पास रायफ़लकी नालको गन्दा देखकर मैं कह दिया करता हूँ कि रायफ़लके करम फूट गये हैं। पढ़ी-लिखी और शिष्ट तथा रूपवती युवतीका विवाह जैसे किसी अनाड़ी, कुरूप और निकम्मे व्यक्तिसे हो जाय, ठीक वैसे ही रायफ़लका ऐसे आदमीके यहाँ जाना है, जो उसे चलाना न जानता हो। मैंने बन्दूक़में ग्राफ़ भरकर रेंगना प्रारम्भ किया। पेटके बल रेंगनेमें बड़ा परिश्रम पड़ता है। चार-पाँच गज़में ही दम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फूल जाता था। बन्दूक़को बग़लमें दबाये और उसकी मूँठ पीठपर रखे, मगर-चालसे ही, मैं मगरकी ओर जाने लगा। गोपालसिंहके हाथकी दूरबीन मेरी ओर लगी थी। घिसट-घिसटाकर रेतियाकी उँचाईपर आया। वहाँसे ज़रा आगे बढ़नेसे ही मगर मुझे देख सकता था, इसलिए, मैं रेतीकी ऊँचाईकी बग़लकी ओरको रेंगा। वहाँसे बिना दिखाई पड़े आगे जा ही नहीं सकता था, इसलिए, पहले तो मैंने दम ली। साँस ठीक हो जानेपर धीरे-धीरे अपना सिर मगरको देखनेके लिए बढ़ाया। न मालूम वह घातमें था या उसको कुछ आहट मिल गई थी; पर था वह सतर्क। उसकी और मेरी नज़र एक दूसरेपर साथ-ही-साथ पड़ी। पानीमें ज़रा सरककर, मेरी ओरको मुँह करके वह पानीमें छपक गया, मानो लकड़ीका तख़्ता नदीके किनारे लहरोंसे आ लगा हो। उसकी आँखोंमें कौतूहल, घृणा और लालच था। वे ख़ूनकी प्यासी भी दीख पड़ती थीं। मेरा सिर देखकर वे समझी होंगी कि कोई बालक या छोटा जानवर पानी पीने आ रहा है; पर उसे क्या मालूम कि उसके यमराजका प्रतिनिधि मैं वहाँ था। बन्दूक़को सँभालकर अगली टाँगों और पेटके बीचकी जगहका निशाना लिया, और कहींका निशाना बँधता ही न था। मैंने अपनी पुरानी मूर्खता—दोनों नालोंको एक साथ छोड़नेकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूर्खता—की। बन्दूक़के धक्के (Recoil) से घोड़े उँगलियोंमें लगे, और उनसे ख़ून बहने लगा; पर ग्राफ़ और गोलीके धक्केसे मगर छटपटाकर गहरे पानीकी ओर बढ़ने लगा। किनारेसे गहरी दह तकके लिए एक फ़ुट गहरा पानी था, और नदीका धरातल दिखाई पड़ता था। बन्दूक़ छोड़ मगरकी ओरको मैं भागा। तीन-चार पैर पानीके भीतर रखकर मैंने उसकी पूँछ पकड़ ली, और उसको किनारेकी ओर खींचने लगा। ग्राफ़ और गोलीके धक्केसे मगरको कुछ बेहोशी आ गई थी, इतनेमें मैंने उसकी पूँछ पकड़ ली। धक्का सहनेके बाद उसे कुछ चेतना हुई, और लगा मुझे वह पानीमें खींचने; पर पानीके बाहर, या थोड़े पानीमें, ज़मीनपर पैर टेककर आदमी अपनेसे कई गुना बोझा खींच सकता है। सूखेमें वही बोझा तिलमात्र भी नहीं हिलता। होना तो चाहिए आदमी मगरके मुँहमें; पर था मगर आदमीके हाथमें! दाएँ और बाएँ वह मुँह खोल-खोलकर मुझपर वार करता था। पट्ट-पट्ट जबड़े बजते थे; पर मैं उसे खींचनेमें ही लगा रहा। ढीला करने या डरकर ढील देनेसे वह मेरी टाँगको पकड़कर तोड़ सकता था। गोविन्दा और गोपालसिंह एकदममें ही आ गये, और रस्सीसे मगरकी पिछली टाँगें बाँध दी गईं, और फिर उसकी खिंचाई हुई। अब तक मैं अकेला था। दो तो चूनके भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुरे होते हैं, तिसपर हम तीन थे। किनारेपर खींचकर उसको डाला, तब भी मगरकी जद्दोजहद जारी थी। अपनी क़िलेबन्दीसे दूर होनेसे वह बिलबिलाता था। पानीसे दस-बीस गज़ दूर ले जानेके लिए जब हम लोग उसे खींचने लगे, तो मगर ऊँटकी भाँति डकराया। घिसटता जाता था, और मुँह खोलकर वार करनेकी चेष्टा करता था। दोनों जबड़े ऐसे बोलते थे, मानो कोई वेगसे किवाड़ बन्द करता हो। "भैया, भइया"—स्पष्ट शब्द निकलता था। भैया, भइया शब्दसे हँसी आ रही थी, और कौतूहल भी काफ़ी था। दूर ले जाकर एक गोलीने उसका काम तमाम कर दिया। मेरे हथियारने कार्य कर दिया। अब गोविन्दाके हथियारोंकी बारी थी।

मगर मादा थी, और उसकी लम्बाई पाँच फ़ीट दस इंच थी। पेटमें से काँसेका एक खडुआ और तीन छड़े निकले। बाँह और टाँगकी कुछ हड्डियाँ भी थीं। किसीकी लड़की या तो डूब गई होगी, क्योंकि हिन्दू अपने मुर्देपर कोई गहना नहीं रखते, या फिर मगरने लड़कीको जीवित पकड़ा होगा। न मालूम किस माता-पिताको उसने रुलाया होगा। लड़कीके अभिभावक होते, तो शायद उन्हें कुछ सान्त्वना मिलती।

खाल निकालनेमें काफ़ी देर हो गई थी, इसलिए, हम लोग सीधे पड़ावको चले, और ऊबड़-खावड़ मार्गको पार करके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्यास्त तक पहुँच गये। शरीरकी गुरिया-गुरिया थक गई थी। पचीस-तीस मीलसे कमका चक्कर न काटा होगा। पानी गरम कराया, और उसमें सोडा मिलाकर रायफ़लकी नालको धोया और 'पुलथ्रू' से साफ़ करके 'रायफ़ल-तेल' लगा दिया। खाना खाकर चारपाईकी शरण ली और लोटते ही बेहोशी-सी आ गई।

दूसरा दिन

प्रातःकाल उठकर, जंगलका मज़ा लूटनेके लिए, यमुनाकी ओरको बढ़े। विचार यह था कि यमुनाके किनारे पन्द्रह मील तक घूमा जाय, और दो-एक मगर मारे जायँ। पड़ावसे छै मील पश्चिमकी ओर जाकर और फिर लौटकर नदीके किनारे-किनारे पड़ावसे छै मील पूर्वको जाया जाय। पड़ावसे पश्चिमकी ओर जानेमें कोई मगर न मिला। इतने तड़के वसन्तऋतुमें मगर निकलते ही नहीं, पर मुझे तो शिकारके अतिरिक्त सैर और प्रकृति-दर्शनका शौक़ था। हमारे पूर्वज वन-जीवन-सेवनको जीवन और शिक्षाका मुख्य अंग समझते थे। राजा दिलीपको गोरक्षामें पुत्रकी लालसा तो थी ही, पर साथ ही, लाभमें, उन्होंने जीवनके मूलमन्त्रको—सादे जीवनके रहस्यको—सीखा, और उस मन्त्रको जब उनके वंशजोंने भुलाया, तभी उनका पतन हुआ। कृष्णका गाय चराना और ईसा तथा मुहम्मदका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भेड़-बकरी चराना गहरे मानी रखता है। मुझ-जैसे क्षुद्र व्यक्तिके लिए भी वन-जीवन बड़ा लाभप्रद है। मैंने मनुष्योंके सामाजिक जीवनकी जड़ें पशु-पक्षी-जीवनमें पाई हैं। वास्तविक जंगली व्यक्तिका मैं तो क़ायल हूँ। मैं इस बातको मानता हूँ कि केवल षड्दर्शनसे मोहनके दर्शन नहीं होते। मैं तो वर्ड्सवर्थकी इस बातका क़ायल हूँ कि—

"One impulse from vernal wood,
May teach you more of man,
Of moral evil and of good
Than all the sages can."

पर चाहिए आँखवाला। मैं भी कोई आँखवाला नहीं; पर वह अन्धा हूँ, जिसको झाँई मारती है। पता नहीं, आगे और खुलती हैं, या बन्द होती हैं।

हाँ, तो प्रकृति-दर्शन करते हम लौटे। एक घाटपर से पूर्वकी ओर दूरबीन लगाई, तो एक बड़ा मगर दिखाई पड़ा। गोविन्दा और गोपालसिंहको वहीं बैठाकर मैं बिना आहट किये नदीके किनारे चलने लगा। मगर नदीके उस पार पड़ा धूप ले रहा था। दूरबीनसे देखा, तो लम्बी थूथनी (Long-nosed) वाला था। काफ़ी बड़ा दिखाई पड़ता था। उसके पास चार-पाँच मगर और भी धूप ले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहे थे। लम्बी थूथनीवाला मगर आदमख़ोर नहीं होता, और न वह कुत्ता, गाय या बैलको ही खाता है। उसकी खाल आदमख़ोर मगरकी अपेक्षा बहुत बढ़िया होती है। आगे जाकर बैठ गया। वहाँसे मगर नदीकी दूसरी ओर डेढ़ सौ गज़की दूरीपर होगा। दूरीको अधिक कम करनेसे मगर शायद बिदककर नदीमें चला जाता। मैंने पहले उसे दूरबीनसे देखा। काफ़ी बड़ा था, और उसकी आँखें खुली हुई थीं। वह मेरी ओरको देख रहा था कि कोई आतंककी बात तो नहीं है। रायफ़लमें २२० ग्रेनकी भूननेवाली (Mushroom) कारतूस पड़ा था। अगले पैर और थूथनी तथा गरदनके जोड़के बीच—गरदन—में निशाना साध फ़ायर कर दिया। मगर टस-से-मस नहीं हुआ, मानो वह पहलेसे ही मरा पड़ा हो। टोपसे सिगनल देकर मैंने गोविन्दा और गोपालसिंहको पार जानेको कहा। शान और कुछ अकड़से— ऐसे बढ़िया निशाने अकड़ पैदा कर ही देते हैं—मैं भी घाटकी ओर बढ़ा। पार जाकर देखा, तो मगर काफ़ी बड़ा निकला। पेट उसका काफ़ी फूला मालूम होता था। पेटमें क्या था ? आदमख़ोर तो वह था नहीं। फिर क्या बात थी ? शायद मछलियोंका पुट अधिक लगा गया हो। पेट फाड़कर देखा, तो अधगली दो-तीन मछलियाँ निकलीं, और गर्भाशयसे अनगिनत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंडे। छोटे आलू-से तो १३१ अंडे थे, सैकड़ों ही चना-मटर-से और सैकड़ों ही और भी छोटे थे, आलूके पेड़की जड़में से जैसे आलुओंका पुराउ फूटता है, ठीक उसी प्रकार गर्भाशयसे अंडे लगे थे। गोविन्दा अभी खाल निकाल भी नहीं पाया था कि टीलोंकी ओरसे झप्प-झप्प करते हुए गिद्ध आने लगे। चीलोंने अंडोंपर झपट्टा मारना प्रारम्भ कर दिया। अंडोंको पंजोंमें लेकर ज्यों ही वे उड़ती थीं कि वे फूट जाते थे, और डर था कि कहीं कपड़ों और देहपर न गिर जायँ, इसलिए, मुझे गोविन्दाकी रक्षा करनी पड़ी। तेल निकालनेके लिए गोविन्दाने काफ़ी चर्बी ले ली। मगरकी लम्बाई ग्यारह फ़ीट चार इंच थी।

वहाँसे आगे चलकर एक मीलपर एक मगर और मारा। वह बंडा था। उसकी आधी पूँछ न मालूम कैसे ग़ायब हो गई थी। सम्भव है, जब छोटा होगा, तब गोलीसे कतर गई होगी, या आपसकी लड़ाईमें गँवा बैठा होगा। बंडा होनेपर भी वह आठ फ़ीट लम्बा था। खाल निकालकर गोविन्दा उठना ही चाहता था कि हमसे सौ गज़की दूरीपर एक दूसरा मगर बाहर निकला। हम लोग चुपचाप तो बैठे ही थे। मगरने समझा होगा कि कोई भयकी बात नहीं। दूरबीनसे मेरा निशाना ठीक किया जा रहा था; पर वह ठीक निशानेपर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न था। अगले पैरोंसे लगाकर गरदन तक वह अदृश्य था, इसलिए, पेटपर ही मैंने निशाना लिया; पर गोलीका मार्ग बग़लमें लगकर दिलकी ओर था। फ़ायर हुआ, और मगरने मुँह फाड़ा। इतनेमें दो गोलियोंसे और उसका स्वागत हुआ, मुँह-कपाट बन्द हो गये, और खाल खींची गई।

समय तंग हो रहा था। भोजन भी भर-पेट न मिला था—शिकार तो भर-पेट मिल रहा था—इसलिए दो मील और आगे चलकर पड़ावकी ओर लौटनेकी ठहरी। खाल काढ़नेसे गोविन्दा घबड़ा रहा था। उसके हथियार मौथरे हो चले थे। मगरमें इतनी चर्बी होती है कि खाल काढ़नेका पैनेसे पैना चाक़ू या राँपी शीघ्र ही मौथरे हो जाते हैं। दो मीलकी यात्रामें एक मगर और हाथ लगा। लौटकर पड़ावपर आये। तीस मीलसे कम न घूमे होंगे। गोविन्दाका बुरा हाल था। एक तो मेरे साथ मेरी चालसे चलना, और तिसपर खालोंका बोझा! पड़ावपर आकर उसे खालोंमें से मुरदार छुड़ाकर नमक लगाना था। यदि खालपर मुरदार रह गई, और यदि उसमें ख़ूब नमक न मला तथा छायामें रखकर नहीं सुखाया, तो वह किसी कामकी नहीं रहती। अच्छा तो यह होता है कि गीली खालोंको, नमक लगाकर, कारख़ानेमें रँगाईके लिए भेज दिया जाय; पर ऐसा सम्भव न हो, तो खालके भीतर ख़ूब

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमक लगाकर और छायामें सुखाकर बादमें कारख़ानेमें भेज देना चाहिए। मैंने रायफ़ल और बन्दूक़ जल्दी साफ़ कर लीं; पर गोविन्दाको तो खाल सँभालनेमें दो घंटे लग गये।

तीसरा दिन

पिछले दो दिनोंमें आवश्यकतासे अधिक घूमता रहा, और गोविन्दाकी तो दुर्गति हो गई थी, इसलिए, तीसरे दिन धीरे-धीरे चलनेकी ठहराई, और यह भी निश्चय किया कि जहाँ दो-एक चीज़ें मिलीं, फिर लौट आवेंगे, या भेड़ियोंके मारनेकी कुछ तजवीज़ करेंगे, इसलिए, पड़ावसे चलते समय सूर्य निकल आया था। बीहड़में होते हुए यमुनाकी ओरको बढ़े। जंगल और खेतोंसे जो सबक़ मिलता है, वह है व्यक्तित्वके विकास और स्वतन्त्रताका। जंगलमें पेड़ोंको ही देखा जाय, तो प्रत्येकका व्यक्तित्व है। बड़े-बड़े पेड़ हैं; पर छोटे पेड़ भी आनन्द करते हैं। बड़े पेड़ अपने व्यक्तित्वकी छाप दूसरे पेड़ोंपर नहीं लगाते। हाँ, बड़े पेड़की छायामें छोटे और नवीन पौदोंका विकास नहीं होता। बड़े पेड़के नीचे छोटे पौदेको वह प्रकाश ही नहीं मिलता, जिसमें वह अपना विकास कर सके। बड़े आदमियोंकी छायामें रहनेसे अनेक व्यक्तियोंको—और विशेषकर उनकी सन्तानोंको—अपने पैरों खड़े रहनेकी शक्ति नहीं रहती। छोटी उमरमें—बिना परिश्रमके—उनको वे विचार और बातें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मालूम हो जाती हैं, जिनके लिए परिश्रम करना चाहिए था। सोचेंगे, तो अपने पिताके मार्गपर। तर्कमें वे ही दलीलें होंगी, जो उनके पिताकी। कुछ दिनों तक प्रारम्भमें वे बड़े योग्य प्रतीत होते हैं; पर पिताकी छाया उठनेपर वे सूख-से जाते हैं, और संसारकी साधारण लीकमें उनका जीवन-शकट खिचड़ने लगता है।

दूसरी बात है भिन्न-भिन्न जानवरोंकी स्वतन्त्रताकी। हिरन और भेड़िया, सूअर और बाघ, गीदड़ और ख़रगोश सब रहते हैं। एक दूसरेको खा भी जाते हैं; पर कोई किसीकी स्वतन्त्रताका अपहरण करके अपनी ग़ुलामी नहीं कराता, और स्वजातीय तो बड़े आनन्दसे रहते हैं। यों लड़ भी पड़ते हैं; पर मनुष्यकी करतूतें कितनी कलुषित हैं। धर्म, न्याय और सद्भावनाओंकी शपथ खा-खाकर एक देशवासी दूसरे देशवासियोंकी सम्पत्तिका अपहरण करते हैं। रूसका भालू हिमालयके भालूकी जीतका कभी विचार न करेगा। इंग्लैंडका कौआ भारतीय कौएपर ग़ालिब आनेका कभी ख़याल तक नहीं कर सकता। क्या इसलिए कि वे ख़याल कर ही नहीं सकते? तो फिर ख़याल—विचारशक्ति—को मनुष्यमात्रको बन्धुत्वके सूत्रमें बाँधनेके लिए क्यों न लगाया जाय। बीहड़ पार करते, तीतरकी बोली सुनते और टेंटीके वृक्षकी शाखाको मार्गसे हटाते

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुए ये विचार मेरे मनमें आ रहे थे। इन्हीं बातोंपर सोचता और आँख-भरके देखता—सौन्दर्य पान करता—मैं चुपचाप चला जा रहा था।

बातें करते-करते हम लोग घाटपर पहुँचे। वहाँपर एक बहुत बड़ा मगर रहता था। वह बहुत-सी बकरियाँ, कुत्ते, एक-दो गाय, एक स्त्री और एक बच्चेको खा चुका था। नदीसे बाहर कभी-कभी निकलता था। मैं जब कभी उधर होकर निकलता, तो गृद्ध-दृष्टिसे उस ओर देखा करता; किन्तु कभी वह दिखाई न पड़ता था; पर उस दिन दूरबीनसे ज्यों ही नदीके किनारे देखा, तो बहुत बड़ा मगर दिखाई पड़ा। छिपकलीके मुँहवाला—मनुष्यभक्षी—था, और बहुत बड़ा था; पर हाथ कैसे आवे? अन्धाधुन्ध उसपर फ़ायर करना मूर्खता थी। किसी प्रकार तीस-चालीस गज़की दूरीसे निशाना लिया जाय, तो उसके मारे जानेकी सम्भावना थी। बैठा भी वह पानीके किनारे दहकी करारपर था। तनिक हिलनेसे अथाह पानीमें जा सकता था। निशान ऐसा पड़ना चाहिए था कि वह टस-से-मस न हो। ऐसा निशाना लेनेके लिए नदीके पार जाना था। इस ओरसे उसकी गरदन स्पष्ट दिखाई न पड़ती थी। दाएँ और बाएँ जानेसे कदाचित् वह देख ले, इसलिए, नदी पार जाकर बबूलके एक पेड़की ओटसे निशाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेनेका निश्चय करके, पासके एक घाटसे हम लोगोंने नदी पार की। गोविन्दा और गोपालसिंहको पीछे छोड़ लुक-छिपकर मगरकी ओर मैं धीरे-धीरे, बिना आहटके, बढ़ने लगा। ऊँची करार और फिर नीचे नालेको पार करके, बबूलके पास, एक टीलेपंर पहुँचना था! आध घंटेके परिश्रमके उपरान्त पहुँचा, और दम लेने बैठा। साँस ठीक होते ही मगरकी ओर सिर बढ़ाकर देखा, तो वहाँ कोई भी न था। फिसलन ज़रूर थी। किसी प्रकार उसने मुझे उस स्थानपर आनेमें देख लिया होगा। सब परिश्रम बेकार रहा; पर मैंने वहाँ धरना देकर बैठनेकी ठानी। गोविन्दा और गोपालसिंहको दूर बैठा दिया, ताकि वे नदी पार करनेवाले यात्रियों और पशुओंको पानी पिलाने लानेवाले आदमियोंको उधर न आने दें, और उनसे कह दें कि पासवाले घाटसे होकर पार हो जायँ, नहीं तो मगर बिदक जायगा। तीन घंटेकी तपस्याके उपरान्त फल मिला। दहके बीचमें धोबीके कपड़े धोनेका पत्थर-सा उतराया। दूरबीनी आँखोंने चारों ओर देखा; पर रायफ़लधारीकी दो ख़ूनी आँखें उसे दिखाई न पड़ीं। हाँ, रायफ़ल भवानीकी नालको उसने भले ही देखा हो; पर वह उसे बबूलकी लकड़ी मालूम हुई होगी। दहके किनारे आकर वह लेट गया। काफ़ी बड़ा था। पीठका कवच तो मानो पुराना होकर अष्टधातु ही हो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया हो। उसका आकार भय उत्पन्न करता था। मैं ऊँचेपर था, और वह नीचे। गरदनपर गोली मारनेसे कुछ ओछी पड़नेका भय था, क्योंकि मैं बहुत ऊँचेपर था, इसलिए, धड़ और गरदनके जोड़पर रैमिंगटनकी गोलीकी परीक्षा थी। निशाना लेकर फ़ायर कर दिया। धायँ। गोली ठीक निशानेपर पड़ी। निशानेकी जगहसे एक फुट ऊँचा ख़ूनका फ़व्वारा फूट पड़ा। दैत्य हिला और दीवार-सी दहमें गिर गई। गोली करारी लगी थी। दस-बीस मिनटमें मरेगा तो अवश्य; पर हाथसे चीज़ निकल गई। इतने बड़े मगरकी पूँछ पकड़नेकी मूर्खता मैं कहीं कर बैठता, तो मैं तो क्या, मुझ-से दस-बीस आदमियोंको वह खींच ले जाता। नावें मँगाकर काँटे डलवाये, कहीं पता न चला; पर सायंकालको पास ही वह मिला। रस्सोंसे खींचकर बाहर निकाला गया। पेट फाड़ा गया, तो उसमें से अधगला बच्चा, काँसेके कड़े, चूड़ियाँ और छल्ले पहने एक स्त्री अधगली दशामें मिली, और दो-तीन दिनका पकड़ा हुआ एक कुत्ता भी निकला। स्त्रीका सिर ग़ायब था। मगर नर था। प्रदर्शनके लिए मगरको गाँवमें लानेकी ठहरी। पेट तो ख़ाली कर ही दिया था। ऊँटपर लादा, तो ऊँट बलबला कर रह गया। फिर उसकी पूँछ काटी गई, तब कहीं ऊँट मुश्किलसे उसे ला सका। गाँव-भरकी स्त्रियाँ और पुरुष देखने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आये। टोटका-टमनेवाले उसके नख और दाँत ले गये। ग़ाय-भैंसवाले खुपड़ियोंके लिए आये। कहते हैं कि जिस पशुके मगरकी खुपड़िया बँधी रहती है, उसे कोई संक्रामक रोग नहीं होता। मालूम नहीं, बात कहाँ ठीक है; पर एक बात तो है। मगरको कोई भी रोग नहीं होता। पानीमें रहता है, इसलिए, सर्वदा जल-चिकित्सा किया करता है क्या; पर मछलीको अनेक रोग क्यों होते हैं?

गोविन्दाको खाल निकालनेमें बड़ी कठिनाई पड़ी। उससे अकेले मगर पलटा भी नहीं जाता था। राम-राम कहकर और मगरको भला-बुरा कहते हुए उसने खाल निकाली, और चर्बीसे बहुतसा तेल निकाला।

शिकारका तीसरा दिन भी बड़ा सफल रहा। मारनेको तो मारा एक ही मगर—पर एक दर्जन साधारण मगरोंकी अपेक्षा एक कुम्भकरण मगर कहीं अच्छा था। हज़ारों मुहरोंसे एक कोहनूर कहीं क़ीमती होता है। अगले दिन भेड़ियोंसे दुआ-सलाम करने जानेकी ठहरी। भोजनकी भिन्नतामें मज़ा आता है। शिकारमें भी वही बात है। मगरका शिकार बहुत उत्तेजक नहीं होता, इसलिए, कुछ चटपटी चीज़की ज़रूरत थी। रायफ़ल साफ़कर सो गये।

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौथा दिन

प्रात:काल जल्दी उठे, और भेड़ियोंके भिटोंकी ओर प्रस्थान किया। बहुत दूर नहीं जाना था। पड़ावसे एक मीलकी दूरीपर उनकी क़िलेबन्दी थी। रातमें गाँवोंमें जाकर भेड़ और बकरियोंपर वे छापा मारते थे, और सूर्योदयसे पूर्व टोलीके कमाऊ पूत भिटोंकी ओर आ जाते थे। डाँडोंपर बैठकर, सायंकालको, अन्धकार होते ही, वे सब ऊपरको मुँह करके 'हू हू' करके आह्लादित होते थे, अथवा 'उस दिनकी रोटी' के—भोजनके—लिए उस प्रतिपालकसे प्रार्थना करते थे, जिसने उन्हें जन्म दिया था। सबके ख़ालिक़ और राज़िक़का उनको भी ख़याल था। आमिषभोजी और निरामिषभोजी सभीका तो वह सृजनहार है। सभीका तो उसे प्रबन्ध करना पड़ता है। बकरी और भेड़िया उसीकी ही तो सृष्टि हैं। कौन अच्छा है, कौन बुरा, कुम्हार कौन है और मिट्टी क्या है?—वही जाने, जो सबका मूल कारण है और जो करममें भी रम रहा है। भेड़ियोंके डाँडेसे तीन फ़र्लांग दूर, दूरबीन लगाकर, मैं बैठ गया। कौटुम्बिक जीवनका कितना अच्छा दृश्य था। एक खुर्रा (जिसके बाल गिर गये हों) भेड़िया धूपमें बैठा था। अपने पास छुछी खेलनेवाले युवा और छोटे भेड़ियोंको दार्शनिककी भाँति देख रहा था, मानो अपनी बीती जवानीकी रंगरेलियोंका स्मरण कर रहा हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टीलेपर कुल मिलाकर दस-बारह भेड़िए थे। उनके सुखी जीवनको नष्ट करनेवाला मैं कौन? मेरे ही कुटुम्बियों और मित्रोंपर, जब वे खेल-कूदमें व्यस्त हों, कोई फ़ायरिंग कर दे, तो मुझे कैसा लगेगा? क्रोधसे शत्रुका ख़ून पीने दौड़ पड़ूँगा, या विषादसे आँसुओंकी झड़ी लगा दूँगा। भगवानसे याचना करूँगा, या पागल होकर मर जाऊँगा, या ज़िन्दा-मुर्दा बनकर मौतकी घड़ियाँ गिनूँगा। तबीयत तो न करती थी कि उन्हें मारा जाय। हाँ, उनका फ़िल्म-चित्र लेकर औरोंको दिखानेकी तबीयत करती थी; पर साथ ही ख़याल आता था कि जब गायके हज़ारों कीड़े पड़ जाते हैं, अथवा जब आत्मीयजन राष्ट्र और धर्मके विरुद्ध विद्रोह करते हैं, तो उनका मूलोच्छेद किया जाता है। ऐसी अवस्थामें ऐसे कीटाणुओंका अन्त करना भलाई है; पर मैं उनको क्यों मारूँ? स्वार्थ और दूसरोंकी भलाईकी ख़ातिर। स्वार्थ अपना—शिकार-वासनाकी तृप्ति और भेड़ियोंसे भी भयंकर व्यक्तियों-द्वारा दिये गये कष्टका शमन। भलाई उन लोगोंकी, जिनकी ऋण-दाताओंने दुर्गति-सी कर दी थी—क्योंकि भेड़-बकरीके साधनसे ही वे ऋण-सेतु बाँधना चाहते थे—और जिनके बाल-बच्चोंके खाये जानेकी भी आशंका थी। बड़ी जद्दोजहदके उपरान्त स्वयं सन्तुष्ट न होकर भी, लोगोंके कहनेपर और अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकार-प्रवृत्तिसे प्रोत्साहित होकर मैं आगे बढ़ा। लुक-छिपकर भेड़िया-टीलेसे मैं ढाई सौ गज़की दूरीपर पहुँच गया। रायफ़लमें १५० ग्रेनकी गोलीके कारतूस रखे। १५० ग्रेनकी गोलीकी गति, रैमिंगटन रायफ़लकी नालसे निकलते समय, तीन हज़ार फ़ीट प्रति सेकेंड है। भेड़िया अथवा चलते हुए शिकार या दूरके छोटे शिकारके लिए तीव्रगामी गोली चाहिए। सम्हलके निशाना साधा। मेरी कालिका फुंकारी। दो भेड़ियोंपर बिजली-सी गिर गई। एक भेड़ियेको पार करके गोलीने दूसरेको ख़तम कर दिया; पर वह खुर्रा साफ़ गया। सायंकालको उसे मारनेकी चेष्टा की; पर 'पंचतन्त्र' के 'एकबुद्धि' की भाँति वह वहाँसे, न मालूम, कहीं चला गया, और छै-सात मास उपरान्त पल्ले पड़ा। हम लोग दिन-भर वहीं रहे। खाना भी वहीं आया। लोगोंके धन्यवाद भी आये। डाँडेसे कुछ दूर एक बकरी बाँधकर मैं एक झाड़ीमें छिप गया। बकरीकी बोली सुनकर एक भेड़िया आया। चार नम्बर कारतूससे मैंने उसे चित कर दिया।

खालोंके लिए लोगोंने बड़ी खुशामदें कीं। पूछनेसे मालूम हुआ कि भेड़ियाकी खालसे ढोलक अच्छी मढ़ी जाती है। खालें सब बाँट दीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवाँ दिन

खाना खानेमें कुसमय हो जाता था, या फिर ठंडी पूरियाँ मिलती थीं। पूरियाँ मुझे पसन्द नहीं। रोटी और फलोंके सामने मैं पूरियोंको हेच और दुखदायिनी समझता हूँ। 'दावते शीराज़'का क़ायल हूँ। फल और शाक उस 'कदुआ और हलुआ'की भूमिमें कहाँ? इसलिए खाना खाकर चलनेकी ठहरी, क्योंकि कई बार ऐसा हुआ है कि रायफ़ल लिये शिकारकी टोहमें बैठे हैं। बैठे-बैठे काफ़ी देर हो गई। पेटमें चूहे कूदने लगे। उधर शिकार आया। गोली लगी, और शिकारका पीछा करना पड़ा। दो-तीन मील भूखे पेट भागने—दौड़नेसे अपना शिकार ही हो गया। खाना खाकर नौ बजेके लगभग यमुनाके किनारे गये। नदीके किनारे पहुँचते ही नदीके उस पार एक मगर दिखाई पड़ा। बैठकर निशाना जो लिया, तो गोली कुछ ओछी पड़ी। मगरने उसी स्थानपर एक चक्कर काटा, और लगा चिल्लाने—"कौआ, कौआ।" पहले दिनका मगर चिल्लाया था—"भैया, भइया," और 'भैया'का भाई यह निकला 'कौआ'। दनादन मैंने चार-पाँच फ़ायर और किये, जिनमें से लगा केवल एक ही। मगरकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। वह सात फ़ीट तीन इंच लम्बा था। खाल काढ़नेमें काफ़ी देर हो गई। नदीके किनारे और आगे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बढ़े, तो एक दहपर चार-पाँच मगर दिखाई पड़े। गोविन्दाको तम्बाकूका ठसा लग गया, इसलिए, उसे खाँसना पड़ा। एकको छोड़कर शेष सब मगरोंने अपनी थूथनी उठाई, और धीरे-धीरे पानीमें रेंगकर ऐसे विलीयमान हो गये, मानो बर्फ़की शिलाएँ गल गई हों; पर एक मगर मैदानमें डटा रहा। मेरी समझमें न आया कि वह क्यों पानीमें न गया। उसके और साथी-संगी तो सचेत होकर जल-शरण हो चुके थे; पर वह वहीं मस्त पड़ा था। छोटा, पाँच फ़ीटके लगभग, दिखाई पड़ता था, इसलिए, मैंने उसपर फ़ायर नहीं किया, और हम आगेको बढ़ गये। दो-तीन मील आगे गये; पर एक भी मगर दिखाई न पड़ा। लौटकर आये, तो वही मगर पड़ा मिला। गोपालसिंहने कहा—"असलिकौ होइ तौ जाई ठौर पै डरौ रहिये।" मैंने कहा कि असलका तो है ही, नहीं तो चला न जाता। कुछ देर सोचनेके बाद उसपर फ़ायर करनेकी बात ठहरी। गोली पेटमें लगी। ख़ूनका परनाला बहने लगा। तड़पकर मगर पानीमें भागकर डूब गया।

प्रतीक्षामें हम बैठ गये कि क्या होता है। दस-पन्द्रह मिनट पीछे यमुनामें धारकी ओर काली-काली एक धार चलती मालूम हुई। थोड़ी देर पीछे वह धार किनारेकी ओर आई, और मगर किनारेपर, सूखेमें आ गया। उसके

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीछे दोनों ओर दो कछुए भी थे, जो—दोनों-के-दोनों—घावपर मुँह मारते थे। वह धार—मछलियोंका झुंड थी। वे मगरका जीवित ही खाना चाहती थीं। पानीमें ख़ून पाकर उन्होंने मगरको जा घेरा। कछुए भी तशरीफ़ ले आये। मुर्दोंकी दावतमें वे भी शरीक होते थे। फिर मृतप्राय जीवपर—चाहे वह कोई हो—उनकी आँखें क्यों न लगें? उनसे घबड़ाकर मगर किनारेपर आया था। मछलियोंसे तो पिंड छूट गया; पर कछुए शैतानकी भाँति पीछे लगे थे। कछुओंने घावपर मुँह मारा। मगरने मुड़कर 'कट्ट-कट्ट' करके उनपर हमला किया। आरेके-से दाँतोंसे उनपर प्रहार हुआ। वे पानीकी ओर भागे। फिर अपनी गरदन निकालकर वे उसकी ओर आने लगे। मगरकी गति देखकर मुझे टेनीसनकी (Tennyson) की यह सूक्ति स्मरण हो आई कि "Authority forgets a dying king." रायफ़लकी दूसरी गोलीने उसकी मृत्यु-वेदनाका अन्त कर दिया। वह चार फ़ीट दस इंच लम्बा था। खाल निकलवाकर पड़ावपर आये, क्योंकि अगला दिन घर जानेकी तैयारीमें लगाना था। खालोंका बाँधना और उनको स्टेशनपर पहुँचाना शिकार खेलनेसे कम कठिन न था, इसलिए, अगले दिन एकआध सूअरके शिकारके अतिरिक्त और कुछ मारनेका विचार न था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठा दिन

प्रातःकाल सात बजेके लगभग रायफ़लकी नालसे 'पुल थ्रू' निकाल रहा था, और चायके गिलाससे, बीच-बीचमें, दो-एक घूँट भी लेता जाता था कि हमारे मेज़बान पंडितजी और उनके मित्र एक ठाकुर कंधेपर लट्ठ रखे आये, और बोले—"पंडितजी, पाड़ा नईं मारौगे ?"

मैं—"यहाँ पाड़ा कहाँसे आये ? पाड़ा तो ऋषिकेश और दूनकी घाटीमें हैं। यहाँ तो नीलगाय हैं।"

वे दोनों—"पाड़ा भौत ऐं।"

मैं—"हर्गिज़ नहीं।"

वे—"तौ हम दिखाइ दैं, तौ मारौगे ?"

मैं—"हाँ, ज़रूर, एक नहीं, दो। पर आप लोग ग़लती करते हैं। यहाँ पाड़ा हैं ही नहीं।"

वे—"तौ आज संजाकूँ हमाए संग चलियौ।"

"अच्छी बात है"—कहकर मैं मन-ही-मन हँसा कि ये लोग खुद तो कुछ जानते नहीं, और दूसरेकी भी कुछ मानते नहीं।

रायफ़ल साफ़ करके मैं उठा ही था कि एक दूसरा आदमी आया। शरीरसे दुर्बल, चिथड़ा लपेटे, कातरताकी मूर्ति मेरे सामने आ खड़ी हुई। मैंने पूछा—"क्या है भाई ?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"पंडितजी, हिन्ना (हिरन) खै हैं।"—याचनाकी मूर्ति बोली।

"हिरन तो मैं मार ही नहीं रहा! यदि मारता तो तुम्हें ज़रूर दिलवा देता।"

"दूध क्यों नहीं पीते?"—मैंने, ज़रा रुककर, कहा।

"दूधई कूँ पैसा होते, तो छिरिया (बकरी) मोल लै लेते, हिन्नाकौ मांस माँगिबे नईं आवते।"

मैं बड़ा लज्जित हुआ। मुझे उपदेश करनेका कोई हक़ न था। "पहलेसे तुम कहते, तो सूअर मार देता। अब कोशिश करूँगा; पर कुछ ठीक नहीं है। मिला, न मिला"—कहकर उसे सान्त्वना दी, और वह पालागन करके चला गया।

× × × ×

सायंकालको झुटपुटेमें पड़ावसे पौन मीलकी दूरीपर ब्राह्मण देवता और ठाकुर साहबने बीहड़के एक डाँडेपर खड़ा कर दिया, और टेंटीके झुरमुटोंकी आड़में पाड़ा खड़े बताये। आँखें तिलमिलाकर देखा, तो मुझे नीलगाय मालूम हुई। गोपालसिंहको कुछ साफ़ न दिखाई दिया। मैंने कहा—"पंडितजी, नील-गायपर मैं गोली न चलाऊँगा। वैसे नीलगाय गाय नहीं हिरन ही है, पर गाय शब्दसे ही मुझे आपत्ति है।"

वे दोनों—"नाईं जितौ पाड़ा ऐं।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं—"पाड़ा यहाँ कहाँ ?"

वे दोनों—(शपथ खाकर)—"गंगाबाई पाड़ा ऐं।"

मैं एक वृद्धाको जानता हूँ, जो गोभीको, इसीलिए, नहीं खातीं, क्योंकि 'गोभी' में 'गो' आता है। फिर मैं ही नीलगायको क्यों मारूँ; पर उन गाँवके आदमियोंको मैं अपनेसे अच्छा समझता था। यह जानते हुए भी कि वहाँ पाड़ा नहीं होते, मैंने रायफ़ल दाग़ दी। झाड़ीके पास धमाका हुआ। दूसरा फ़ायर किया, तो एक दूसरा जानवर पहलेसे भी बड़ा नीचे नालेमें गिरा। दोनों ही मरकर गिरे थे।

पड़ावपर लौटा, पर चित्तमें दुविधा थी कि कोई बुरा काम बन पड़ा। ब्राह्मण देवता और ठाकुर बड़े प्रसन्न थे। पड़ावपर जाकर मालूम हुआ कि इस इलाक़ेमें नर नीलगायको 'पाड़ा' और मादाको 'पाड़ी' कहते हैं। ग्लानि और शोकके पाटोंसे दबा जा रहा था। मुझसे घोर पाप बन पड़ा। अपनी आन्तरिक इच्छाके विरुद्ध मैंने दो 'पाड़ों' को मारा। उनके मारनेकी न तो इच्छा थी, और न ख़याल। मैं यह भी जानता था—और ख़ूब जानता था—कि वहाँ पाड़ा होते ही नहीं; पर एक ब्राह्मणने और एक गो-ब्राह्मणके पालक—क्षत्रिय—ने एक ब्राह्मणसे नीलगायोंका बध कराया! शोक और क्रोध—क्रोध उन दोनोंपर—से दबा मैं चारपाईपर बैठा था। रायफ़ल हाथमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी। शिकारका सब मज़ा किरकिरा हो गया। नीलगाय गाय नहीं है। इस बातका अध्ययन मैंने वर्षों पहले कर रखा था; केवल भावों (Sentiments) से प्रेरित होकर मैंने उसे वर्जित वर्गमें रख छोड़ा था। उस पापका क्या प्रायश्चित्त हो? क्या ग़लतीसे किये गये शिकारके पापका प्रायश्चित्त करना पड़ेगा? प्रायश्चित्त क्या होगा? और इन दो द्विजातीय व्यक्तियोंकी क्या गति होगी—ऐसे विचारोंमें डूबा मैं चारपाईपर पड़ा था। भोजन करनेसे इनकार कर दिया। गोपालसिंह और गोविन्दासे मैंने भोजन करनेके लिए आग्रह किया।

जब मैंने भोजन नहीं किया, तब तो पुरोहित और यजमान दुखी होकर आये, और क्षमा-याचना चाही—"आख़िर आप लोगोंने धोका देकर मुझसे उन्हें क्यों मरवाया, और सो भी अँधेरेमें?"—मैंने गम्भीरतासे पूछा।

वे—"क्या करें पंडितजी, इन पाड़ोंने खेतीका सर्वनाश कर दिया। बनियासे क़र्ज़ लेकर कपास, अंडी और ईख करते हैं, और ये सब मेंटे देते हैं। बनियासे कहा कि पाड़ी खेत उजाड़ गई, ब्याज छोड़ दो, तो वह नहीं मानता। सरकार लगान नहीं छोड़ती। हम क्या करें? अकाल-पर-अकाल और तिसपर पाड़ोंकी आफ़त! चोरी-चपाटी कभी की नहीं। यमुनामें बच्चोंको लेकर डूब मरें? अब बताओ, क्या करें? हमने तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहेलियोंसे इनके मरवानेका प्रबन्ध भी किया, पर ये उनके हाथ नहीं आईं। हमारे पास ऐसी बन्दूक़ होती, तो हम तो बीन-बीनकर इन्हें मार डालते।"

मैं—"तुमने मुझसे इनकी हत्या क्यों करवाई?"

वे—"तो पंडितजी, आपने हिरन तो मारे हैं, फिर इनमें और हिरनोंमें क्या भेद है?"

मैंने नहीं समझता था कि वे लोग ऐसा तर्क कर सकेंगे, और अपनी स्थितिका ऐसा चित्र खींच सकेंगे। कविवर 'अकबर' के काव्यका अनन्य भक्त होते हुए भी मुझे उनकी यह बात 'जहाँ रोज़ी नहीं चलती, वहाँ मज़हब नहीं चलता' विशेष पसन्द नहीं थी—सिद्धान्तरूपसे मैं उसे कभी न मानता था। मेरी जड़ें ग्रामीण जीवनमें हैं। स्वयं ग्रामीण हूँ। उनके दुःखोंको जानता हूँ। ग़रीबीके कारण क़ुर्की और साहूकारोंकी डिग्रीकी नंगी तलवारके सामने किसान अपने बैल क़साईको बेचता है। आये दिन ये बातें होती ही रहती हैं। बड़े-बड़े धनी और गोभक्त बछड़ेके चमड़े (Calf-leather) का जूता पहनते हैं, और बढ़िया जूतोंके लिए जीवित पशु ही मारे जाते हैं।

यह तो मैं जानता था कि नीलगाय—पाड़ा—गायकी जातिकी नहीं है—हिरनकी जातिकी है। गोवंशकी एक मुख्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहचान है—गलकम्बल या सासना। गाय या बैलके गलेके नीचे जो खाल लटकती रहती है, उसे सासना या गलकम्बल कहते हैं। गोवंशको छोड़कर वह किसी औरके नहीं होती। भैंस, हिरन या नीलगायके नहीं होती। दूसरे, गाय और नीलगायके अंतड़ियोंकी बनावट बिलकुल भिन्न होती है। गाय-बैल गोबर—चोथ—करते हैं। भैंस भी चोथ करती है। नीलगाय लेंडी करती है—ऊँटकी-सी छोटी और कुछ अंडाकार। यद्यपि सींगकी पहचान कोई खास पहचान नहीं है, फिर भी गाय और बैलके सींग होते हैं; पर नर नीलगायके सींग हिरनकी भाँति होते हैं, और मादा बेसींगकी होती है। बस, वह एक प्रकारका हिरन है। चिरे खुरोंकी कोई बात नहीं। चिरे खुर तो सूअर, बकरी और हिरनके भी होते हैं। प्राणिशास्त्रकी किताब उसी समय पढ़कर मैंने अपनी राय और भी स्पष्ट कर ली। बादको मालूम हुआ कि मनुने उसके लिए गवय शब्दका प्रयोग किया है; पर गाय नहीं माना। यह ठीक है, नीलगायका मुँह खच्चरका-सा, और पूँछ ऊँटकी-सी—हिरनकी बढ़ी हुई पूँछके समान होती है।

उद्गार और निर्णयमें रातके बारह बज गये; पर मैं सोया सन्तोषके साथ। सन्तोष यही कि अपनी भूल या किसानोंकी चालसे मुझसे गाय नहीं, वरन हिरन ही मारे गये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे। रही पापकी, सो मैं अपना फ़ैसला क्या करूँ? पाप क्या है? पुण्य क्या है? धर्म और अधर्म क्या है? ये बातें 'शिकार-सप्ताह' के वर्णनमें फ़ज़ूल हैं। मैंने जीवोंको मारा है, इससे मुझे इनकार नहीं। उस दिन दो और मरे तो क्या—

"क्या ग़मे दुनियाका डर मुझ रिन्दको,
और इक बोतल चढ़ा ली जायगी।"

रही पापकी बात, सो उस गुत्थीको भी कौन सुलझावे? सब युगोंके न्यायाधीश—समय—पर ही फ़ैसला छोड़ दिया है, क्योंकि—

"O Time, thou must untangle this, not I,
It is too heavy a knot for me to untie."

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारी कुछ पुस्तकें

१—'शिकार'

लेखक—श्रीराम शर्मा

प्रस्तुत पुस्तक आपके सामने है। मूल्य २॥) ढाई रुपया।

२—'झाँसीकी रानी'

लेखक—श्रीराम शर्मा

सन् १८५७ ई० के स्वातंत्र्य-युद्धके रणबाँकुरोंमें, प्रातःस्मरणीया वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाईका नाम सर्वोपरि है। महारानीका रण-कौशल, संगठन-शक्ति और देशको स्वतन्त्र करनेकी लगनका भारतीय इतिहासमें एक विशेष स्थान है। रणचण्डी-स्वरूपा महारानीकी जीवनी मुर्दोंमें भी जान फूँकनेवाली है। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते नसोंमें वीरताकी बिजली-सी दौड़ने लगती है। इस पुस्तिकामें महारानीकी जीवनीका बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन है। लेखककी लेखनशैलीने तो सोनेमें सुगन्धका काम किया है। थोड़ी प्रतियाँ बाक़ी है। मूल्य =) दो आना।

३—'प्राणोंका सौदा'

लेखक—श्रीराम शर्मा

जिन्होंने 'शिकार'की भाषा और लेखनशैलीका रसास्वादन किया है, उन्हें यह समझनेमें कोई कठिनाई नहीं हो सकती कि 'प्राणोंका सौदा' नामक पुस्तक हिन्दी-साहित्यका एक अद्भुत ग्रन्थ होगा। इस पुस्तकमें विख्यात शिकारियोंके शिकारका प्राणग्राही वर्णन है। शिकारकी विचित्र और अद्भुत घटनाओंका ऐसा शब्दचित्र है कि पढ़नेवाला तड़पकर लोटपोट हो जायगा। पुस्तकके भिन्न-भिन्न लेखोंको पढ़कर आपपर मोहनी-सी फिर जायगी। 'सत्य गल्पसे भी विचित्र होता है'—इस बातका प्रमाण आपको पुस्तकके प्रत्येक पन्नेसे मिलेगा। पुस्तक शीघ्र ही छपेगी, मूल्य २।) के लगभग होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४—'रक्तपात'

मूल-लेखक—ख़्वाजा हसननिज़ामी

अनुवादक—श्रीराम शर्मा

'रक्तपात' में सन् १८५७ ई०के लोहमर्षकारी रक्तपातका वर्णन है। बिगड़े हुए विद्रोहियोंने गोरोंको कैसे मारा और फिर गोरोंने कैसी खूँरेज़ी की; दिल्लीको कैसी प्राण-वेदना सहनी पड़ी; अन्तिम मुग़ल सम्राट् बहादुरशाहपर क्या बीती—इन सब बातोंका हृदय-विदारक वर्णन इस पुस्तकमें है। जिस बादशाहकी हृत्तंत्रीसे यह निकला था कि:—

"न दरवेशोंका ख़िरक़ा चाहिए, ना ताजे शाहाना।
मुझे तू होश दे इतना, रहूँ मैं तुझपै दीवाना॥"

उसकी और उसका साथ देनेवालोंकी दशाको कौन नहीं जानना चाहेगा? पुस्तककी पांडुलिपियाँ तैयार हैं। पुस्तक जल्दी छपेगी। मूल्य १॥) के लगभग।

५—'बनवासी'

लेखक—श्रीराम शर्मा

'बनवासी' में जंगलके जीव-जन्तुओंके रहन-सहन तथा उनके स्वभावका वर्णन बड़ी ही रोचक भाषामें होगा। पुस्तकमें कई दर्जन बढ़िया चित्र रहेंगे। पुस्तककी भाषा, लेखनशैली और प्रमाणिकताके विषयमें यही लिखना पर्याप्त है कि पुस्तकके लेखक श्रीराम शर्मा हैं। हिन्दीमें यह भी अपने ढंगकी निराली और पहली पुस्तक होगी। पुस्तक बड़ी खोजके बाद लिखी जा रही है। एकतिहाई लिखी भी जा चुकी है। मूल्य ३॥) के लगभग होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६—'कैलाश-यात्रा'

लेखक—श्रीराम शर्मा

हिन्दीमें यात्रा-सम्बन्धी बढ़िया साहित्यकी बड़ी कमी है। जो किताबें इस विषयपर हैं, वे बड़ी नीरस और शुष्क हैं। यात्राके एक पड़ावसे दूसरे पड़ावपरके मार्गकी बातों और तत्सम्बन्धी घटनाओंके अतिरिक्त उनमें कुछ भी नहीं है। 'कैलाश-यात्रा'में यात्रा और पड़ावोंका वर्णन भी होगा; पर साथ ही कैलाश और मानसरोवरके समीपवर्ती इलाक़ेके विचित्र सामाजिक जीवनपर भी काफ़ी प्रकाश रहेगा। पुस्तक सचित्र होगी। मूल्य २) के लगभग।

पता—'साहित्य-सदन', किरथरा, पो० मक्खनपुर, E.I.R. (मैनपुरी)

हिन्दी-साहित्यके कुछ उच्च ग्रन्थ

स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्माकी प्रसिद्ध पुस्तकें

१. **'बिहारीकी सतसई'**—पहला और दूसरा भाग। इसी पुस्तकपर शर्माजीको मङ्गलाप्रसाद-पारितोषिक मिला था। मूल्य क्रमशः २), २॥)

२. **'पद्म-पराग'**—शर्माजीके लेखोंका संग्रह। मूल्य २॥।)

३. **'प्रबन्ध-मंजरी'**—पंडित हृषीकेश शर्माके संस्कृत निबन्धोंका संग्रह। संस्कृतके विद्यार्थियोंके लिए अमूल्य चीज़। मूल्य १॥)

पता—काव्य-कुटीर, नायक-नगला, पो० चाँदपुर, बिजनौर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी'—श्री देवव्रत शास्त्रीका लिखा हुआ अमरशहीद विद्यार्थीजीका जीवन-चरित। मूल्य १॥)

'बलिदान'—स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा अनुवादित, सुप्रसिद्ध फ्रेंच लेखक, विक्टर ह्यूगोका उपन्यास।

पता—'प्रताप' प्रेस, कानपुर

'पत्रकार-कला'—लेखक, श्री विष्णुदत्त शुक्ल—हिन्दीमें पत्रकार-कला, और सम्पादन कलापर एकमात्र पुस्तक। मूल्य २)

पता—'शुक्ल-सदन', १२०।१, बाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता

'चिड़ियाघर'—लेखक, श्री हरिशंकर शर्मा, सम्पादक 'आर्यमित्र'। हिन्दीमें हास्यरस—गद्य-काव्य—की अनूठी पुस्तक। मूल्य १)

पता—रामप्रसाद एण्ड ब्रदर्स, बुकसेलर, आगरा

'पिस्तौलका निशाना'—लेखक, ब्रजमोहन वर्मा। रूसके संसार-प्रसिद्ध कहानी लेखकोंकी कहानियोंका संग्रह। मूल्य ३)

पता—गुरु-ग्रन्थ-गुफा, ५ सी, राजेन्द्र लाला स्ट्रीट, कलकत्ता

'प्रेम-प्रपंच'—सुप्रसिद्ध रूसी-उपन्यासकार तुर्गनेवका एक उपन्यास। मूल्य १।) सवा रुपया।

'चरित्र-चित्रण'—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी लिखित भारतके वर्तमान कालके २४ महापुरुषोंके चरित्रोंके सजीव चित्र। पुस्तक छप रही है।

'फिजी-यात्रा'—स्वर्गीय गोविन्दसहाय शर्माका लिखा हुआ फिजी द्वीपका वृत्तान्त। मूल्य ।)

पता—प्रवासी-सदन, १२०।१, बाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्या आप काव्य-प्रेमी हैं ?

केवल एक ही चीज पढ़िये

प्रेम-संगीत

लेखक—श्री भगवतीचरण वर्मा

आप सचमुच मस्त होकर आनन्द-सागरमें डूबने-
लगेंगे। इसमें कविके हृदयकी पुकार है। शब्दोंमें
है और भावोंमें मादकता है। इसे पढ़कर आप कभी
कभी रोयेंगे और कविके स्वरमें स्वर मिलाकर आप स
गाने लगेंगे। प्रेम-संगीत से आपका रोम-रोम
उठेगा। मस्तीसे दिलकी कली खिल जायगी। यह
कविता-पुस्तककी खूबी है। प्रत्येक पृष्ठ नयनाभिराम भा
चित्रोंसे सजाया गया है। मूल्य १॥)

सभी प्रकारकी उपयोगी पुस्तकें मिलनेका पता :—

विशाल-भारत बुक-डिपो,

१६५-१, हरिसन रोड, कलकत्ता।